॥ २०१ ॥

॥ रामकथा ॥

मोरारिबापू

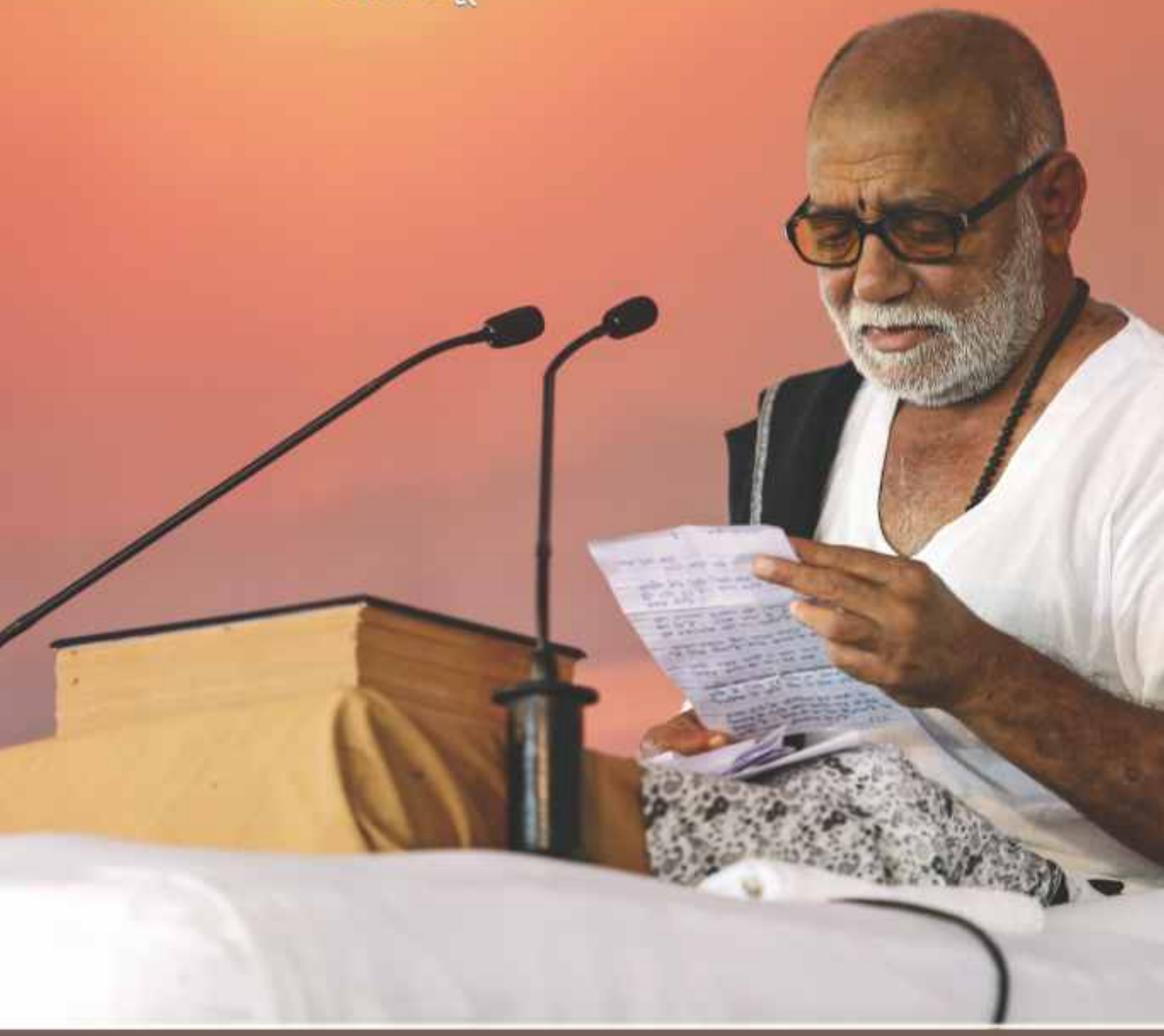

मानस-कथा

महुवा (गुजरात)

कथा जो सकल लोक हितकारी। सोइ पूछन चह सैलकुमारी।।
पूँछेहु रघुपति कथा प्रसंगा। सकल लोक जग पावनि गंगा।।

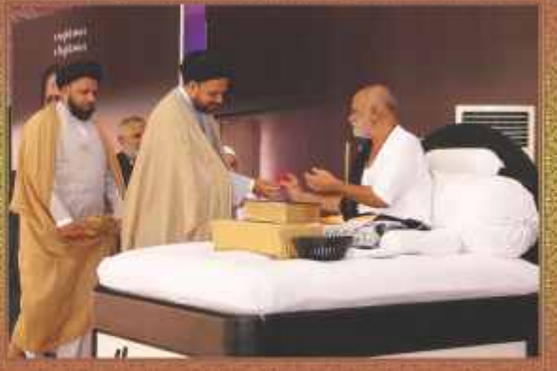

|| रामकथा ||

मानस–कथा

मोरारिबापू

महुवा (गुजरात)

दिनांक : २८–४–२०१७ से ७–५–२०१७

कथा-क्रमांक : ८११

प्रकाशन :

सप्टेम्बर, २०१९

प्रेम–पियाला

मोरारिबापू ने दिनांक २८–४–२०१७ से ७–५–२०१७ दरमियान महुवा (गुजरात) में रामकथा का गान किया था और 'मानस–कथा' विषय पर वह कथा केन्द्रित हुई थी।

'रामचरितमानस' में कितने प्रकार की कथा है? कथा की कैसी–कैसी सामग्री उसमें है? मानवी के मन की कितनी–कितनी वृत्तिओं को कथा कहां–कहां स्पर्श करती है? युगों से यह कथाएं क्यों कहलाती रही, लिखी जाती रही, गाई जाती रही, पढ़ी जाती रही, उसका स्वाध्याय–अध्ययन निरंतर चलता रहा? ऐसा क्या है इस कथा में? यह कथा हमें उस पर विचार करने को क्यों मज़बूर करती है? ऐसे कई प्रश्नों के परिप्रेक्ष्य में बापू ने 'मानस–कथा' अंतर्गत अपना दर्शन व्यक्त किया।

कथा हमारा हित भी करती है और हमें पवित्र भी करती है, ऐसा कहते हुए बापू ने कथा की उपकारकता का निर्देश किया तदुपरांत तुलसीदासजी के संदर्भ के साथ कथा की महिमा भी प्रगट की। बापू का कहना हुआ कि श्रोता और वक्ता के लिए कथा तीन काम करती है। कथा हमारा संदेह नष्ट करे, हमारा भ्रम नष्ट करे और हमारा मोह नष्ट करे। और भगवान की कथा विद्वानों को विश्राम देती है; आम लोगों का मनोरंजन करती है और कलियुग के मैल को नष्ट करती है। बापू ने रजोगुणी कथा, तमोगुणी कथा, सत्त्वगुणी कथा और गुणातीत कथा जैसे चार प्रकार की कथाओं का परिचय दिया एवं लय, विक्षेप, अप्रतिपत्ति, कषाय और स्वादानुभूति जैसे कथा के पांच बाधक तत्त्वों का भी परिचय दिया।

कथा लोगों के केमिकल्स बदलती है, ऐसा निदान करते हुए बापू ने कहा कि इक्कीसवीं सदी के अंत तक कथा के विज्ञान पर संशोधन होगा कि कथा श्रोताओं के कौन–से केमिकल्स बदलती है? क्यों श्रोताओं की आंख में आंसू आते हैं? भारत की व्यासपीठों पर संशोधन बाकी है। इस पर विचार करना पड़ेगा कि क्यों इतने लोग कथा सुनते हैं? आज पूरी दुनिया में लाईव टेलिकास्ट हो रहे हैं, फिर भी क्यों मंडप भर जाता है?

जिन्होंने आजीवन विद्याकार्य किया ऐसे महुवा की जे. पी. पारेख हाईस्कूल के आचार्य न. ना. मेहता साहब के नाम के साथ जुड़े हुए एज्युकेशनल मेमोरियल फाउन्डेशन के लाभार्थ बापू ने इस कथा का गान किया था। कथा के प्रारंभ में ही बापू ने चित्रकूटधाम, तलगाजरडा के हनुमानजी महाराज की प्रसादीरूप सवा लाख रूपये का तुलसीपत्र अर्पण कर शगुन किया था और कथा समापन तक पांच करोड रूपयों का अनुदान प्राप्त हुआ था। व्यासपीठ के माध्यम से बापू ने यूं अपने विद्यागुरु का यथोचित तर्पण किया था।

–नीतिन वडगामा

प्रकाशक

श्री चित्रकूटधाम ट्रस्ट,

तलगाजरडा (गुजरात)

www.chitrakutdhamtalgajarda.org

कोपीराईट

© श्री चित्रकूटधाम ट्रस्ट

संपादक

नीतिन वडगामा

nitin.vadgama@yahoo.com

रामकथा पुस्तक प्राप्ति सम्पर्क –सूत्र :

ramkathabook@gmail.com

+91 704 534 2969 (only sms)

ग्राफिक्स

स्वर एनिम्स

मानस–कथा – १

कथा हमारा हित भी करती है और हमको पवित्र भी करती है

कथा जो सकल लोक हितकारी। सोइ पूछन चह सैलकुमारी।।
पूँछेहु रघुपति कथा प्रसंगा। सकल लोक जग पावनि गंगा।।

बाप! बीच में कुछ वर्षों के अंतराल के बाद महुवा में नव दिवस की रामकथा का मंगल आरंभ हो रहा है तब अपनी बहुत ही प्रसन्नता व्यक्त करके कथा के आरंभ में उपस्थित आप सभी को और दुनिया के देशों में विज्ञान के सद्उपयोग के कारण इस कथा का श्रवण और दर्शन कर रहे हैं उन तमाम को व्यासपीठ से आपके मोरारिबापू का प्रणाम। जय सीयाराम। बाप! लड़के ने-परेश ने अभी बात की। उससे पहले संचालकश्री शोर्ट और सरल शब्दों में कार्यक्रम का ब्यौरा देते हुए हडिया साहब कहां-कहां से 'महाभारत' के ऋषियों-मुनियों को पकड़ लाये! वैसे तो गुनहगारों को पकड़ते थे पर अच्छे आदमियों को पकड़ लाये! उन्होंने अपना अभ्यास प्रस्तुत किया। मुझको मालूम नहीं था कि परेश बोलेगा। वो इतने वर्षों के व्यासपीठ के साथ के संबंध में ये लड़का बहुत कम बोला है। परन्तु नीलेश ने मुझे इशारा किया कि शायद बोलेगा। पर खूब संक्षिप्त में, बहुत सुन्दर, पढ़े बिना, कोई भी मुद्दा लिखे बिना भी लड़के तुमने अच्छा बोला है। इसने बात की कि इतने वर्षों पहले अपनी जन्मभूमि, दानाबापा की जन्मभूमि, 'श्रीमद्भागवत' कथा, पूज्य भाईश्री की कथा का आयोजन उन्होंने किया है। मुझे स्मरण है, मैं भी गया था। श्रवण का लाभ लिया। तबसे उनके मन में रामकथा का आयोजन करने का एक मनोरथ था। बार-बार मुझसे मिलने आता तब कहता।

मैं न भूलता होउँ तो अपने गांव डुंगर में रामकथा हो ऐसी उनकी इच्छा थी। पर मैं स्पष्ट कहता हूं बाप! आप चाहे जो विचारे, मैं चाहे जो विचार करूं पर मेरी कथा, तलगाजरडी कथा के लिए तो कथा कहां करनी, कब करनी ये कोई अन्य ही निश्चित करता है। ऐसे बड़े भारी तीव्र भरोसे की तरफ़ में जा रहा हूं। 'तीव्र' शब्द का प्रयोग कर रहा हूं। डुंगर में योग न हुआ। मैं जवाब दूं। संकोच होता है। दानाभाई भी उतना ही कम बोलते हैं। बैठते हैं। दस-पंद्रह मिनट बैठते हैं। ये किसी के बखान के

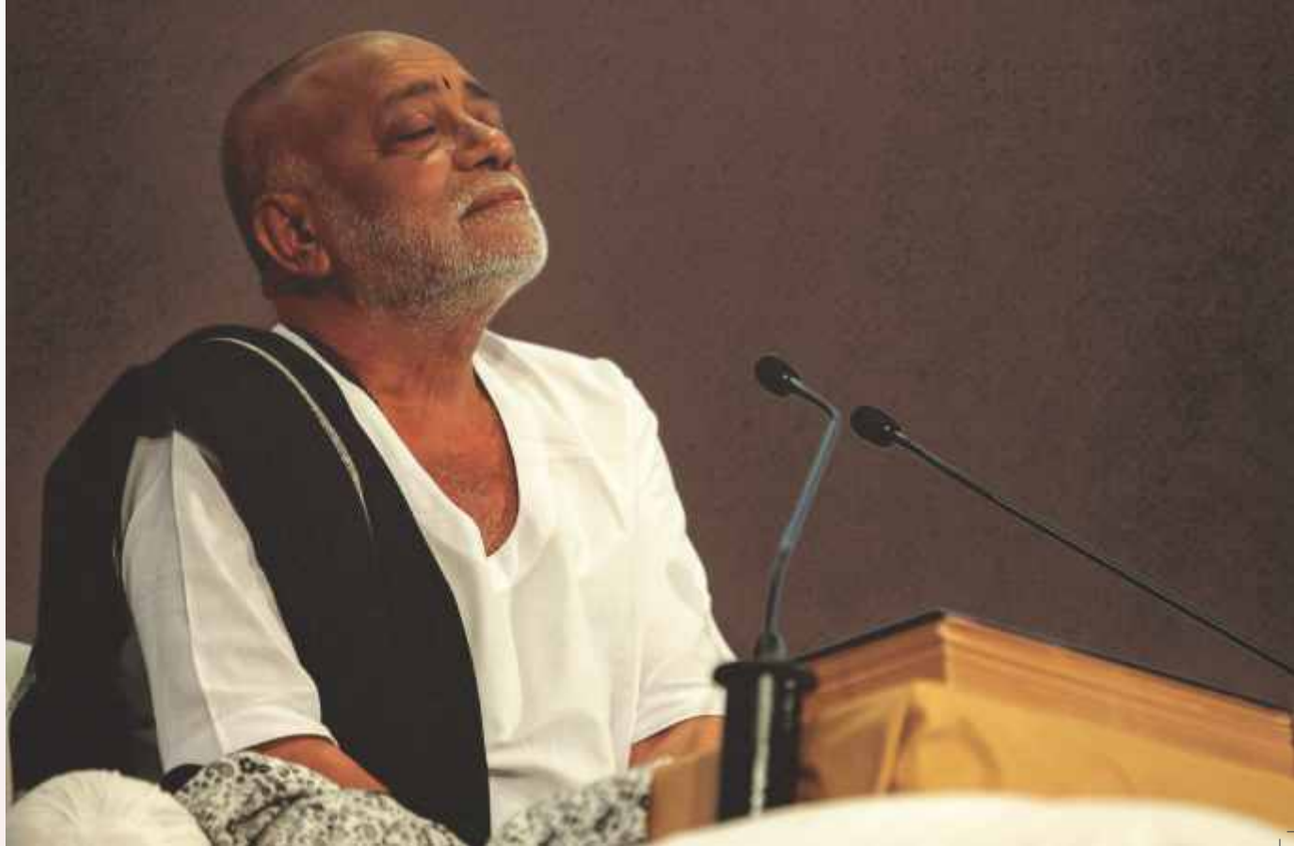

लिए नहीं बैठा, समझ लेना। यजमान परिवार है, मुझको उनके पास से कुछ लेना नहीं है। बदले में उनके घर खाने गया तब उनके लड़कों को पांच-पांच सौ देते आया! ये सब को ध्यान में रहे। भले चिमनभाई ने पैसा दिया था। पर हां, अवश्य, वो जानते हैं, बापू, हम आप को क्या दें? एक काली शाल। आज उसकी काली शाल ओढ़कर मैं आया हूं। ये काली शाल उसने दी है। आज की कथा फाफड़ावाले की काली शाल से शुरू हो रही है। मैंने फूंफकारने वालों की कथा की है। इतनी कथा की मेरी सद्यात्रा में बहुत से फूंफकारने वाले यजमान भी मिले हैं। पर मुझको फाफड़ावाला पहली बार मिला है। फूंफकारने वाले यानी काटने दौड़ते हों कि कब दोगे कथा? अभी कितनी बार आना पड़ेगा? ऐसे फूंफकारते हैं! उनके मन में अपने जन्मस्थान में होंगे, पर उनकी कर्मभूमि तो महुवा है। उन्होंने महुवा में फाफड़ा की दुकान शुरू की। फाफड़ा बहुत चला! प्रभु की कृपा और उसमें 'मातृदेवो भव' और 'पितृदेवो भव' और उनके वरिष्ठ बन्धु, बड़े भाई उनका पुण्य और उनके स्मरण में उनकी कथा का आयोजन।

दानाभाई, तुम्हारा बखान नहीं करूंगा बाप! परन्तु समस्त कथा की तमाम जो वित्तजा सेवा है; वल्लभाचार्य भगवान कहते हैं, तीन प्रकार की सेवा होती है। वित्तजा यानी धन द्वारा। दूसरी तनुजा, शरीर द्वारा सेवा और तीसरी मानसी सेवा। उन्होंने इस कथा की मांग की और मुझे अच्छा लगा यह कि उन्होंने लिखा, मेरे समग्र समाज की ओर से एक निमित्त मात्र। उनका पूरा एक समाज है, उनकी ज्ञाति जो है उस समग्र समाज की कथा है, ऐसा उन्होंने छापा। और उसमें ये कथा के निमित्त बने। डुंगर में नहीं हुई। पत्ता नहीं, मेरे दिमाग में बैठता नहीं था। पर ये उनकी कर्मभूमि। इसमें ये कैसा योग होगा साहब!

ये एन. एन. मेहता साहब, पूजनीय एन. एन. मेहता साहब सब के आचार्य; जो-जो उनके पास पढ़े हैं ऐसे 'आचार्यदेवो भव' मेहता साहब। उनसे मैं भी पढ़ा हूं। उनके आचार्यत्व में मैं चौथी बार मैट्रिक पास हुआ। तीन बार अनुत्तीर्ण हुआ, ऐसा तो मुझसे नहीं कहा जायेगा! पर चौथी बार मैं पास हुआ! काका तो आचार्य थे। पर जैसे अपनी प्राचीन विद्यापीठों में कुलगुरु होते हैं, विद्यापीठ के जो गुरु होते हैं वो कहीं सभी वर्ग लेने नहीं जाते हैं। पर कभी कोई विषय के अध्यापक बीमार पड़े हों, न हों, और जो विषय नहीं लिया गया हो तो वो विषय वो लेते हैं। मैंने पूज्य न. ना. मेहता काका के आचरण में ये देखा कि कभी जे. पी. पारेख हाईस्कूल में कोई शिक्षक गैरहाजिर होता और वो पिरीयड़ लेने न जा सके उस दिन कोई भी सब्जेक्ट हो, ये आचार्य वो सब्जेक्ट पढ़ाने आते, जिसका मैं साक्षी हूं। इसलिए उनके पास उनके आचार्यत्व में पढ़ा। उनके स्मरण में महुवा नगर के अग्रणी मिलकर मेहता साहब के नाम से एक एज्युकेशन मेमोरियल फाउन्डेशन निर्मित किया और उसमें जो कुछ भी हो उसके द्वारा तेजस्वी विद्यार्थियों को स्कोलरशीप देकर उनके उच्च अभ्यास के लिए उनको सन्मान के साथे मदद करना, ऐसा एक मंगल मनोरथ, वो तो काफी समय से चल रहा है, पर भविष्य के लिए उसे अधिक गतिशील करने के लिए मेरे पास बात आयी। मुझे कहा तब मैं ने कहा कि मैं एक कथा देता हूं। काका से मैं पढ़ा हूं। मुझ पर उनका ऋण है और इसलिए आचार्यऋण पूरा करने के लिए भी मैं महुवा में एक कथा देता हूं। और मैंने कहा कि यजमान मैं खोज दूंगा। यजमान की तो मुझे चिन्ता नहीं। प्रसन्न हुए सभी बुझुर्ग ग्राम के सभी महुवा के भाईयों-बहनों।

दानाभाई तो मेरे पास आते ही रहते हैं। मैंने कहा कि काका के स्मरण में एक कथा करनी है और मैंने हां पाड़ दी है। और आपकी कर्मभूमि है, यदि आप महुवा की कथा के यजमान हो जाओ तो बहुत अच्छा। और उन्होंने बहुत प्रसन्नता से खुश होकर कहा, बापू, महुवा में कथा मिले तो मेरे लिए डुंगर ही है। और उन्होंने कथा की सभी प्रकार की सेवा स्वीकार की। और उनके माता-पिता की स्मृति में तो है ही। उनका स्मरण तो है ही। उनके वरिष्ठ बन्धु का स्मरण है। पर हम सबके लिए एक 'आचार्यदेवो भव' उनका भी उतना ही स्मरण है। और इस कथा की मूल बात है वो ये है। और आज वो दिन आया है। मुझे खबर नहीं, किरीटभाई आये काका के लड़के अमेरिका से और भायाणी हमारा, वो सब कल मुझसे मिलने आये तब कह रहे थे कि बापू, आप को पता है, इस तृतीया से जो कथा शुरू हो रही है वो न. ना. मेहता साहब की ओलरेडी कुदरत के योग से उनकी पुण्य तिथि का दिन है। और जब कथा पूरी होगी अगले शनिवार को तब काका का जन्म दिवस है तिथि के अनुसार। इसलिए ये कोई ऐसा योग बैठा है कि उनका स्मरण हम कर रहे हैं तब उनके महत्त्व का दिन भी इसके साथ कुदरती तौर पर जुड़ गया है। और इस कथा का आज से प्रभु की कृपा से आरंभ हुआ है।

अभी कहा कि महुवा में ये अठ्ठारहवीं कथा है। परन्तु मुझे कहने दीजिए कि महुवा में पहली कथा मैंने की उसके पहले पांच कथा तो मैंने अपने गांव में ही की। जो लोग ऐसा कहते हैं कि मोरारिबापू ने हमारे यहां पहली कथा की वो भी गलत हैं और उसके बाप भी गलत हैं! मैंने पहली कथा अपने जीवन की मेरे दादा का गर्भित आदेश था और चौदह वर्ष की उम्र में पहली कथा अपने तलगाजरडा में उस

पुराने राममंदिर में की; फिर दूसरी भी की, तीसरी भी की। पांच-पांच कथा तक मैं गांव से बाहर नहीं निकला। वहीं कथा हुई और फिर कथाएं आगे चलती रही। पर महुवा में जो पहली कथा की थी और आज अठ्ठारहवीं कथा है महुवा में। और वो भी दानाभाई, उनकी धर्मपत्नी, उनका समग्र परिवार, उनका लड़का, उनका ये कितना विनम्र मनोरथ! इसके पीछे मैं नहीं मानता कि उनका कोई उद्देश्य है। ऐसे मंगल मनोरथ के साथ इस कथा का प्रारंभ हो रहा है ये मेरे लिए बहुत ही प्रसन्नता की वस्तु है। बाप! तमाम सेवा मानसी, वित्तजा, तनुजा सभी सेवाएं दानाभाई फाफड़ावाला के समग्र परिवार की सेवा है।

एक आचार्य के स्मरण में; जिसने जीवनभर शिक्षण कार्य किया; विद्या का कार्य किया। ऐसे बहुत कम आचार्य होगें समाज में, ऐसे काका के स्मरण में विद्यार्थी स्कोलरशीप प्राप्त करके आगे विद्या प्राप्त करें, जरूरतमंदों का सन्मान के साथ उनकी प्रगति को प्रोत्साहित करने के लिए उसमें जो कुछ एकत्रित होगा जो दाता कुछ देगें, दिया है बहुतों ने; और जो कुछ इकठ्ठा होगा वो सब कुछ काका के पुण्यश्लोक नाम के साथ जो एक ट्रस्ट-फाउन्डेशन है उसमें जमा रहेगा और उसके ब्याज में से तेजस्वी विद्यार्थी भाई-बहेनों को उच्च शिक्षा के लिए मदद, उनकी सेवा की जायेगी। ऐसा एक शुभ हेतु है इस कथा का। कमिटी बहुत काम करती है। सभी मिलकर कर रहे हैं। आप सभी उसमें सहयोग दे ही रहे हैं। परन्तु अपने स्वभाव के अनुसार मेरा एक क्रम है कि मैं जब भी कोई ऐसे पुण्यकार्य के लिए कथा में कोई द्रव्य इकठ्ठा होता है और फिर सत्कर्म में खर्च होता है, ऐसे मंगल प्रसंग पर चित्रकूट धाम, तलगाजरडा, हनुमानजी की प्रसादी के रूप में तुलसी पत्र के रूप में कुछ देता हूं। 'आचार्यदेवो भव' मेहता साहब के इस ट्रस्ट में एक तुलसी पत्र के रूप में चित्रकूट धाम, तलगाजरडा, हनुमानजी की प्रसादी के रूप में सवा लाख रूपये का चेक एक-दो दिन में मैं स्वयं यहां कमिटी को अर्पण करूंगा। वैसे तो श्रीगणेश हो ही रहा है। बहुत अच्छी रकम एकत्र हो रही है। मुझसे परेश पूछ रहा है, बापू, मुझे क्या करना है? मैंने कहा, बेटा, तुम तो इतना बड़ा खर्च कर ही रहे हो। ये कथा करवाना कोई सामान्य खेल नहीं है साहब! इसलिए मुझसे पूछ रहा था कि मुझको क्या करना है बापू? बेटा, तुम्हारे मन में जो कुछ इच्छा हो वो कहना। तो कहा, आप बोलो, मैं क्या कहूं? तुम्हारे मन में जो भाव होगा वो कहना। मैंने कहा, मैं ही बोल दूंगा कि कथा की सभी सेवा इनकी ही है। सब कुछ मैंने कहा वैसा। परन्तु तद्उपरान्त वो पांच लाख रूपया इस स्मृति में इस कोश में, ये दानाभाई का परिवार भी पहल कर रहा है।

यह कथा किस तरह आयी? किस तरह सब कुछ आयोजित हुआ? अंत में तो अस्तित्व की ही योजना होती है, ऐसा मेरा तीव्र भरोसा रहा है। और इस निमित्त से आज महुवा के आंगन में 'मातृदेवो भव', 'पितृदेवो भव' और 'आचार्यदेवो भव' इस तीन स्मृति में रामकथा का आरंभ कर रहे हैं तब वैसे तो इस लड़के ने शुरू किया, बहुत थकान लगती हो और आदमी बहुत अंदर से थक गया हो तो फिर बहुत बड़ा मकान बनाये और बड़ी-बड़ी गाडियां लाये न, ये सब होता है पर अंदर की थकान उतरती नहीं है। और वो थकान तभी उतरती है जब 'थाक' का उल्टा करें और 'कथा' बने तब थकान उतरेगी। ऐसा उसने सुन्दर बढ़िया सब जमा कर स्वाभाविक ढ़ंग से रखा। पर मैंने गतकल ऐसा निर्णय किया था प्रातःकाल कि मुझे इस बार महुवा में जो कथा कहनी है उसका विषय होगा 'मानस-कथा'। क्योंकि 'रामचरितमानस' में कितने प्रकार की कथाएं है साहब! कथा का क्षेत्र बहुत ही फैला है। बहुत ही विशाल है। आपको पता होगा अपने यहां छोटी-छोटी किताबें आती थी। दृष्टांत कथाएं, बोधकथाएं होती हैं वैसे ही 'रामायण' में एक कथा विरोध कथा भी है। जैसे बोधकथा है वैसे ही विरोध कथा है। मनुष्य के मन की कितनी सारी वृत्तियां हैं उन वृत्तियों को कथा कहां-कहां से स्पर्श करती है ऐसा बहुत ही बड़ा मनोविज्ञान 'रामचरितमानस' में गुरुकृपा से तलगाजरडा को दिखता है। तो कितनी कथाएं हैं इस शास्त्र में! 'रामचरितमानस' में कथा वस्तु क्या हैं? कथा की कैसी-कैसी सामग्री इसमें है? किन मूल्यों की बात रामकथा ने की है? कौन से प्राचीन तत्त्व वर्तमान में समकालीन हो सकते हैं इस तरह रखा हैं? चार-पांच दिन से हम चित्रकूट में बैठे हैं और नगीनबापा यहां है और बापा ने बहुत अच्छा कहा, 'लिविंग पास्ट', 'जीवित भूतकाल।' नहीं तो भूतकाल तो मर गया है, डेड है। पर ये शब्द ही मुझको बहुत पसंद आया 'लिविंग पास्ट', जीवंत भूतकाल। ऐसा कोई भूतकाल जो जीवित है वो अभी वर्तमान समय में मुझको और आपको कहां-कहां मदद कर सकता है, ऐसे रहस्यमय तत्त्व 'रामचरितमानस' में दिखते हैं। कितनी बार मेरे गोस्वामीजी 'रामचरितमानस' में 'कथा' शब्द का प्रयोग किये हैं। बहुत बड़ी संख्या में 'कथा' शब्द का अंक आपको 'रामायण' में मिलेगा। कथा, कथा, कथा, कथा। रामकथा ये केवल राम की कथा नहीं है साहब! ये तो नव दिवस हम साथ बैठ कर बातें करेगें तब ख्याल आयेगा।

बाप! प्रसंग देखते चलेगें; कथानकों को निहारेगें। पर जो दो पंक्तियां इस नवदिवसीय रामकथा के केन्द्र में लेकर आज से कथा का आरंभ हो रहा है वो

'बालकांड' की दो पंक्तियां हैं। शैलराज हिमालय की पुत्री के मन में विचार आया है कि सकल लोक का हित करे ऐसी कथा मुझे अपने पति महादेव से पूछनी है। और दोनों पंक्तियों में 'लोक' शब्द है, याद रखना, ये लोककथा भी है; श्लोककथा भी है। जो कथा सकल लोक का हित करे। कथा के अनेक परिणाम है साहब! प्रयोग करके हम परिणाम पा सकते हैं। मैं कहता रहता हूं कि कथा धर्मशाला नहीं है। ये केवल जय जयकार करवाने के लिए कथा का मंडप नहीं है साहब! जो दो पंक्ति आप के समक्ष गा चुका हूं और अब पुनः लूंगा उस पंक्ति में कहा है, कथा सबका हित करनेवाली है। समस्त लोक का हित करती है। हम सब अन्य का हित करते हैं यह बहुत अच्छी वस्तु है। पर अन्य का शुभ करें, अन्य का भला करें उसकी अपेक्षा उत्तमोत्तम घटना ये है कि अन्य का हित करते-करते अन्य को पवित्र भी करना। हम सब बहुत बार अन्य का हित करते हैं पर पवित्र कर सकते नहीं हैं। और पवित्र करना ये उत्तमोत्तम काम है। और कथा दोनों करती है।

कथा जो सकल लोक हितकारी।
सोइ पूछन चह सैलकुमारी।।
पूँछेहु रघुपति कथा प्रसंगा।
सकल लोक जग पावनि गंगा।

समस्त लोक का हित करनेवाली ये कथा, प्रभु की कथा, ईश्वर की ये कथा सत्य का, प्रेम का, करुणा का संवाद। जो कुछ वार्तालाप है, सब कथा है। ये सब का हित करती हैं। एक मनुष्य पापी है। भूखा हुआ है। हमारे घर आया और हमने रोटी दी। उसका पेट भरा। हमने हित किया। पर हम उसे पवित्र नहीं कर सके। वो पुनः पाप करने जा सकता हैं; चोरी करने जा सकता है। कथा दो काम करती है साहब! वो हित भी करती है और साथ ही साथ पवित्र भी करती है। हित करना उत्तम कार्य। परन्तु पवित्र करना, पूरा जीवन बदल देना साहब! मूल से धो डालना। वो पावित्र्य लाना ये कथा का दूसरा काम है।

'मानस-कथा'; तो कथा को केन्द्र में रखकर कथातत्त्व क्या है? किस लिए युगों से ये कथाएं कही जाती रही, लिखी जाती रही, गाई जाती रही, पढ़ी जाती रही, इसके स्वाध्याय-अध्ययन चलते रहे? ऐसा क्या है इस कथा में? कहानी स्वरूप में तो सब को पता ही है कि इसमें क्या है? फिर भी रोज नई क्यों लगती है? ये कथा मुझको और आप को उस पर विचार करने के लिए मजबूर करती है कि कैसा तत्त्व है ये कथा? तो इन दो पंक्तियों के आधार पर नव दिवस हम सब रामकथा गायेंगे; उसका श्रवण करेगें। ये अनुष्ठान का दिवस है बाप! तलगाजरडा की दृष्टि से ये दिवस 'वाल्मीकि रामायण' के पाठ का दिवस मैं गिनता हूं वैशाख शुक्ल एकम से वैशाख शुक्ल नवमी। ऐसे पवित्र अनुष्ठान के दिनों में अक्षय तृतीया अर्थात् कितना बड़ा पवित्र दिवस माना जाता है! अनदेखा मुहूर्त माना जाता है। ऐसे मंगलमय योग में कथा का आरंभ हो रहा है।

तो बाप! 'मानस-कथा' ये बिलकुल केन्द्र में होगी। इसकी चर्चा करते-करते हमारे जीवन के लिए कौन-कौन सी वस्तु हितकर है, कौन-कौन सी वस्तु हमको विशेष पवित्र करनेवाली है, उसकी चर्चा एक प्रयोग स्वरूप नव दिवस हम सब करने जा रहे हैं। पहले दिन की कथा की एक ऐसी परंपरा रही है जिसे मैं प्रवाही परंपरा कहता हूं कि वक्ता शिवपुराण की कथा कहता हैं तो शिवपुराण की महिमा बताना पहेले दिन; उसको बिलकुल साहित्यिक भाषा में कहूं तो पुस्तक परिचय देना, ग्रंथ परिचय देना कि ये कौन-सा ग्रंथ है? इसका परिचय श्रोताओं को करा देना कि ये ग्रंथ क्या है? जिसको माहात्म्य कहकर अपने कथाकारों ने, हमारे पूर्वसूरियों ने स्थापित किया है। इसलिए पहले दिन हंमेशा माहात्म्य ही होगा ऐसा है। 'श्रीमद्भागवतजी' की कथा लीजिए तो उसमें माहात्म्य का पूरा प्रकरण ही हमको मिलेगा। कथा तो फिर दूसरे दिन कहते हैं वैसे शुरू होती है। यद्यपि 'रामचरितमानस' जो ग्रंथ व्यासपीठ पर विराजमान है इस ग्रंथ का कोई खास माहात्म्य गोस्वामीजी ने नहीं लिखा। उन्हों ने तो सीधे कथा का आरंभ किया। 'मानस' के चारों घाट के वक्ता जब कथा का आरंभ करते हैं तब स्वयं दो-तीन पंक्ति में कोई न कोई संदर्भ में उसकी महिमा का गायन कर लेते हैं। जैसे कि याज्ञवल्क्य शुरू करते हैं तो कहते हैं कि 'रामकथा ससि किरन समाना।' शिवजी शुरू करते हैं तो कहते हैं, 'रामकथा सुंदर कर तारी।' आदि-आदि कहकर आरंभ करते हैं।

तुलसीदासजी ने रामकथा का आरंभ किया। वाल्मीकि ने कांड लिखा। उन्हों ने अपने ग्रंथ को अलग-अलग विभाग में बांटा उसका कांड नाम दिया 'बालकांड', 'अयोध्याकांड' इत्यादि। तुलसी ने 'कांड' शब्द निकाल दिया, 'सोपान' लिखा। यह मुझको पसंद है। क्योंकि 'कांड' शब्द हम विविध अर्थ में लेते हैं; फलाना भाई का तो बड़ा खराब कांड हो गया! तुलसी पूरी परंपरा को इधर से उधर करके उसे सोपान कह देते हैं। सीढ़ी देते हैं, चढ़ो; उपर जाओ; उर्ध्वगमन करो; अपने जीवन को विकसित करो। तुलसी तो केवल प्रथम सोपान समाप्त, ऐसा लिखते हैं। 'बालकांड' तो बाद में जोड़ना पड़ा है उसके साथ 'कांड' लगाने के लिए। प्रकरण का नाम बदलने का तुलसी का निर्णय मुझको क्रांतिकारी लगता है। उसके मन के विचार यहां पकड़ में आता है। तुलसी का ब्रह्मतेज जगा है।

उनकी साधुता प्रगटित हो चुकी है। इसलिए कहते हैं सोपान। एक के बाद एक कदम आगे बढ़िए। बचपन से लेकर आपकी उत्तरावस्था तक जिसे हम सब 'उत्तरकांड' कहते हैं। बचपन से लेकर उत्तरावस्था तक पूरे जीवन को बदल दे ऐसी रामकथा अपने पास है। तो विशुद्ध जीवन जीने का संदेश देती ये रामकथा। उसका आरंभ तुलसी ने किया। पहला सोपान जो वाल्मीकि के शब्दों में 'बालकांड' है, उसके आरंभ में उन्हों ने सात मंत्र लिखे, श्लोक लिखे। जगत को बताना नहीं था उन्हें कि मैं विद्वान हूं और मुझको बहुत संस्कृत आती है। उन्हें बताना होता तो पूरा 'रामायण' संस्कृत में लिखते। लिख सकते थे। परन्तु उन्हें ऐसा लगा होगा कि श्लोक जो मेरी मूल भाषा है, जो मेरी गिरा है, जो देववाणी है, उसके श्लोकों को जस का तस स्थापित करके मुझको लोकवाणी में जाना है। श्लोक का आशीर्वाद लेकर मुझे लोक तक पहुंचना है। इसीलिए तुलसी ने सात श्लोक संस्कृत में लिखे। बहुत से लोग ऐसा कहते हैं, तुलसी की संस्कृत कमजोर थी! ऐसा मैं सुनता हूं! अब उन्हें कैसे समझाना हमें? तुलसी को संस्कृत का विद्वान प्रस्थापित नहीं होना था, पर काशी में रहे हैं; नरहरि गुरु के आश्रम में रहे हैं। संस्कृत उन्हों ने वहां से प्राप्त किया है; अपनी श्लोक परंपरा को प्रणाम करना है उन्हें इसलिए सात मंत्रों को लिखा।

वर्णानामर्थसंघानां रसानां छन्दसामपि।
मङ्गलानां च कर्त्तारौ वन्दे वाणीविनायकौ।।

कोई भी आदमी अपने ग्रंथ का प्रारंभ करता है तो बहुधा, बहुधा मिन्स निन्यानबे प्रतिशत से भी अधिक कह सकते हैं, 'श्री गणेशाय नमः' से ही शुरू करता है। पर धन्य है तुलसी! पूरा क्रम तोड़ा। गणपति की वंदना मैं सोरठा में करूंगा पर श्लोक में मैं सरस्वती की वंदना करूंगा। शब्द की देवी को पहले पैर लागूंगा; गणेश बाद में। 'वन्दे वाणीविनायकौ।' दो तीन चौपाइयां हैं जिसमें नारी की निंदा है। इतना बड़ा ग्रंथ। जो हो सो, पर उसका आरंभ तो देखिए! गणपति को छोड़कर मातृवंदना की है। हे सरस्वती, पहले मैं आप के पैर लागता हूं। आप शब्द की देवी हैं। आप विचार की देवी हैं। आप सर्जक को जन्म देती हैं। मातृ से ही शुरू हुआ है पूरा शास्त्र। ये वस्तु किसी ने देखी ही नहीं! तमाम मंगल की कर्ता ऐसी हे वाणी-सरस्वती, मैं आप को प्रणाम करता हूं फिर विनायक-गणेश के पैर लागे।

भवानीशंङ्करौ वन्दे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ ।
याभ्यां विना न पश्यंति सिद्धाः स्वान्तःस्थमीश्वरम् ।।

भगवान शिव की वंदना की तो भवानी को पहले पैर लागा। फिर वहां 'मातृदेवो भव।' पहले पार्वती, पहले भवानी। सीताराम की वंदना करते हैं तो सीताजी की पहली वंदना और स्वतंत्र वंदना की तब पहली स्तुति जानकी की और फिर राम की वंदना की है। सात मंत्रों में तुलसी ने पवित्रतम सद्ग्रंथ का आरंभ किया। श्लोक का आशीर्वाद लेकर और लोकतक जाने के लिए तुलसी ने अब लोकबोली का मार्ग पकड़ा। लोकबोली में पूरा शास्त्र उतार दिया। उन्हों ने अद्भुत काम किया है। जिस भाषा तक, जिस वाणी तक कोई सामान्य आदमी नहीं पहुंच सकता उसको लोकवाणी में उतारा। और जितने-जितने बुद्धपुरुष हुए उन्होंने ये ही कदम उठायें।

पांच सोरठा शरूआत में लिखा। पांच देव की स्थापना की। गणपति, भवानी जगदंबा दुर्गा, भगवान शिव, भगवान विष्णु और भगवान सूर्य। इन पांच देवों की वंदना हमारी सनातन परंपरा है। वैसे तो कोई न स्वीकार करे तो हम से जिद न होगी बाकी तो पांच को सभी को स्वीकारना पड़ेगा। सूर्य को कौन नहीं स्वीकार करेगा? सूर्य को कोई कह सकता है कि ये सांप्रदायिक है? किसकी ताकत है कि सूर्य को सांप्रदायिक कहेगा? ये हिन्दु का सूरज है कि मुस्लिम का है कि ये बौद्ध का है? प्रकाश सभी को स्वीकारना पड़ेगा। श्रद्धा सभी ग्रंथों में है। पार्वती अर्थात् क्या? श्रद्धा। गणेश अर्थात् विवेक। कौन-सा शास्त्र विवेक की मनाई करेगा? जगत का कल्याण भगवान शिव है। विशाल विचारधारा विष्णुतत्त्व है। अंधश्रद्धा नहीं और अश्रद्धा भी नहीं। श्रद्धा रखिए। विशाल दृष्टिकोण रखिए, वो विष्णु। एक दूसरे से व्यवहार, वर्तन में विवेक रखना ये गणपति की पूजा है। उजाले में जीवन का संकल्प करना ये सूर्यपूजा है। दूसरे का भला होवे ये शिव अभिषेक है। ऐसे सीधे-सादे सूत्रों को पांच देव के पांच सोरठे में रखा। और फिर गुरुवंदना करते हुए लिखा-

बंदउँ गुरु पद कंज कृपा सिंधु नररूप हरि।
महामोह तम पुंज जासु बचन रबि कर निकर।।

गुरु के चरण कमल की वंदना करता हूं। उसकी रज से अपने मन के दर्पण को स्वच्छ करके रघुवीर के निर्मल यश का गान करने जा रहा हूं। इस प्रकार गुरुवंदना से रामकथा का आरंभ हुआ। पहला प्रकरण 'रामचरितमानस' का गुरुवंदना है। आरंभ गुरु से होता है। कोई हमें ऐसा कहे, अपना दीपक खुद बन। बुद्ध ने कहा, 'अप्पदीपो भव।' अपना दीपक खुद बन। तुम्हें किसी गुरु की जरूरत नहीं। बाप! व्यक्तिगत तौर पर मोरारिबापू विचार करे तो ऐसा कहेंगे, अपने जैसे को किसी गुरु की जरूरत पड़ती है। जहां से हमें प्रेरणा मिलती है वो गुरु। पर कोई चाहिए। अपने जैसों के लिए कोई चाहिए। जिसको गुरु बिना भी प्राप्ति हो उसको हम प्रणाम करेंगे। उसकी आलोचना करके अपनी उर्जा खर्च नहीं करना है।

पांच सहजता को याद रखना बाप! अभी दो दिन पहले मैं कह रहा था। मैं पूरी कोशिश करता हूं गुरुकृपा से इन पांचों सहजता को पकड़े रखा जा सकता है। १. भगवान राम का सहज सत्य। योजित नहीं, सहज सत्य, क्योंकि अधिकतर हम सब को सत्य के लिये भी आयोजन करना पड़ता है! वो सत्य दूषित हो गया। २. भगवान शिव की सहज बैठक; सहज आसन। अपनी सहजता में बैठना चाहिए। ३. कृष्ण का सहज कर्म। 'सहज कर्म कौन्तेय।' ४. कबीर से सहज समाधि। ५. मेरे लिए कहना हो तो बुद्धपुरुष अपना गुरु हो उसका सहज स्वभाव। ये पांच तत्त्व जिस में आता है उसका पंचतत्त्व का शरीर कुछ अलग ही होता है। तो-

गुरु तारो पार न पायो,
पृथ्वी ना मालिक तमे रे तारो तो अमे तरीए।

गुरु के असंग चरण की वंदना की। तुलसी ने अपने गुरु के चरणरज से आंख को पवित्र किया और विवेकमय किया फिर उन्हें सभी वंदन योग्य लगे। क्योंकि आंख सुधर जाये तो किस की निंदा करनी? हमें दूसरे की निंदा करने की इच्छा हो तो समझना चाहिए कि दूसरा सब होगा पर अपनी आंख पवित्र नहीं है। और वो पवित्र होगी किसी बुद्धपुरुष के चरण की रज से। निंदा करने की इच्छा होती हो तब तक समझना चाहिए कि आंख पवित्र नहीं है। सबसे पहली वंदना तुलसी ने पृथ्वी के देवताओं ब्राह्मण देवताओं की। नई व्याख्या ब्राह्मण की तुलसी ने की वो बहुत ही प्रासंगिक लगता है, व्यवहारु लगता है। तुलसी ने कहा, मैं ब्राह्मणों की वंदना करता हूं। कौन ब्राह्मण? अंधश्रद्धा, मोह, जड़ता, मूढ़ता से जो अनेक प्रकार का वहम खड़ा होता है उस वहम का नाश करता है ऐसे ब्राह्मण को मैं पग लागता हूं। समाज की जड़ता तोड़ डाले, संदेहों को तोड़ डाले ऐसे ब्राह्मण देवता; पृथ्वी के देवताओं की तुलसी ने वंदना की है। फिर सज्जनों की वंदना की। फिर साधुओं की वंदना की; उसमें साधुचरित की बात की है, साधुवेश की नहीं। याद रखें तुलसी के शब्दों को। कपास की उपमा दी।

जो सहि दुख परछिद्र दुरावा।

कान बहता हो तो डाक्टर कहता हैं, रूई डाल लो। नाक में कुछ तकलीफ हुई हो तो वहां भी रूई डाल दो। शरीर में कोई घाव लगी हो तो रूई भर दो। रूई भरकर पट्टी बांध दो। रूई ही काम आती है क्योंकि जितने छिद्र हैं उसको छिपाने का काम रूई ही करती है। सद्गुरु का काम यही कि जो खुला हो उसे ढ़ंकना है। उसको धीरे-धीरे प्रेम से समझाकर और विनय से। बाकी उसे समाज में छिद्रों को खोल-खोल कर नहीं। उसे लगे कि मुझ को ढ़ंकने की कोशिश की। कपास की बात, चरित्र की बात की है, ये क्रान्तिकारी नहीं लगती आपको!

साधु चरित सुभ चरित कपासू।

पूरे कपाल में तिलक लगायें, काली बिंदी लगाकर हाथ में बड़ी माला रखें, लूंगी पहने, कूर्ता पहने, गले में रूद्राक्ष की माला रखें, दाहिने पग के अंगूठे पर चंदन लगायें और खड़ाउं पहने उस साधुवेश की बात नहीं है। चारित्रवान साधु। और यह चरित्र हो तो चड्डीवाला भी साधु; चरित्र हो तो स्त्री भी साधु; चरित्र होना चाहिए, कोई भी वर्ण, कोई भी जाति साधु। तुलसी चरित्र से शुरू करते हैं। ये वस्तु किसी ने देखी ही नहीं! तुलसी को कह दिया परंपरावादी! परंपरावादी होते तो उसका गणवेश होता। पर तुलसी को खबर है, रामचरित्र लिखना है, रामचरित्र जगत के समक्ष रखना है इसलिए चरित्र की बात की है। फिर साधु समाज की, पूरे समाज की वंदना की। हिंदु समाज, मुस्लिम समाज, जैन समाज के बाद वर्णाश्रम में जाओ तो क्षत्रिय समाज, ब्राह्मण समाज, वैश्य समाज, सेवक समाज। जातियों में जाओ तो आहीर समाज, प्रजापति समाज, ये सोनी समाज, ये पाटीदार समाज कितने-कितने समाज? व्यवस्था तक ठीक है। पर कोई समाज के साथ तुलसीदासजी ने 'प्रयाग' शब्द नहीं लगाया। 'प्रयाग' शब्द केवल साधुसमाज के साथ ही जोड़ा है। समाज तो सभी है। होना चाहिए। व्यवस्था के लिए जरूरी है। नहीं तो सब मिल जायेगा। समाज व्यवस्था के लिए समाज जरूरी है, संगठन जरूरी है। तो साधु समाज प्रयाग की तुलसीदास ने वंदना की। साधु समाज के साथ प्रयाग शब्द प्रयोग किया।

मैं अपने साधु समाज में बोलता हूं तब कहता हूं कि अब साधुपन कितना ये तो हम जानते हैं और एक ईश्वर जानता है! पर साधु तो गिनायेंगे ही। साधु के कुल में जन्मे है इसलिए। पर अपने समाज को मैं कहूंगा कि अपने समाज को तुलसी ने प्रयाग कहा है। और प्रयाग में गंगा और यमुना प्रगट होती है, पर सरस्वती गुप्त होती है। मैं अपने समाज को कहता हूं कि अपने समाजरूपी प्रयाग में गंगा और यमुना को प्रगट करना, अपनी सरस्वती को गूंगी रखना, बोल बोल करके समाज को बिगाड़ना नहीं। केवल साधु समाज के लिए नहीं। सभी समाज गंगधारा हैं। जिस समाज के अंदर विवेक की गंगा हो, जिस समाज में प्रमाद न हो, कर्म की यमुना हो, पर उस में एक दूसरे की टीका करनेवाली सरस्वती प्रगट होती है उसमें से समाज बिगड़ता है। तुलसी साधुसमाज को प्रयाग कहते हैं। इस तरह साधु समाज की वंदना की। बाद में असाधुओं की वंदना की, खलों की, दुर्जनों की, राक्षसों की। तमाम लोगों की वंदना की है क्योंकि आंख ही पवित्र हो गई है। जिसकी आंख गुरुचरण से पवित्र हुई उसे सब कुछ परममय दिखता है। समस्त जगत को सीतामममय समझ कर कहकर तुलसी समस्त जगत को प्रणाम किये। फिर उसी क्रम में अयोध्या की वंदना की। महाराज दशरथजी की वंदना की। कौशल्या की वंदना की, महाराज जनकजी का परिचय देते हुए उनकी वंदना की। भरत, शत्रुघ्न, लक्ष्मण इन सभी की वंदना की। इन सब के बीच अत्यंत आवश्यक वंदना श्री हनुमानजी की वंदना करते हुए तुलसी लिखते हैं-

महाबीर बिनवउँ हनुमाना।
राम जासु जस आप बखाना।।
प्रनवउँ पवनकुमार खल बन पावक ग्यानघन।
जासु हृदय आगार बसहिं राम सर चाप धर।।

श्री हनुमानजी की वंदना की। आप सभी जानते हैं, पहले दिन की कथा में हंमेशा कथा को हनुमानजी की वंदना तक पहुंचाने की तलगाजरडा की प्रवाही परंपरा रही है। इतना ही कह कर आज की कथा को विराम की तरफ ले जाउंगा कि आप किसी भी धर्म, किसी भी संप्रदायधारा, किसी भी धर्मजगत के हो उसे पकड़े रखना, आप को मुबारक हो। पर हनुमंततत्त्व तो बिलकुल बिनसांप्रदायिक है। वायु है, पवन है। पवन हिंदु-मुस्लिम नहीं हो सकता और पवन के बिना कोई जी नहीं सकता। इसी से हनुमानजी को प्राणतत्त्व गिना गया है। प्राणबल ये हनुमान को कहा गया है और इसकी मुझको और आप को सभी को जरूरत पड़ती है। हनुमंततत्त्व मुझ को और आप को उपर भी ले जाता है, नीचे भी ले आता है। दसों दिशाओं में घुमाता है। हनुमंततत्त्व की यह महिमा है। ऐसा एक सार्वभौम तत्त्व जिसको सनातनधर्मी हनुमान कहते हैं, बाकी तत्त्वतः पवन है, हवा है, प्राणवायु है, फिर पूर्वग्रह से कोई न माने तो उसके साथे कौन जिद करेगा?

मेरा पहले से कहना है कि हनुमानजी की स्तुति बहनें भी कर सकती हैं। हनुमानजी का पाठ बहनें भी कर सकती हैं। हनुमानजी की आरती बहनें भी कर सकती है। हनुमानजी को दीया बहने भी कर सकती हैं। जिन लोगों ने ये सब योजाना कि की हनुमानजी की स्तुति बहनें नहीं कर सकती, दीया-बत्ती नहीं कर सकती, ये सब ठीक नहीं है मेरी दृष्टि से। ऐसा कुछ हो ही नहीं सकता। वो कौन है उसे खोज रहा हूं मैं सत्तर वर्ष से। पर आपको मोरारिबापू के प्रति भावना है तो मैं इतना ही कहूंगा; हनुमंततत्त्व अपना प्राणतत्त्व है, उसको स्त्री-पुरुष का भेद नहीं होता बाप! वो तो परमतत्त्व है। उसका आश्रय खूब करना। दूसरा कुछ न हो तो कोई बात नहीं, 'हनुमानचालीसा' अथवा तो जो कुछ आप से हो। हनुमानजी की वंदना करते हुए तुलसी ने 'विनयपत्रिका' में प्रसिद्ध पद लिखा उसकी दो-तीन पंक्तियां गा कर आज की कथा को विराम की ओर ले जाएं।

मंगल-मूरति मारुत-नंदन।
सकल अमंगल मूल-निकंदन।।
पवनतनय संतन-हितकारी।
हृदय बिराजत अवध-बिहारी।।

आज की कथा को विराम दे इससे पहले व्यासपीठ की इच्छा है, छत्तीसगढ़ में जो घटना घटी, लगभग पच्चीस या छब्बीस अपने जवान शहीद हुए। तद्उपरांत काश्मीर में दो दिन पहले एक दिन पहले घटना घटी; उसमें भी शायद एक-दो जवान शहीद हुए हैं। आज महुवा के द्वार पर कथा का आरंभ हो रहा है तब हम दूसरा क्या कर सकते हैं? उन शहीदों के परिवार को हम अपनी संवेदना पहुंचायें। रविवार को ही मैं छत्तीसगढ़ से निकला और सोमवार को ही ये घटना हुई। पर व्यासपीठ आज मुखर हुई तब मेरे मन में ऐसा आ रहा है कि दूसरा कुछ नहीं तो भी अपनी संवेदना, अपनी फिलिंग पहुंचाएं। मुझे लगता है, कथा के पहले दिन हम ग्यारह-ग्यारह हजार रूपये शहीदों के परिवार के लिए भेज दे केवल अपनी एक संवेदना के खातिर। हमें कोई शोकसभा या मौन नहीं पड़वाना है, पर एक संवेदना अपनी पहुंचे इसलिए ये व्यवस्था करायेंगे। बाकी इसकी कोई कींमत नहीं है। जिसके घर से व्यक्ति गया होगा उसके लिए तो सवाल ही नहीं है! पर आखिर में हम सब संयुक्त हैं, जुड़े हुए हैं। जगत में कभी भी कुछ भी हो तो उसकी असर हम सभी को होती है।

हम अन्य का हित करें यह बहुत अच्छी वस्तु है। पर अन्य का शुभ करें, अन्य का भला करें उसकी अपेक्षा उत्तमोत्तम घटना ये है कि अन्य का हित करते-करते अन्य को पवित्र भी करना। हम कई बार अन्य का हित करते हैं पर पवित्र कर सकते नहीं हैं। और पवित्र करना उत्तमोत्तम काम है। और कथा दोनों काम करती है। कथा दो काम करती है साहब! वो हित भी करती है और साथ ही साथ पवित्र भी करती है। हित करना उत्तम कर्म है। पर पवित्र करना, पूरा जीवन बदल डालना साहब! मूल से धो डालना। ये पावित्र्य लाना ये कथा का दूसरा काम है।

'रामचरितमानस' की कथा में नव गृह हैं, नव ग्रह हैं और नव अनुग्रह हैं

जगद्गुरु आदि शंकराचार्य भगवान का आज प्रागट्य दिवस है। सनातन वैदिक धर्म के परम ज्योतिर्धर भगवान आदि शंकराचार्य, जिनका आज जन्म दिवस है, इसलिए हम सब आज उसका स्मरण करें।

शंकरं शंकराचार्यं केशवं बादरायणम् ।
सूत्र भाष्य कृतौ वन्दे भगवन्तौ पुनःपुनः।।

दूसरी प्रसन्नता की बात ये है कि इस्लाम धर्म में बहुत ही बड़ी शहीदी और कुरबानी देनेवाले इमाम हुसेन साहब का भी आज के दिन प्रादुर्भाव हुआ। मैं अपनी व्यासपीठ से उसकी पवित्र दरगाह पर, उसके पवित्र स्थान पर आदाब करता हूं, सलाम करता हूं। बहुत ही सुंदर योग है। करबला के मैदान में बहत्तर जनों ने जो शहादत ली, मैंने बहुत बार हिन्दु-मुस्लिम की तकरीर में अपने महुवा में बात की है कि ये केवल संख्या नहीं है, पर मुझे लगता है कि उस समय के समाज के वो बहत्तर नहीं, परन्तु बेहतर लोग थे; कुछ विशेष लोग थे। जिन्होंने कुरबानी दी उन सबके पुण्य को स्मरण करके आगे बढ़ें।

'मानस-कथा', भवानी महादेव से पूछना चाहती हैं ऐसी कथा जो समस्त लोक का हित करे। ऐसी बात पूछने की इच्छा उन्हे हुई है और इस के जवाब में भगवान शिव ऐसा कहते हैं कि देवी, आपने रघुपति की कथा का प्रसंग पूछा। आपने ऐसा कहा, जिस कथा द्वारा लोक का हित होता है। शिवजी की बात में मैं एक बात जोड़ता हूं। भवानी की कथा लोगों का हित तो करती ही है, पर लोगों को पवित्र भी करती है।

पूँछेहु रघुपति कथा प्रसंगा।
सकल लोक जग पावनि गंगा।।

मैंने कल भी कहा था। हित करना ये बहुत अच्छी वस्तु है। पर उसकी अपेक्षा उत्तमोत्तम वस्तु है पवित्र करना। व्यक्ति, राष्ट्र, समाज, विश्व पवित्र तो ही हो सकेगा जब मनुष्य दूसरे के लिए सेवा और समर्पण कर सकेगा। अपनी प्यारी पृथ्वी और इतना सुन्दर विश्व, उसे पवित्र कब कर सकते हैं? जब हम में सेवा और समर्पण आएगा।

तो बाप! जो ग्रंथ लेकर मैं आप के समक्ष बैठा हूं उस ग्रंथ में, उस कथा में नव गृह है; नव घर है। ऐसी कथा भवानी ने शिव को पूछी और शिव ने कही। उस कथा में नव ग्रह भी है। इतना ही नहीं, जो कथा पार्वती पूछने की इच्छा करती है उस कथा में नव अनुग्रह भी है। आइए, गिनते हैं। इस तरह से 'रामायण' का दर्शन करते हैं तो ऐसा लगता है, ये किताब नहीं, ये बुद्धपुरुष की खोपड़ी है। ये पुस्तक नहीं है साहब! जैसे 'कुरान' को हम पुस्तक नहीं कहेंगे, पवित्र ग्रंथ है। 'बाइबल' पवित्र ग्रंथ है। 'धम्मपद', 'गुरुग्रंथ साहब', 'रामचरितमानस' पवित्र सद्ग्रंथ है। पुस्तक नहीं है साहब ये। ये किसी पहुंचे हुए परम के बिल्कुल पास बैठे हुए, परम में लीन हो गए ऐसे किसी बुद्धपुरुष की खोपड़ी है। ऐसा सर्वोत्तम बुद्धपुरुष इसका रचयिता है, जिसका नाम है भगवान शंकर।

'रामायण का अर्थ ही यही होगा; अयन यानी गति, राम की गति। और अयन यानी उसका एक अर्थ ऐसा भी होगा कि राम का घर। ये स्वयं नव गृह है। इसमें से एकाद घर पसंद कर ले साहब! बेड़ा पार! रामकथा में पहला घर मातृघर अथवा पितृघर। मैंने बहुत बार कहा है कि जिसने 'रामायण' आत्मसात् की हो, 'रामायण' कथा का जिसने अनुभव किया हो उसके माँ-बाप किसी दिन नहीं मरते हैं। अर्थात् माता-पिता तो मरते ही है। शरीर तो जाता ही है। पर उसके लिए ये सद्ग्रंथ मातृगृह और पितृगृह बनकर सदा आश्रय और विश्राम देता है। पितृगृह है रामकथा, मातृगृह है ये रामकथा। रामकथा के उपासक इस घर में निवास करते हैं। तीसरा घर है रामकथा, जिसको तुलसीदासजी मनोगृह कहते हैं। अथवा कहते हैं, 'राम बसहु तिन्ह के मन माहीं।' रामजी ने वाल्मीकि से प्रश्न पूछा कि मुझे स्थान बताईए कि मैं कहा रहूं? तब वाल्मीकि चौदह स्थान बताते हैं उसमें कहते हैं, कभी मन आपका घर बने, हृदय आपका घर बने।

चौथा गृह है 'रामायण' मैं चित्तगृह। 'रामयण' में चार गुफा की कथा है। चार गुफा का वर्णन तुलसीदासजी ने दिया हैं 'रामचरितमानस' में। मैं पुण्य स्मरण करता हूं, पंडित रामकिंकरजी महाराज ने कहा है कि एक मन की गुफा है, एक बुद्धि की गुफा, एक चित्त की गुफा, एक अहंकार की गुफा है। भगवान राम-लक्ष्मण जिस गुफा में निवास करते हैं प्रवर्षन पर्वत पर उस गुफा को 'रामचरितमानस' के व्याख्याताओं ने चित्त की गुफा कहा है। चित्त अपना गृह है। जन्मोजन्म के कितने पदार्थों को हम अपने चित्त में लेकर घूमते हैं साहब!

आज मुझे किसी ने प्रश्न पूछा है, 'बापू, हमको गत जन्म का भान कब होता है?' अभी की घड़ी का मज़ा लो न! मैं कहूंगा, इस नव दिवस की कथा का मज़ा ले लें। बाकी गये जन्म और अगले जन्म का मुझ को पता नहीं। पर आप को बताना हो तो मैं आप को जानकारी दूं। चित्त में संग्रह की हुई वस्तु मनुष्य जितनी कम करेगा उतना उसका पुनर्जन्म और गत जन्म का भान होगा, ऐसा पतंजलि योगसूत्र में लिखा है। जिस आदमी के परिग्रह का प्रमाण कम होगा वो आदमी अपने जन्म की कथा कर सकेगा। गत जन्म में मैं ये था। उगले जन्म में ये होऊंगा। ऐसा स्पष्ट सूत्र पतंजलि ने दिया है। अपने चित्त में कितना सारा फर्निचर है! घर में कितना सारा फर्निचर है! कोना-कोना भरा है! बहुतों के घर जाता हूं। उनके घर मंदिर हो तो मैं प्रसन्न होता हूं। घर ही मंदिर हो तो मैं अधिक प्रसन्न होता हूं। आप मेरी बात समझिए। घर में मंदिर तो मुझे अच्छा लगेगा। पर घर ही मंदिर हो तो मुझको बहुत ही अच्छा लगेगा। फिर उसमें कितने सारे देवता, देवियाँ! मुझे ऐसा लगता है, इतने अधिक देवताओं को रखने की क्या जरूरत? फिर मैं पूछता हूं तो कहते हैं, हमारे घर जो भी महात्मा आते हैं वो कोई न कोई मूर्ति देते जाते हैं! फिर डर लगता हैं। अब क्या करने का? उसको मैं कहता हूं कि अब फिर से जो महात्मा आयें उन्हें एक-एक देव पकड़ाते जाना! उसको कवर-बवर नहीं देना है! कवर तो बापू मिथ्या है, ब्रह्म सत्य है। गणपति को ले जाइए। इस शिवलिंग को ले जाइए। उसकी श्रद्धा हो अनेक देवता रखे तो मुझको कोई एतराज नहीं। खैर! जिसकी जैसी श्रद्धा।

इस शहर में बेचेहरे लोग दिखाई देते हैं।
कभी-कभी कोई चेहरा दिखाई देता है।
-जांनीशार अख्तर

शहर में कोई ही चेहरा दिखता है, बाकी तो चेहरे बिना के ही हैं।

जिसके मन में-चित्त में अत्यंत विचार हैं वो जन्म की बातों को नहीं समझ सकेगा। जिसने ऐसा निश्चय किया है कि मेरे तो इतने फोलोअर्स होने ही चाहिए, मुझे तो इतने चेले चाहिए ही, मुझको इतने अनुसरण करने वाले चाहिए ही, उनकी संख्या बढ़नी ही चाहिए, उनकी लिस्ट तैयार होनी चाहिए! व्यक्तियों की ही बढ़ोतरी करनी है उसको किसी दिन पतंजलि के मतानुसार जन्मज्ञान नहीं होता है। हमें जानने की कोशिश भी नहीं करनी चाहिए कि पिछलें जन्म में हम क्या थे और अगले जन्म में हम क्या होंगे? ये जानने से कुछ फायदा भी नहीं होनेवाला। पर विज्ञान है। ये जान सकते हैं। और इस से ये भी फलित होता है, सनातन धर्म की परंपरा में पुनर्जन्म भी है और पूर्वजन्म भी है। मोरारिबापू इसमें दृढ़तापूर्वक मानते हैं कि यहां पूर्वजन्म भी है। इसलिए हमें दूसरी बार आना है, है न! वो तो अपना घोसला होगा वहां ही जाना होगा न! महुवा में थोड़ी जन्म लिया जायेगा? महुवा में तो लड़कों को पढ़ाये जायेगा। वहां पढ़ने जाया जायेगा। पर जन्म तो

तलगाजरडा में ही लिया जायेगा। कहीं दूसरी जगह थोड़े जाना?

दूसरे एक नौजवान का पत्र है। 'बापू, कथा में सुना था कि एक जोड़ी कपड़ा खादी का बसाना। बापू, मैंने अपने जन्म दिन से खादी का कपड़ा पहनना निश्चित कर लिया। मेरी जन्म तारीख २९-०४-१७ यानी कल थी और आपने भी कथा मेरे जन्म दिवस से आरंभ की।' देखा? सबको ऐसा ही लगता है कि ये कथा हमारी ही है। दानाभाई तो केवल नाममात्र है! लीजिए! ये तो वो कहें ये मेरी कथा है; वो कहे, ये मारी कथा है। Government by the people, of the people, for the people. उसी तरह दानाभाई की कथा By the people, of the people, for the people. यह युवा कहता है, 'मेरे जन्म दिन पर कथा शुरू हुई। अब उसने खादी पहनना शुरू किया। आपको मुझे सवा दो मीटर खादी देनी पड़ेगी।' लो! अब पहनना उसको है, देना मुझको! सपना वो देखे, पूरा मुझको करना है! देखो तो सही! पर कैसा भरोसा होगा व्यासपीठ पर! ले जाना बच्चा। आज पौने पांच और पांच के बीच तलगाजरडा आना। तुम्हारे लिए सवा दो मीटर कपड़ा शुद्ध खादी गांधीबापू के स्मरण के साथ तुम्हें अर्पण किया जाएगा। 'मेरा एक्सिडेन्ट होने के बाद मेरा काम बंद है। मेरी पत्नी ने मुझको कपड़ा ले दिया। मेरी पत्नी शिक्षक है। अब मुझे कपड़ा आप दें। अभी तक मैंने अट्ठारह सौ रूपये का पेन्ट और आठ सौ रूपये का शर्ट पहना है। पर अब मैं खादी कपड़ा पहनूंगा।' आप शाम को आना, पक्का। जय सीयाराम।

तो खराब सपना आये उस दिन समझना कि नरक। स्वप्न अर्थात् मनोरथ भी है। ये दानाभाई का अच्छा मनोरथ हुआ होगा, उन्हें उपजा होगा कि मैं कहां था? प्रभु ने आज कृपा की, मुझे ऐसा सत्कर्म करना है। ये स्वप्न उसके लिए स्वर्ग है। उनके सपने के कारण आज हम सब महुवा में स्वर्ग में हैं। दूसरा क्या? कौन-सा स्वर्ग? हम पाप भी क्या कर सकते हैं? और परमात्मा वो रहमान है। पूरा इस्लाम धर्म जिसको रहमान कह कर पुकारता है, जिसे मैं हनुमान कह कर पुकारता हूं। ईश्वर क्रूर होगा? क्रूर हो ऐसा परमात्मा हमे वांछित नहीं। रहमान है। रहमत करता है; करुणावान है, करुणामूर्ति है। वो जो परमतत्त्व अपने यहां आये, हिन्दु में हो, मुसलमान में हो, बौद्ध में हो, जैन में हो, सभी महापुरुष आये वो कोई सामान्य नहीं हैं। रहमत है उसको हम कितना भीषण चित्रित करते हैं! पर इतना अधिक घबरा जाने की जरूरत नहीं है। उसकी रहमत हमारे गुनाहों से अनेक गुना बड़ी है। हम में खुमारी नहीं है।

न कोइ खलीश न कोइ खुमारी है।
यह शख्स तन्हा दिखाई देता है।

न कोई खुमारी, न कोई प्रसन्नता, न आनंद। आदमी कितना अकेला हो गया है! अख्तरसाहब का शे'र है। एक वस्तु याद रखना, आज के युग में विवेक प्रगट करने का बहुत उत्तम साधन हो तो भगवान की कथा है। भगवान की कथा ने बहुत विवेक प्रगट किया है। कथा ने पांच वस्तु दिया है। एक, समाज में विश्वास प्रगट किया है। भाई-भाई में, पति-पत्नी के बीच, बाप-बेटे के बीच, कौम-कौम के बीच विश्वास प्रगट किया है। हमने अपेक्षा की उतनी मात्रा में भले न हुआ हो पर विश्वास प्रगट किया है। दूसरा, कथा ने परस्पर विश्राम बढ़ाया है। मनुष्य थोड़ा रिलेक्स हुआ है। मनुष्य थोड़ा विश्राम करनेवाला बना है। तीसरा, कथा ने मनुष्य-मनुष्य के बीच विनोद किया है। हंसते रहो, दूसरे से प्रेम से मिलो।

बीच में एक चिठ्ठी ले लूं, 'बापू, प्लीज़ मार्गदर्शन दीजिएगा। मैं एक रामकथा सुननेवाले और इमानदार पिता की पुत्री हूं। मेरे पिता आपकी प्रत्येक कथा संभव हो तो कथा मंडप में अथवा टी.वी. पर सुनते हैं। बापू, मेरा लग्न दिसम्बर में है और मैं अपने पिता को कोई भेंट देकर ससुराल जाना चाहती हूं। तो एक पुत्री के रूप में पिता को क्या भेंट दूं? बेटा, पांच भेंट देना। जिस घर जाओ वहां विश्राम पैदा करना; जिस घर जाओ वहां आनंद, मौज और विनोद पैदा करना; जिस घर जाओ वहां विवेक पैदा करना; और जिस घर जाओ वहां तुम्हें थोड़ा काम मिले तो कोई बात नहीं, पर दूसरे को मिले इस प्रकार धीरे-धीरे वैराग्य पैदा करना। बाप को अन्य कोई स्थूल वस्तु देने की जरूरत नहीं है। और बाप पुत्री का थोड़े लेगा?

कथा विवेक प्रगट करती है; कितने प्रमाण में करती है वो कहना मुश्किल है। और होता है अवश्य। कथा सुनने के बाद विवेक, विश्राम, विश्वास धीरे-धीरे थोड़ी त्याग वृत्ति, विनोद। बहुत बार आदमी को ऐसा होता है कि मैंने इतनी कथा सुनी, इतना 'हमुमानचालीसा' का पाठ किया फिर भी परिणाम नहीं आता! इतना याद रखना, परिणाम आपके कर्म से नहीं आयेगा। परिणाम आयेगा ईश्वर के विधान से। जन्म जाना जा सकता है? अवश्य जाना जा सकता है, परिग्रह कम होगा तो।

तो बाप! 'रामचरितमानस' अर्थात् इस कथा में नव गृह हैं। मातृगृह, पितृगृह, मन, चित्त। पांचवां गृह 'रामचरितमानस' में पर्णगृह; पर्णकुटिर बनाकर प्रभु रहते हैं। वन में भगवान पर्णकुटिर बनाकर निवास करते हैं। ये पांचवां घर 'रामचरितमानस' का है। छठ्ठा गृह, जहां

भगवान राम का जन्म हुआ, जो भूमि जिसको तुलसी और आचार्यों सब ने कनकभवन कहा है। जहां प्रभु प्रगट हुए, वो कनकभवन वो घर है जिसको मंगल भवन नाम दिया तुलसी ने। वो भी एक भवन है। आगे का भवन। बहुत से मनुष्यों के लिए अंहकार ही अपना घर होता है। अहंकार के घर में ही रहते हैं! जिसमें वालि रहता था, जिसमें रावण रहता था चौबीसों घंटे अहंकार के घर में। अहंकार के घर में मैं और आप अधिक से अधिक रहते हैं। ये मेरा बंगला, यह भी एक अहंकार की घोषणा है। ये मेरा घर, ये ममता तो है ही पर सबसे अच्छा मेरा घर है इसका थोड़ा अहंकार भी होता है।

आंठवां गृह है स्वयं शास्त्र। स्वयं शास्त्र अपना घर है। 'राम अयन रामायन आही।' शास्त्र हमारा घर है। थका-हारा घर जाता है उसी तरह जीवन की समस्याओं का रास्ता खोजने हमें पवित्र ग्रंथों के पास जाना पड़ता है। वो अपना घर है; वो अपना विश्राम है। तुलसी वर्षों तक घूमे। एक सौ पचीस-छब्बीस वर्ष की उम्र इस महापुरुष की। बहुत घूमे, बहुत घूमे! फिर 'रामायण' के घर आये तब कहा, 'पायो परम विश्राम।' अब मुझको विश्राम मिला। ये आठवां गृह है विश्राम का। पर नौवां गृह बहुत प्रसिद्ध है। उसके अणु-परमाणु बहुत काम करेंगे। वो व्यक्त हो इसकी अपेक्षा उसका अव्यक्तपना अधिक फायदेमंद होता है। उसका मौन अधिक से अधिक आपको और मुझको मदद करता है। बुद्धपुरुष चौबीस घन्टे जैसी ऋतु होती है उसमें सुख दे ऐसा एक गृह है।

तो नव प्रकार के गृह जिस में हो उसका नाम कथा है। फिर कथा में नव ग्रह होते हैं। सोम, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि रवि, राहु, और केतु। अपने यहां नव ग्रह है। 'रामायण' में सोम तो है। चन्द्र का वर्णन है। 'सीय मुख समता अपावनि चंद्र बाँपुरो रंक।' चन्द्र की कथा है। व्यक्त-अव्यक्त, प्रगट, अप्रगट, चंद्र ग्रह को लिया। चंद्र ग्रह को भगवान राम ने अपने नाम के साथ जोड़ा।

सब बिधि सब पुर लोग सुखारी।
रामचंद्र मुख चंद्र निहारी।।

गोस्वामीजी कहते हैं, चन्द्र ग्रह है। मंगल ग्रह-

मंगल भवन अमंगल हारी।
द्रवउ सो दशरथ अजिर बिहारी।।

मंगलवार; तुलसी ने लिखा, मंगल ग्रह है। और 'जिमी बिधु...' बुधवार- बुध ग्रह का उल्लेख तुलसी ने 'मानस' में किया। शुक्र का अर्थ होता है सामर्थ्य, पराक्रमी। पराक्रमी के अर्थ में 'रामचरितमानस' में परमात्मा को शुक्रवान, सामर्थ्यवान कहा है। गुरुवार तो, कितने गुरु इसके अंदर हैं! बृहस्पति हैं, वशिष्ठ हैं और सबसे गुरुवार देता तो-

तुम्ह त्रिभुवन गुरु बेद बखाना।
आन जीव पाँवर का जाना।।

शनिवार अर्थात् हनुमान। अधिक से अधिक लोग हनुमान को शनिवार में गिनते हैं। हनुमानजी को अधिकतर हम शनि- अथवा मंगलवार भी मानते हैं। इसमें तो हनुमान पृष्ठ-पृष्ठ पर है; ओतप्रोत हैं। रविवार अर्थात् रवि का बड़ा महत्त्व है।

भरत हंस रबिबंस तड़ागा।
जनमि किन्ह गुन दोष बिभागा।।

सात ग्रह- सोम, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र शनि, रवि फिर राहु

गयउ जहां रावन ससि राहु।

बहुत गजब की पंक्ति है 'अरण्यकांड' में। भगवान को राहु कहा और रावण को चंद्र कहा। राहु के सभी लक्षण भले खराब हो पर राहु का एक लक्षण बहुत अच्छा है। और वो है उसकी तृषा। राहु प्यासा है। उसकी तृषा अच्छी वस्तु है। मुझे राहु यहां इसलिए अच्छा लगता है कि उसको प्यास है, वो पिपासु है। प्यास में दूसरा कुछ नहीं पीना, उसे अमृत पीना है। मोहिनी बनकर मेरे ठाकुरजी आये हैं और सुर-असुर की पंक्ति लगी। सुर तत्त्वों की अपेक्षा आसुरी तत्त्व बहुत बलवान होते हैं। उसमें ऊर्जा अधिक होती है। भगवान उस अमृत का बंटवारा करने का उपाय खोजे और सभी उसमें लुब्ध हुए, मोहित हुए और सब ने ये स्वीकार कर लिया कि आप बांटो। इसमें राहु को पता चल जाता है और राहु बीच में आ जाता है सूर्य-चन्द्र के बीच। परंतु उसकी प्यास है; पिपासु है। मुझको अमृत पीना है। कौन-सा अमृत? मैं तुलसीदास का नाहक बखान नहीं करता बाप! तुलसी बहुत प्रेक्टिकल और कहीं-कहीं तो रेशनालिस्ट लगते हैं। उन्होंने ऐसा कहा, 'सुनिअ सुधा देखिअ गरला।' अमृत के विषय में तो सुनने में आता है, बाकी जहर तो दिखता है। अमृत किसी ने देखा है? दूसरे अमृत की मुझको खबर नहीं है पर ये अमृत है, 'धन्यास्ते कृतिनः पिबन्ति सततं श्री रामनामामृतम्।'

ये दानाभाई रामजी मंदिर में बत्तीस लाख देते हैं और दूसरी जगह भी देते रहते हैं और देते रहेंगे। पर बड़े से बड़ा इस फाफड़ावाला का दान है ये कथा। लोगों को कथा देना यह बड़े से बड़ा दान है। मैं नहीं कर रहा, शास्त्र कहता है। कथा जैसा कोई दान नहीं। और कथा गानेवाले जैसा कोई बड़ा दानवीर नहीं है। इसमें मोरारिबापू को आप बीच में नहीं लाना। ये शंकर की बात है; ये शुकदेव की बात है। हम लोग तो उसके पदचिह्नों पर चलने की कोशिश कर रहे हैं। कथा जैसा कोई दान नहीं। और कथा का आचमन करवाना उससे जैसी कोई दानवीरता नहीं है। दान है भगवद्कथा।

अमृत ये केवल पेय नहीं है बाप! कथा अमृत है। कथा का पान ऐसा है, जो मुंह से नहीं पीया जाता, कान से पीया जाता है। तो राहु की प्यास अमृत की है इसलिए

उसकी प्यास मुझको पसंद है। जैसा-तैसा राहु नहीं पीता इसलिए वो बीच मैं बैठ गया है कि अमृत पी लूं। मोहिनी माताजी निकली है अमृत कलश लेकर। ये तो समुद्र मंथन की कथा है। सूर्य ने लिए अमृत का पान किया। राहु बीच में बैठा है उसमें भगवान ने राहु को अमृत दिया क्योंकि उसको पता चल गया कि ये जो मोहिनी माताजी हैं ये कोई स्त्री नहीं, ये परब्रह्म परमात्मा हैं। और जो पहचान जाता है वो मीठे अमृत का भागीदार बन जाता है। इसलिए राहु ग्रह अच्छा है।

नौंवा ग्रह केतु। केतु यानी पताका भी होता है और केतु यानी ग्रह भी है। इसका वर्णन भी 'रामचरितमानस' में है। इसमें नव के नव ग्रह है। ज्योतिष विद्यानुसार पूरा शास्त्र है। उस शास्त्र को मैं अवश्य मानता हूं पर मुझको उसमें समझ भी नहीं पड़ती और मेरी उसमें बिल्कुल रुचि भी नहीं है। गणित है वो अवश्य है। पर मुझे आपको इतना कहकर आगे बढ़ना है कि कोई भी ग्रह बाधा डालता हो तो एक बार 'रामायण' का तो प्रयोग करो यार! आपको कोई भी ग्रह बाधा डालता हो; मंगल रोके, बुध रोके अथवा न रोकता हो तो भी वो रोकता है, ऐसा कहकर आपको किसी ग्रह की दशा में रख दे उस समय हृदय से एक बार 'रामायण' का पाठ करके देखो, सभी ग्रह अनुग्रह में परिवर्तित हो जायेंगे। मैं कोई प्रलोभन नहीं देता, साहब! मेरा तीव्र भरोसा है, 'रामायण' का मंगलाचरण एक बार आंसू के साथ कीजिए न साहब, क्या नहीं होता?

तो भगवद्कथा के नव गृह, नव ग्रह और अब नव अनुग्रहों की बात करें। सोम-चंद्र ग्रह है, ठीक है? ज्योतिष में मुझे बहुत पता नहीं चलता इसलिए अधिक बोल नहीं सकता। मेरा ये अभ्यास नहीं है और अभ्यास तो ठीक, पर रुचि ही नहीं है। केवल भरोसा पर जीने का एक व्रत लेकर बैठ गया फिर ग्रहों की बात में क्यों पड़ें? चंद्र किसी को बाधा डालता है या नहीं डालता ये मुझको पता नहीं है। शायद किसी को बाधा डालता हो तो वही ग्रह अनुग्रह हो जाएगा क्योंकि तुलसी ने 'मानस' में लिखा है-

राका रजनी भगति तव राम नाम सोइ सोम।

सोम ग्रह ये रामनाम है। वह आदमी रामनाम का जप करता जाएगा तो वो ग्रह अनुग्रह में बदल जायेगा। प्रयोग करना पड़ेगा। डॉक्टर की दवा लेकर पीना तो पड़ेगा। इसलिए मैं कथा को प्रयोगशाला कहता हूं। इसका प्रयोग तो करना ही पड़ेगा। तो सोम ग्रह अनुग्रह में बदल जाएगा। अब मंगल। मंगल तो सबको बहुत बाधा डालता है! अब इस लग्न में तो मंगल बाधा डालेगा ही! मंगल प्रसंग को मंगल ही रोकता है! माँ-बाप का मंगल प्रसंग लड़के-लड़की के विवाह का उसमें मंगल ही विरोध में आकर खड़ा होता है। मंगल का जाप करना पड़ेगा, ऐसा कहते हैं! होगा। पर वही मंगल जो विरोध में आता हो वो अनुग्रह में बदल जाएगा यदि परमात्मा की कथा का थोड़ा भी आश्रय हम और आप करेंगे। 'मंगल करनी कलिमय हरनी।' मंगल ग्रह अनुग्रह में बदलेगा। इन सभी ग्रहों को और कुंडलियों को दिखा दिखाकर जिसने जिसने लग्न किया है वो नब्बे प्रतिशत कोई सुखी नहीं है! गांव के आदमी जो पचास-साठ वर्ष पहले विवाह किये, वे किसीने कुंडलियां मिलायी ही न थी!

ग्रह अनुग्रह में बदल जाए, यदि मंगलभवन की कथा का गान हो; उसका थोड़ा आचरण हो तो वह ग्रहदशा भी बदल सकती है। बुध; 'सील कि मिल बिनु बुध सेवकाई।' बुध यानी विद्वान। विद्वान की सेवा किए बिना आदमी को शील की प्राप्ति नहीं होती है। युवा भाई-बहनों, किसी विद्वान, किसी श्रेष्ठ, किसी साक्षर, किसी बुद्धिमान, जिसने हमारी अपेक्षा अधिक पढ़ा हो, सुना हो, जाना हो, अनुभव किया हो ऐसे चतुर इंसान से पूछने से, उसकी बगल में बैठने से हमें शील प्राप्त होता है, ऐसा 'रामायण' कहता है। बुध की विपरीत दशा खत्म होगी। और गुरु तो किसीका खराब होगा ही नहीं। यदि वो खराब होगा तो गुरु कैसा? गुरु किसी का कमज़ोर होता ही नहीं। कमज़ोर हो वो गुरु ही नहीं। सुद्गुरु के रूप में जब हम गुरु को देखते हैं तब वो ग्रह अनुग्रह में परिवर्तित हो जाता है। हम में सामर्थ्य न हो परंतु जिसमें सामर्थ्य है उसका आश्रय करें तो अपना शुक्र ग्रह भी अनुग्रहित हो जाता है। वो भी अपने पास खड़ा रहता है। शनि ये ग्रह है। पर जैसा अभी कहा वैसा, श्री हनुमानजी महाराज का आश्रय करने से तो वो ग्रह अनुग्रह में परिवर्तित होगा।

सकल अमंगल मूल-निकंदन।
मंगल-मूरति मारुत-नंदन ।।

हनुमानजी का आश्रय शनि ग्रह को अनुग्रह में परिवर्तित कर सकता है। सूर्य प्रकाश का देवता है। हम पर अनुग्रह करता है। और राहु, अभी हाल मैंने कहा उसी तरह अमृत की पिपासा हममें जगे तो राहु ग्रह भी हम पर अनुग्रह करने लगता है।

'रामचरितमानस' की कथा में नव गृह है, नव ग्रह हैं और नव अनुग्रह है, ऐसी इस कथा की महिमा है, इसलिए हमने 'कथा' शब्द पकड़ा है। लगभग एक सौ सत्तर या उससे अधिक बार तुलसी ने 'कथा-कथा' शब्द का प्रयोग 'मानस' में किया है। इतनी बार 'कथा' शब्द को अंदर उतारा है। बहुत सनातन कथा गायी जाती रही है अपने यहां। फिर एक बार त्रिभुवनदास दादा को याद करता हूं। आप 'रामचरितमानस' का ग्रंथ लेना, उसमें प्रत्येक कांड पूरा होता है न उसमें फलश्रुति अलग-अलग बताया है। पर दादा मुझसे कहते, बेटा, किसी वस्तु की

अपेक्षा नहीं करनी चाहिए। 'विमल वैराग्य संपादन नामो।' इसलिए हम 'बालकांड' पूरा करते हैं तो भी ऐसा कहते हैं, 'इति श्रीमद् रामचरितमानसे सकलकलि कलुष विध्वंसने विमल वैराग्य संपादन नामो।' प्रत्येक जगह विमल वैराग्य की बात नहीं है मूल में। पर ये तलगाजरडी दृष्टि है। मांगो तो वैराग्य मिलेगा। दूसरा कुछ नहीं मांगना है। और वो वैराग्य भी विमल वैराग्य, दूषित नहीं, आडंबरी नहीं, दांभिक नहीं। तो विमल वैराग्य वो है। उसकी महिमा अद्भुत है, उसकी महिमा गजब है!

तो बाप! ऐसी केन्द्र में जो रामकथा है उस कथा में हनुमानजी की वंदना करने के बाद तुलसीदासजी ने सीताराम की वंदना की। उसमें भी पहले सीताजी की फिर रामजी की। हमेशा मातृत्व को पहले तुलसी ने रखा है। फिर नौ दोहे में बहत्तर पंक्तियों में अर्थात् पूर्णांक में तुलसीदासजी ने परमात्मा के नाम की महिमा, नाम की वंदना की। फिर वो राम का नाम हो, कृष्ण का नाम हो, अल्लाह का नाम हो, बुद्ध का नाम हो, कोई फर्क़ नहीं पड़ता। नाम की महिमा तुलसीदासजी ने 'रामायण' में खूब लिखा है। मैं 'राम-राम' शब्द कर रहा हूं तो कोई संकुचित अर्थ न करे। प्रभु का नाम यानी कोई भी नाम लो। कलियुग में नाम का महत्त्व है। उसके बाद कथा को सजाते हुए ऐसा कहा कि भगवान शिवजी ने 'रामचरितमानस' की रचना की। अपने मानस में उसे रखा। योग्य समय मिला तब उन्होंने पार्वती को ये कथा सुनाई। फिर वो कथा कागभुशुंडि को मिली। उन्होंने भरद्वाजजी को कही। और तुलसीजी कहते हैं, वही कथा मेरे बचपन में वराह क्षेत्र में मैंने अपने गुरु से श्रवण किया। पर उस समय मेरी उम्र नादान थी। कृपालु गुरु ने कथा को बारबार कहा। जब मुझे थोड़ी समझ पड़ी तब मैंने एक गांठ बांध ली कि अब इसी कथा को मैं भाषाबद्ध करूंगा। संवत् सोलह सौ इकतीस, रामनवमी का दिन, अयोध्या में उसका प्रकाशन हुआ। एक सरोवर की रचना हुई। उसके चार घाट बांधा। ज्ञानघाट पर बैठकर शिव भवानी को कथा कहते हैं। कर्म के घाट पर बैठकर याज्ञवल्क्य भरद्वाजजी को कथा कहते हैं। और भक्ति अथवा उपासना के घाट पर बैठकर भुशुंडिजी गरुडजी को कथा कहते हैं। दीनता, शरणागति, आधीनता इस घाट पर बैठकर तुलसी अपने मन को कथा कहते हैं। एक बार कुंभ मेला लगा तब याज्ञवल्क्य महाराज कल्पवास भरद्वाजजी के आश्रम में रहते हैं। एक महीने का अनुष्ठान पूरा हुआ। सभी महात्माओं ने विदा ली। परम विवेकी याज्ञवल्क्य के पैर पकड़कर भारद्वाजजी ने उन्हें रोका कि महाराज, मेरे मन में ये शंका है कि ये रामतत्त्व क्या है? आप हृदय से विचार करके मुझे राम का रहस्य समझाइए। याज्ञवल्क्य महाराज हंसे। भरद्वाजजी से कहा, आपने मुझसे प्रश्न बहुत अच्छा पूछा है पर आपको रामतत्त्व की पूरी की पूरी जानकारी है। पर मूढ़ व्यक्ति की भांति अज्ञानी बनकर मुझसे इसके लिए प्रश्न पूछ रहे हैं कि आपको राम की मंगलमय कथा मेरे मुख से सुननी है।

इस प्रसंग पर हमेशा मैं कहता हूं कि याज्ञवल्क्य हंसे। धर्मगुरु हंसता हुआ होना चाहिए। कभी हंसे ही नहीं उसकी कंठी नहीं बांधनी चाहिए। वैसे तो कंठी बांधनी ही नहीं चाहिए, पर बांधना पड़े ऐसा ही हो तो हंसता न हो उसे गुरु नहीं बनाना चाहिए। तलगाजरडी भाषा में मुस्कुराहट मुक्ति है। व्यक्ति हंसता हुआ होना चाहिए। कथा सुनने के बाद मुस्कुराहट आनी चाहिए। हंसो, मुस्कुराओ। धर्मगुरु मुस्कुराता हुआ होना चाहिए। अपने यहां धर्म ने हमें इतना गंभीर कर दिया कि हंसना ही नहीं बस! और उसमें तथाकथित धर्मों ने बहुत काम किया है! तुमको गाना नहीं चाहिए; तुमको संगीत नहीं बजाना चाहिए; तुम्हें हंसना नहीं चाहिए। टेंशन और चिंताएं हमे उर्ज़ाहीन बनाती हैं। हमारे तखतदान कह गये हैं-

मोजमां रहेवुं, मोजमां रहेवुं, मोजमां रहेवुं रे,
अगम अगोचर अलखधणीनी खोजमां रहेवुं रे।

रामकथा में जायें तो इस कथा का प्रवेशद्वार है भगवान शिव की कथा। शिवकथा शुरू की याज्ञवल्क्यजी ने। भगवान शंकर सती को लेकर कुंभज ऋषि के यहां कथा श्रवण करने गये। भक्ति का दान कुंभज को देकर वापस आये सती और शिव। रास्ते में त्रेतायुग की कथा चालु ही थी और राम सीता

मंगल तो सबको बहुत ही बाधा ड़ालता हैं! मंगल प्रसंग में मंगल ही बाधा डालता है! माँ-बाप का मंगल प्रसंग पुत्र-पुत्री के विवाह का होता है उसमें मंगल ही उल्टे आकर अड़ जाता है! पर वही मंगल जो विरोध में आता है वो अनुग्रह में बदल जाएगा यदि परमात्मा की कथा का थोड़ा भी आश्रय हम और आप करेंगे; मंगल ग्रह अनुग्रह में बदलेगा। ये सभी ग्रहों और कुंडलियां बतलाकर-बतलाकर जिसने-जिसने लग्न किया है वो नब्बे प्रतिशत कोई सुखी नहीं हैं! गांव के आदमी जो पचास-साठ वर्ष पहले विवाह किए, उन्होंने कोई कुंडलियों नहीं मिलाई थी! ग्रह अनुग्रह में बदलते हैं यदि मंगल भवन की कथा का गान हो; उसका थोड़ा आचरण हो तो ये ग्रहदशा भी बदल सकती है।

वियोग में रो रहे थे। यह दृश्य देखकर सती को वहम हुआ कि यह काहे का भगवान? शिवजी ने बहुत समझाया, पर सती नहीं मानी। राम की परीक्षा करने गई और सती ने सीता का रूप धारण किया। केवल सूत्र के रूप में, ईश्वर परीक्षा का विषय नहीं है। ईश्वर कदाचित् समीक्षा का विषय है। जो भी ब्रह्मनिरूपण कहलाये उसकी समीक्षा हो सकती है। परमात्मा परीक्षा का विषय है ही नहीं। शायद वैचारिक मनुष्य इसकी समीक्षा करते हैं। भक्तिमार्ग कहती है, ब्रह्म की परीक्षा नहीं कर सकते, ब्रह्म की प्रतीक्षा की जानी चाहिए; उसकी राह देखते हैं। सती परीक्षा करने सीता का रूप लेकर जाती हैं। रामजी पहचान गये। प्रभु ने ऐश्वर्य दिखाया। आखिर में सती शिव के पास आकर झूठ बोली, मैंने कोई परीक्षा नहीं की। शिवजी ने ध्यान में देखा तो दिखा कि सती सीता बनकर गई थी। भगवान शंकर ने परमात्मा का स्मरण किया कि सीता तो मेरी माँ हैं। मेरी पत्नी सती सीता का रूप ले तो मुझे उसके साथ गृहस्थ संबंध कैसे रखना चाहिए? अंदर से संकल्प हुआ कि जब तक सती का ये शरीर होगा तब तक मेरा और उसका संबंध नहीं।

कैलास पहुंचे। सहज स्वरूप का अनुसंधान करते हुए शिव को समाधि लगी। सत्तासी हजार वर्ष व्यतीत हो गए। इतने वर्षों के बाद महादेवजी जगे। राम का स्मरण हआ। सती को हुआ, जगपति जगे हैं, पग लागी। शिवजी ने सन्मुख आसन दिया। रसाल कथाएं कहीं। उसी समय सती के पिता दक्ष प्रजापति पद पाने का यज्ञ करते हैं। विमान लेकर देवता जा रहे थे। सती ने पूछा कि ये देवता कहां जा रहे हैं? कहते हैं, तुम्हारे पिता के घर प्रसंग है। हमें आमंत्रण नहीं है। सती ने जिद्द की। सती नहीं मानी। दक्षयज्ञ में शिव का अपमान जब सती ने देखा तो दक्ष के यज्ञ में सती जल कर भस्म हो गई। जलते समय उन्हों ईश्वर से मांगा, दूसरा जनम मुझे स्त्री का ही मिले और मुझको जन्म-जन्म महादेव ही पति के रूप में प्राप्त हो। इसके अनुसार दूसरा जनम हिमालय के घर, पर्वत के घर पार्वती रूप में हुआ। पुत्री का जन्म हुआ। हिमाचल ने खूब उत्सव मनाया। एक दिन नारद आये। पुत्री का नामकरण कराया नारद से। हिमालय और उसकी धर्मपत्नी मैना ने कहा, महाराज, हस्तरेखा देखकर बताइए, ऐसी सुन्दर कन्या को कैसा पुरुष मिलेगा? नारद ने कहा, इसे ऐसा पति मिलेगा जो अगुण होगा, अमान होगा। उसके कोई माता-पिता ही नहीं होंगे, उदासीन स्वभाव होगा, अमंगल वेश धारण करता होगा। ऐसा पति मिलेगा। माँ-बाप रो पड़े। पर पार्वती प्रसन्न हुई। उसको ऐसा लगा कि जो दो दोष बताये हैं वो तो भगवान महादेव ही धारण करते हैं। पार्वती ने बहुत कठिन तपश्चर्या की। तप पूरा हुआ। आकाशवाणी हुई, हे हिमालय पुत्री, तुम्हारी साधना पूरी होती है। तुम्हें शिव मिलेंगे।

इधर सती के वियोग में भगवान शंकर घूमते रहे, समाधि में बैठे। परमात्मा प्रगट हुए। शिवजी को कहा, महाराज, आप पार्वती को स्वीकार कीजिए, आप लग्न कीजिए। भगवान ने कहा तब शिव ने आज्ञा शिरोधार्य किया। उस समय ताड़कासुर नाम का राक्षस हुआ। देवता दुःखी हुए। एक ही उपाय है, शंकर विवाह करे और उसके घर जो पुत्र जन्म हो तो वो शंकर का पुत्र ताड़कासुर को मारे तो अपना भोग सलामत रहेगा। कामदेव ने समाधि भंग की। महादेव ने मन में क्षोभ उत्पन्न हुआ। तीसरे नेत्र से अग्निज्वाला निकली और कामदेव जलकर भस्म हो गया। स्वार्थी देवताओं का मंडल आया। भगवान की प्रशंसा करने लगा। महादेव देवताओं से कहे, प्रशंसा बंध कीजिए। आप देव हैं, मैं महादेव हूं! पितामह ब्रह्मा तो बुद्धि के देवता; उन्होंने कहा, महाराज, ये देवता पीछे लगे हैं; किसी का लग्न नहीं हो रहा, किसी की बारात में जाने का अवसर नहीं हो रहा। तो शंकर की प्रार्थना करते हैं कि आप विवाह कीजिए। शिवजी समझ गये, आप कहे और मैं सीधे घोड़े पर सवार हो जाऊं ऐसा मैं देव नहीं, पर मुझको मेरे हरि ने आज्ञा की है इसलिए मैं विवाह करूंगा।

वरराजा तैयार हुए। सभी जगहों से भूत-प्रेत आये। हिमाचल प्रदेश की स्वागत समिति वरराजा का स्वागत करने के लिए फूल मालाएं ले आयी। जो सन्मान करने आये वो सभी डर गये। मूर्छित हो गए। पार्वती की माता परछने आईं। शिव का ये रुद्र रूप देखकर आरती हाथ से छूट गई! बेहोश हो गई, गिर पड़ी। महिलाएं मैना को निज मंदिर में ले गई। नारद ने आकर सभी रहस्यों का उद्घाटन किया, देवी, ये पुत्री आपका भाग्य है, बाकी तो ये पूरे जगत की माँ है, पार्वती हैं। और वो परमात्मा हैं। सबको पार्वती के प्रति ऐसा भाव जगा। भगवान शिव के प्रति भी आदर जगा। भगवान शिव और पार्वती का लग्न वेदरीति और लोकरीति के अनुसार संपन्न हुआ। हिमालय और मैना ने अपनी पुत्री को विदा किया है। भगवान शिव कैलास पहुंचे। शिव और पार्वती का नूतन विवाह चल रहा है। थोड़ा समय बीता और पार्वती ने पुत्र को जन्म दिया। और कार्तिक नाम दिया। तुलसीदासजी ने उसे आध्यात्मिक जगत में पुरुषार्थ कहा। इस कार्तिक ने ताड़कासुर को मारा। देवताओं को सुख दिया। अब एक दिन भगवान शिव कैलास में वटवृक्ष के नीचे सहज आसन में बैठे हैं। सुंदर अवसर देखकर पार्वती पति के पास आती हैं। भगवान से पूछती है, महाराज, मुझे रामकथा कहकर रामतत्त्व

कथा किसी को बांधती नहीं, कथा तो फ़र्ज़ का भान कराती है

बहुत से प्रश्न हैं, इसे पहले लूं। पहले प्रसन्नता व्यक्त करता हूं कि यहां से घोषित किया गया कि पूजनीय मेहता काका के स्मरण में जो राशि एकत्रित हो रही है। एक करोड़ के उपरांत पांच-सात लाख रूपये की राशि पहुंची है, ऐसा जो कहा गया है और अभी भी प्रवाह चालू है। अपनी प्रसन्नता व्यक्त करता हूं।

एक जिज्ञासा है कि 'फाफड़ावाला यजमान है और भोजन में अभी तक फाफड़ा और जलेबी नहीं आयी!' मेरी एक प्रार्थना है आप सभी भाई-बहनों से, व्यासपीठ भी आप से विनय करती है कि सभी लोग प्रसाद लें। व्यवस्था को सभी साथ देना और सभी प्रसाद लेना, ऐसी मेरी इच्छा तो है ही, परेश भी कहता था कि बापू, आप सभी से कहो कि प्रसाद लें। प्रसाद का बड़ा महत्त्व है बाप! गिनती करनेवाले लोग ऐसा कहते हैं कि ये खिलाने का खर्च व्यर्थ हैं। पर रसोईघर बंद करके जो खाता है उसको ये पता चलता ही नहीं है! प्रेम से प्रसाद लीजिएगा। मुझको आप से गांठिया का इतिहास कहना है। पहले ऐसे गांठिया थे ही नहीं, मात्र पतले से बारिक गांठिया ही थे, जो लड्डू के साथ खाये जाते थे। सेव थी, क्योंकि वो गांठिया की बहन है। गांठिया की धर्मपत्नी जलेबी; गांठिया अकेले नहीं खाया जाता, जलेबी के साथ खाना चाहिए; पति-पत्नी का अखंड दांपत्य है। गांठिया सीधा होता है, जलेबी बहुत टेढ़ी होती है! भले मीठी बहुत हो। तले हुए मिर्चे उसके बालक हैं, चटनी मेहमान के रूप में आती है; कभी आती है, कभी नहीं आती। कभी हरी साड़ी पहनके आती है, कभी पीली साड़ी पहनके आती है। पपिते का संभार तो मांगनहार है। मूल गांठिया का वंश तो लड्डू के साथ खाया जाता है वो है। उसके बाद गांठिया वारे हुए आये। फिर छोटी फाफड़ी बनती है ऐसा गांठिया आया। फिर डिझाइनवाले गांठिया आये, उसके चारों और रेखाएं होती हैं। फिर फाफड़ा आये। वही फाफड़ावाला यह कथा करा रहा है। दानाभाई मुझे कहते हैं, सुविधा होगी तब मुझ को सोना का फाफड़ा गांठिया बनाना है, उसमें काले रंग का हीरा डालना है जैसे काली मिर्च का चूर्ण पड़ता है उसी तरह और फिर सुन्दर डीश में मढ़ाकर लिखना है कि अपने कुल का कुलदेवता ये गांठिया है। भगवान इन का मनोरथ पूर्ण करे। उस गांठिया का उद्घाटन मैं करूंगा। परन्तु वो खाया नहीं जायेगा। इस समाज का इतिहास जब कभी लिखा जायेगा तब इस कथा को टांका जायेगा। इन्हों ने कहा, सौ बीघा हमारी जमीन है उसमें सत्तर-अस्सी बीघा जमीन में जो चारा होता है वो सब गौशाला को ही दे देता हूं। ये बहुत बड़ी बात है। किसी को ऐसी इच्छा हो तो कहना।

एक चिठ्ठी है, 'बापू, आप के संदेशानुसार आदमी को कुछ बदलने की जरूरत नहीं है, आदमी का स्वभाव बदलना चाहिए। पर हमारी कमनसीबी ये है कि कथा में मुखौटा पहन कर बैठे हैं! कथा पूरी होने के बाद ऐसा होता है कि स्वभाव बदलेंगे परन्तु हो नहीं पाता। क्या करें?' स्वभाव बदलना मुश्किल है। बहुत बार मूल स्वभाव तो बदलता ही नहीं पर अमुक कुसंग के कारण आया हुआ स्वभाव बदल सकते हैं। गुजराती में कहा जाता है, प्राण और प्रकृति साथ में ही जाती हैं। कालीयनाग को कृष्ण ने नाथा और कहा कि जमुना के जल को तू विषाक्त करता है; तुझे शरमाना चाहिए। प्राणी मर जाते हैं। पक्षी पानी में गिरते हैं तो मर जाते हैं। शिव के गहना हो; सर्प होकर ऐसा करते हैं? तब कालीयनाग कहता है, 'वयं खलाः।' हम सब दुर्जन हैं। हम सब बदला लेनेवाले आदमी हैं। ये हमारी प्रकृति है। उसे बदलने का आप कोई उपाय बताइयें। अर्थात् मूल प्रकृति को बदलना मुश्किल हैं, उसको फेरो। आप को बहुत ही गुस्सा आता हो ये आप की प्रकृति है। तो गुस्सा खूब कीजिए, परन्तु अपने दोष पर कीजिए। क्रोध सार्थक हो जायेगा।

कुसंग के कारण आये हुए आवरण को बदल सकते हैं, उसका एक साधन है सत्संग। जिसने पूछा है उसको इतना ही कहूंगा कि सत्संग कीजिए। सत्संग अर्थात् मोरारिबापू की कथा सुनो ऐसा ही नहीं, अच्छे ग्रंथ पढ़िए। आज पहली तारीख को गुजरात सत्तावन वर्ष पूरा कर रहा है, आज 'गुजरात दिवस' है। और इस दिवस का भाषाकीय महत्त्व है। भाषा संबंधित कार्यक्रम भी होते हैं। अपनी भाषा के श्रेष्ठ ग्रंथ, कविताएं पढ़ें। अच्छे व्यक्ति का संग करे। ये सभी सत्संग है। मुझको और आप को समझ में आये तो प्रत्येक वस्तु में सत्संग है। कथा, सद्वार्ता ये सभी मूलतः सत्संग हैं। पर अच्छा संगीत, अच्छी चर्चा, अच्छी सोहबत ये सभी सत्संग है। ऐसे सत्संग से स्वभाव बदलता है।

आगे का प्रश्न है, 'मानस' में कितनी सारी आकाशवाणी हुई है; उससे भय भी उत्पन्न हुआ है और आशीर्वाद भी मिला है। तो आकाशवाणी क्या है?' आकाशवाणी में आकाश में से आवाज़ आती है ये तो होता ही होगा, पर आकाशवाणी के अर्थ के लिए वेदांत ऐसा कहता है कि अपने पास अंदर एक आकाश है जिसको घटाकाश कहते हैं। घट अर्थात् हृदय। कभी हमें अंदर से कोई कहता होता है वो आकाशवाणी है। और ये आकाशवाणी के अनुसार हमारे हृदय में से आनेवाली आवाज़ हमारे हित में ही होती है। कागभुशुंडि को आकाशवाणी हुई; शाप मिला और अंततोगत्वा कागभुशुंडि का कितना परमहित हुआ है! यानी हृदय की जो वाणी है वो मेरी दृष्टि से अच्छी ही होती हैं।

अगला प्रश्न, 'बापू, 'सब रामचंद्र भगवान की जय' बोलते हैं और आप 'रामचंद्र भगवान प्रिय हो', ऐसा बोलते हैं।' 'रामचरितमानस' के आधार पर मैं बोलता हूं। किसी का जय जयकार बहुत सरल है। पर सब को प्रेम करना कठिन है। इसीलिए राम की जय हो, ये हम बोलें तो ही होगा ऐसा नहीं है। राम सत्य है। और सत्य जयस्वरूप है। तुलसी ने 'मानस' के समापन में कहा, 'प्रिय लागहु मोहि राम।' मुझे राम प्रिय लगते हैं, इस शब्द को पकड़ कर तलगाजरडी व्यासपीठ 'रामचंद्र प्रिय हो' बोलती है। परमात्मा दुलारा लगता है। सब को यह स्वीकार करने की जरूरत नहीं। मेरे निर्णय मेरे हैं। मैं 'प्रिय हो' बोलता हूं; आप को न रुचे तो अंदर से 'जय' बोलना।

एक प्रश्न है, 'बापू, शरणागति स्वतंत्रता की बाधक नहीं है?' नहीं, शरणागति कभी भी स्वतंत्रता की बाधक नहीं है। शरणागति जैसी स्वतंत्रता अन्य किसी को भी नहीं मिलती। एक बालक अपनी माता के शरण में है, उस बालक को इतनी स्वतंत्रता है कि अपनी माँ की गोद में मलमूत्र का त्याग भी कर सकता है। पूर्ण स्वतंत्रता के कारण बालक माता का दूध पीते समय दांत भी काट सकता है। वो माता को मारने भी लगता है। जो व्यक्ति ऐसा कहता है कि शरणागति ये स्वतंत्रता की बाधक है, उसको शरणागति का सही अर्थ पता ही नहीं! बुद्धपुरुष की शरणागति करें तो पता चले कि वो आप को कितनी स्वतंत्रता दे देता है। शरणागति का एक आदर्श आप के समक्ष है मोरारिबापू। मैं पूर्ण शरणागत आदमी हूं किसी के चरणों में, इससे मुझको पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त हुई है।

गुरु छः प्रकार के होते हैं। 'रामचरितमानस' में छः प्रकार के गुरु हैं। एक गुरु, दूसरा श्रीगुरु, तीसरा कुलगुरु, चौथा सद्गुरु, पांचवां जगद्गुरु और छठ्ठा त्रिभुवन गुरु। गुरु; 'मैं पुनि निज गुरु सन सुनी कथा सो सूकरखेत।' तुलसी के गुरु है नरहरि महाराज। गुरु का काम है बोध देना। बोध वही दे सकता है, जिसको बोध प्राप्त हुआ है। कोई गुरु ऐसा कहे कि मुझको ही पग लागना, ओर कहीं मत जाना, तो समझना चाहिए कि वो गुरु नहीं है। पर आप को निर्णय करना चाहिए कि मेरी शरणागति यहां है, इसलिए मुझको अन्यत्र नहीं भटकना है। वो आप को स्वतंत्रता प्रदान करता है। एक सूत्र मैं दो-तीन कथा से कह रहा हूं, कोई भी गुरु, धर्मगुरु, साधु-संत उसकी किसी दिन उपेक्षा मत करना। परन्तु अपेक्षा अपने गुरु के सिवाय किसी से न रखना। शरणागति सीखना हो तो इस स्तर पर पहुंचना चाहिए। 'भटकना' शब्द के साथ शरणागति शब्द जोड़ना ये अपराध

लग रहा है। उसे किसी विशेषण की जरूरत नहीं है।

श्री गुरु चरन सरोज रज निज मन मुकर सुधारि।
बरनउ रघुबर बिमल जस जो दायक फल चारि।।

मूल में 'श्री' शक्तिवाचक शब्द है। श्रीगुरु यानी कोई पुरुष नहीं। श्रीगुरु अर्थात् माँ जानकी, पार्वती, अंबा, आदिशक्ति, नारायणी, आह्लादिनी शक्ति श्री राधेजी। 'श्रीगुरु' आप बोलते हैं तब उसके केन्द्र में मातृशरीर है। गुरु बोध देता है। श्रीगुरु बुद्धि को शुद्ध करता है। जो लोग ऐसा कहते हैं कि स्त्री 'गुरु' नहीं बन सकती, अनुष्ठान नहीं कर सकती, हवन नहीं कर सकती। ये सभी सूत्र इक्कीसवीं सदी में बदलने पड़ेगें। इसके लिए हिम्मत चाहिए। मेरी दृष्टि से मातृशक्ति वो श्रीगुरु है। हम सब की माँ वो अपनी श्रीगुरु है। वो हमारी बुद्धि को शुद्ध करती है। कथाजगत में यह बहुत महत्त्व की बात है। जिसको साधना करनी हो उसको दो काम करना चाहिए; आगे पोथी रखनी और पीछे हनुमान रखना। जिसको ग्रंथनिष्ठा नहीं होगी तो कथा में गहेर उतरेगा। जिसको हनुमान जैसे सद्गुरु का धक्का नहीं होता वो किसी दिन आगे नहीं बढ़ सकता। अपना इष्ट ग्रंथ होना चाहिए। जैसे किसी का इष्ट ग्रंथ 'भगवद्गीता'; किसी का 'भागवत' ग्रंथ। शरणागति एक ही होती है। आप के आशीर्वाद से मुझको अन्य ग्रंथ की कथा करनी हो तो कर भी सकता हूं। पर मेरा इष्ट ग्रंथ 'रामायण' है। मैंने इसे पेटन्ट नहीं किया पर इसने मुझको पेटन्ट किया हैं।

वर्षों पहले की बात मुझको याद आयी। मैं सबको कहता हूं न कि दसवां भाग निकालिए। मैं शुरूआत की कथा करता, चार्ज तो मैंने किसी को ज़िन्दगी में कहा नहीं। जो दक्षिणा नौवें दिन मिलती उसे ले लेता। सौ रूपये दक्षिणा मिलती। उसमें सात-आठ रूपया तबलावाले को देना पड़ता; सात-आठ रूपया हारमोनियमवाले को देना पड़ता; दो-तीन रूपया मंजीरेवाले को। महुवा नगरपालिका की शिक्षण समिति मेरा नौ दिन का वेतन काट लेती! अर्थात् पचीस रूपये वो ले जाती! जिस गांव से आते वहां घोड़ागाड़ी से आना पड़ता, उसका सात-आठ रूपया लगता। ऐसे करते-करते लगभग तीस रूपयें की रकम मेरे पास बचती। उसमें भी किसी ब्राह्मण को देता। बाजरे की बोरी बैलगाड़ी में पड़ी होती। गेहूं मिला होता उसमें कोई अतिथि रास्ते में आता तो मैं भीखाराम काका को कहता, बैलगाड़ी रोको, इसे थोड़ा दे दो। सब घर नहीं ले जाना चाहिए। ये तीस रूपये माँ को देता तब ऐसा कहती, अपने गांव के चौकीदार आत्माराम है, उसके लड़के के पास खीचड़ी नहीं है; उसे तीन रूपये देते आओ। फिर सत्तावीस रखने का अधिकार है। ये दसवां भाग तभी से शुरू हुआ है।

आप सभी दसवां भाग निकालिए। अपने राष्ट्रपति की इज्जत हम सभी को करना चाहिए। पर महामहिम राष्ट्रपति, अपने देश के प्रथम नागरिक से भी मैंने प्रार्थना की, प्रधानमंत्री, लेखपाल, चपराशी तक देश के सभी आदमी अपनी आय का दसवां भाग निकालें तो यह देश कहां से कहां पहुंच जाये! ये किया जा सकता है। और मैं कह सकता हूं क्योंकि मैंने तीस में से तीन रूपये निकाला है। वो मेरी माँ मेरी श्रीगुरु है। अथवा जिसने आप को प्रेम किया, जिसने आप को वात्सल्य से भर दिया, जो बुद्धि शुद्ध करता है वो श्रीगुरु है। बाप को गुरु के रूप में बहुत नहीं स्वीकार हुआ; वो 'पितृदेवो भव' है। देव है, पर माँ तो माँ ही है। बुद्धपुरुष को पेट में रख सकती है, ऐसी माँ की महिमा कैसे करें?

कुलगुरु; 'कुलगुरु सम हित माय न बापु।' कुलगुरु के समान हमारा हित माँ-बाप भी नहीं कर सकते। वो अपना उपरोहित जो हमें आचार सिखाता है। जैसे 'रामायण' में जनक के कुलगुरु शतानंद; देवताओं के कुलगुरु बृहस्पति, दानवों के कुलगुरु शुक्राचार्य। अपने घर रांदल का लोटा ला सके वो अपना कुलगुरु। कर्मकांड़ करायें, लग्न करायें वो तमाम अपने कुलगुरु हैं। शंकराचार्य कहते हैं, यदुपति कृष्ण मेरे कुलगुरु है। मृत्यु तक के संस्कार कुलगुरु के हाथ में होता है। कबीर साहब ने सिखाया है कि कर्मयोगी बनो, कर्मकांड़ी मत बनो। पर ये संस्कार जरूरी है। उसके बाद जगद्गुरु;

जगद्गुरुं च शाश्वतं। तुरीयमेव केवलं।।
नमामि भक्त वत्सलं। कृपालु शील कोमलं।।

जगद्गुरु शास्त्र देता हैं, भाष्य देता है। आज भी परंपरानुसार जिसे 'जगद्गुरु' का बिरूद मिलता है उसे 'भगवद्गीता', 'ब्रह्मसूत्र', 'उपनिषद' इस प्रस्थानत्रयी पर भाष्य लिखने पड़ते हैं। देशकाल बदला है यह बात अलग है। ये शाश्वत पद है। पर जगद्गुरु बहुत से होते हैं। जैसे कि जगद्गुरु रामानुज, जगद्गुरु निम्बार्क, शंकराचार्य, वल्लभाचार्य। बहुत से लोग कहीं भी जगद्गुरु जमा देते हैं, उन्हें कैसे हम ना पाड़े? एक जगद्गुरु ऐसा है, जिसको हम सभी पुकारते हैं, 'वसुदेवसुतं।'

सद्गुरु; मेरी दृष्टि से भरत, कागभुशुंडि, हनुमानजी, तुलसीदास 'रामचरितमानस' में ये सभी सद्गुरु है। 'सद्गुरु' शब्द बोलते ही पवित्र हो जाते हैं। उनका कहा हुआ करते हैं तो पीढ़ियां सुधर जाती है, पितृ प्रसन्न होते हैं। सद्गुरु सत्य देता है। 'सद्' का अर्थ होता है सत्य; वो शास्त्र कदाचित् न भी दे, पर शास्त्र का सार 'सत्यं परं धीमहि' देता है वो नारद का भक्तिसूत्र, प्रेमसूत्र न समझा सके, पर

परमप्रेम समझाता है; करुणा से भर देता है।

त्रिभुवनगुरु; जो समस्त जगत में मात्र एक ही होता है।
तुम्ह त्रिभुवन गुरु बेद बखाना।
आन जीव पाँवर का जाना।

ऐसे गुरु की शरण करें तो पूर्ण स्वतंत्रता मिलती है। सूरदास की आंखें नहीं देख सकती थी, पर अंदर तो उजाले का पार नहीं था! वो आदमी ऐसा कहता हैं वल्लभप्रभु को कि 'भरोसो दृढ़ इन-चरनन केरो'; कृष्ण तो सर्व समर्थ हैं। समस्त जगत उनकी शरण में ही है। फिर भी शिशुपाल को सौ गाली की छूट देते हैं। गंगासती शरणागत पानबाई को कहती हैं, 'मान रे मूकीने पानबाई आवो रे मेदान मां।' 'गोपीगीत' तो मुझको गाना था। मेरा विषय नहीं है 'गोपीगीत।' ये तो साथ के लड़के हैं, वर्षों पहले 'गीताजयंती' में भीष्मस्तुति और 'गीता' के श्लोक गाते थे और आंखों में आंसू आ गये कि कैसा 'गोपीगीत' है! इस पर मैं क्यों गान न करूं? इसलिए मैंने 'गोपीगीत' किया। बाकी 'भागवत' कथा मैं सुनता हूं; भागवत की कथाएं करवाता हूं, पर मेरा इष्ट ग्रंथ 'मानस' है।

आगे का प्रश्न, 'बापू, कथा में अक्सर गुरु की चर्चा बहुत होती है; हम को यह वस्तु बहुत पसंद है। तो गुरुपद अर्थात् क्या?' गुरुपद अर्थात् चार-पांच वस्तु मुझे कहनी चाहिए। गुरुपद यानी गुरु हाजिर हो, जीवित हो उनका चरण वो गुरुपद है। व्यक्तिपूजा या बावलापन, पागलपन नहीं आना चाहिए। दूसरा, यदि गुरु जीवित न हो तो उनकी पादुका वो गुरुपद है। राम वन में थे। श्री भरतजी पादुका अयोध्या के सिंघासन पर बैठाकर उसके द्वारा राज्य का संचालन करते है। तीसरा, गुरु के जन्मस्थान को भी गुरुपद गिना जाता है। चौथा, गुरु के मुख से निकला वाक्य, सूत्र, मंत्र, पंक्ति वो गुरुपद है। पांचवां, गुरु ने जिस स्थान में विशिष्ट साधना की हो वो भी गुरुपद है। जैसे कि कबीरवड़; शांतिनिकेतन का वटवृक्ष वो टैगौर के लिए गुरुपद है; सनातनधर्म वैदिक परंपरा का गुरुपद है। अक्षयवट जिस के नीचे बैठकर हजारों कुंभमेला हुए वो गुरुपद है। कोई पहुंचा हुआ बुद्धपुरुष उसे मौज आ जायें और 'आप के घर एक महिना रुकना है' ऐसा कहे और आप के ओसारी में भजन करे वो गुरुपद हो जाता है। स्थूल में से सूक्ष्म तरफ की गति की भांति हमें गुरुपद की बात देखनी चाहिए।

महुवा में अठ्ठारह-अठ्ठारह कथाएं! महुवा बिगड़ा नहीं। महुवा की जनता, अगुवा, दाता, हितचिंतक, छोटे से छोटा आदमी, कौमी एकता ये सभी महुवा की अस्मिता हैं, इसलिए हम सब बिगड़े नहीं। इमाम हुसेन की शोभायात्रा निकलती है उसमें हिंदु-मुस्लिम होते हैं। ये अपनी रामसभा है। नरसिंह मेहता ने गाया-

रामसभामां अमे रमवाने ग्या'ता,
पसली भरीने रस पीधो रे।

रामसभा अर्थात् सत्य, प्रेम, करुणा की सभा।

'मानस-कथा', जो सकल लोक हितकारी है और सकल लोगों को पवित्र भी करनेवाली है। कथा तत्त्व क्या है इसकी चर्चा गोस्वामीजी ने 'बालकांड' में खूब ही व्यवस्थित की है। तुलसी कहते हैं, ये कथा मैंने अपने गुरु से सुनी तब मेरे मन में यह कथातत्त्व समझ में नहीं आया, मेरी नादान अवस्था थी, बालपन था। श्रोता और वक्ता दोनों ज्ञाननिधि हैं, श्रोता महान है यह बिलकुल सच बात है, इसमें कोई शंका नहीं है। शायद कोई निजानंद में कथा कहता हो तो अपने मन को समझायेगा। पर मन को अपने आप को श्रोता बनाना पड़ेगा। कोई होना चाहिए। इसीलिए श्रोता ज्ञाननिधि है।

आज एक प्रश्न है कि 'श्रोता कैसा होना चाहिए?' एक, कथा सुनने आओ तब फ्रेश होकर आना चाहिए, प्रमादी बनकर नहीं आना चाहिए। 'भागवत' की कथा के नियम हैं कि सुननेवाले को उपवास करना चाहिए; एक आसन पर बैठना चाहिए। तलगाजरडा के नियम अपने हैं। रात को आप को जल्दी सो जाना चाहिए और बहुत जल्दी उठना नहीं चाहिए, कथा में फ्रेश रहो इसलिए। कथा में रस-रुचि नहीं होगी तो आप फ्रेश होगे तो भी प्रमाद आयेगा। कथा आधे घण्टे सुनें, पर प्रेम से सुनें। दूसरा, प्रसन्न चित्त से कथा सुनने आयें। तीसरा, कथा सुनें उसमें कीर्तन आये तब गहरी सांस लें। ये योग का प्रकार है। मेरा योगा, ध्यान, कसरत सब मेरी व्यासपीठ पर पूरा हो जाता है। नव दिवस नहीं सुना जा सकता हो तो कुछ नहीं, सभी का अपना उत्तरदायित्व होता है। कथा किसी को बांधती नहीं, कथा तो फ़र्ज का भान कराती है। कथा सुनोगे तो फ़र्ज अच्छी तरह निभा सकोगे। चौथा, कथा में बैठे तब रिलेक्स होकर बैठे। पैर फैलाकर- बटोकर बैठे, जमीन पर बैठे, सोफा में बैठे। सब छूट दी है। पांचवां, उपवास रखिए। उपवास अर्थात् आंखों का उपवास रखिए; केवल व्यासपीठ पर ही नज़र रखिए। अपने कान का उपवास रखें कि नव दिवस तक दूसरी कोई बात मुझको सुननी नहीं। जीभ का उपवास रखिए कि मैं किसी की निंदा नहीं करूंगा।

तो श्रोताओं का स्थान पहला है। तुलसीदासजी ने वक्ता की फ़र्ज बहुत-सी बताई है। तीन प्रकार से कथा होती है ऐसा तुलसी ने कहा। एक तो श्रीगुरु की कृपा से बुद्धि को विशुद्ध करता है। दूसरा जिसमें विवेक बल होता है। वाणीबल कम हो तो चलेगा, विवेकबल जरूरी है। तीसरा बल, मुझको मेरा हरि बुलायेगा वैसै बोलूंगा। ये तीन लक्षण हैं। तो कथा का निरूपण करते हुए तुलसीदासजी कहते हैं-

भाषाबद्ध करबि मैं सोई।
मोरें मन प्रबोध जेहिं होई।।

कथा की महिमा और कथा का निरूपण दिया है, वो चरितार्थ हो चुका है।

जस कछु बुधि बिबेक बल मेरें।
तस कहिहउँ हियँ हरि के प्रेरें।।
निज संदेह मोह भ्रम हरनी।
करउँ कथा भव सरिता तरनी।।

श्रोता और वक्ता के लिए कथा तीन काम करती है। अपना संदेह नष्ट करती है, अपना भ्रम नष्ट करती है, मोह नष्ट करती है। संदेह हंमेशा मन को होता है। मोह अर्थात् अज्ञान, मूढ़ता। मोह का जन्म होता है आदमी के अहंकार में से। भ्रम होता है बुद्धि में। ये कथा वक्ता और श्रोता के संदेह, बुद्धि की भ्रमणा और अहंकार की अज्ञानता इन तीनों का नाश करती है। आगे निरूपण में कहते हैं, ये कथा संसाररूपी नदी की नौका है। मनोवैज्ञानिक चित्र है यह कि नदियों का नाश नहीं करना चाहिए। अपने यहां देशकाल के कारण पानी का बिगाड़ हुआ, नदियों के मूल सूख गये क्योंकि वृक्ष अपने यहां कम हो गये। समय आया है इसलिए राष्ट्रीय प्रश्नों को भी आप के समक्ष रखता चलूं कि पानी की सुरक्षा बहुत ही जरूरी है। पानी का व्यर्थ खर्च नहीं हो। नदी सूखनी नहीं चाहिए। नदियों का नाश नहीं होना चाहिए। तुलसी कहते हैं, संसार एक नदी है। तुलसी के मत से संसाररूपी नदी का भी नाश नहीं होना चाहिए। यह सुन्दर संसार है। जीने जैसा संसार है। इस संसाररूपी नदी में छोटी नाव लेकर तैरे, नौका विहार करे। तुलसी कहते हैं, संसार रूपी नदी में कथा भवसरिता पार कराती है। समाज इसी तरह प्रवाहित रहना चाहिए। आगे तुलसी कहते हैं-

बुध बिश्राम सकल जन रंजनि।
रामकथा कलि कलुष बिभंजनि।।

भगवान की कथा विद्वानों को विश्राम देती है। बौद्धिक लोग चिंतन करके, प्रवचन करके थक जाये फिर यदि 'रामचरितमानस' में धीरे-धीरे आयेगें तो उनका विश्राम गृह बनेगा 'मानस।' तमाम लोगों का मनोरंजन करनेवाली ये कथा है। युगों से कथा चलती है। हम कथा गाते हैं, सुनते हैं और हमारा मन प्रसन्न होता है। भगवान की कथा कलियुग के कचरे का नाश करती है। जब-जब हमें अचानक प्रसन्नता महसूस हो तब समझना भीतरी कचरा कम हुआ। भगवान की कथा सुनते-सुनते जब आनंद का अनुभव हो तब समझना कलियुग का कचरा कम हुआ। तुलसी कहे-

रामकथा कलि पंनग भरनी।
पुनि बिबेक पावक कहुँ अरनी।।

पन्नग यानी सर्प और भरनी यानी मोरनी। कलियुग सर्पिणी है और रामकथा मोरनी है, जो पापरूपी सर्पिणी को खा जाती है। विवेक को प्रगट करने के लिये रामकथा अरणीमंथन है। विवेक यानी ज्ञान; उसे अग्नि कहा है। अरणीमंथन जैसे अग्नि प्रगट करे वैसे रामकथा का निरूपण मानवी के मन में ज्ञान और अग्नि का विवेक प्रगट करे। उसका फायदा 'गीता' में बताया है; ऐसे मेरे और आपके कर्म जल जाते हैं।

रामकथा कलि कामद गाई।
सुजन सजीवनि मूरि सुहाई।।

गोस्वामीजी कहते हैं, रामकथा कलियुग में कामदुर्गा गाय है। अमृत के बारे में, कल्पवृक्ष के बारे में, कामदुर्गा गाय के बारे में पढ़ा है, सुना है, कथन किया है लेकिन उसे देखा नहीं। किंतु रामकथा ये कलियुग की कामना पूर्ण करनेवाली गाय है। अपने अनुभवों से कहता हूं कि यह कामदुर्गा गाय है। आपने मनोरथ का विचार भी न किया हो और पूरा कर दे! कई बार देश-काल अनुसार सज्जनों ढ़ीले हो जाए तब जो कथा का आश्रय करे तो उसे संजीवनी प्राप्त होगी और वे सचेत होकर समाज के कार्य करने के लिये सक्षम हो जायेंगे। आगे कहते हैं-

सोइ बसुधातल सुधा तरंगिनि।
भय भंजनि भ्रम भेक भुअंगिनि।।

भगवान की कथा धरती पर अमृत की धारा है। परमात्मा की कथा संसार के भय से मुक्ति दिलाती है और भ्रमरूपी मेडक को खा जाती सर्पिणी है।

असुर सेन सम नरक निकंदिनि।
साधु बिबुध कुल हित गिरिनंदिनि।।

विनोबाजी ने कहा है कि बुरे स्वप्न नर्क है, और अच्छे स्वप्न स्वर्ग है। तुलसी कहते हैं, आसुरी वृत्तिवाले लोगों के संगठन यही नर्क है। यह नर्क का निकंदन करनेवाली ये रामकथा पराम्बा दुर्गा है। जैसे असुर सेना को चंडी ने खत्म कर दिया वैसे रामकथा दुर्गा है। और साधुओं के कुल का कल्याण करने के लिये गिरिनंदिनी, हिमालय की पुत्री पार्वती समान यह रामकथा है।

संत समाज पयोधि रमा सी।
बिस्व भार भर अचल छमा सी।।

साधु का समाज सागर है; ये भी दूध का सागर है। जैसे क्षीरसिंधु में से लक्ष्मी निकली वैसे साधुरूपी सिंधु में से

रामकथारूपी लक्ष्मी निकलती है। सागर को अपनी पुत्री जितनी प्रिय हो इतनी यह साधुओं को कथा प्रिय होती है। पूरे विश्व का भार वहन करने के लिये क्षमा यानी पृथ्वी है रामकथा।

जम गन मुहँ मसि जग जमुना सी।
जीवन मुकुति हेतु जनु कासी।।

यमराज के गणों के मुंह पर मेश लगा देती यमुना जैसी यह कथा है। जीवनमुक्ति के लिये तो काशी है यह रामकथा।

रामहि प्रिय पावनि तुलसी सी।
तुलसिदास हित हियँ हुलसी सी।।

भगवान राम को रामकथा इतनी प्रिय है, जितना भगवान को तुलसी हो। और तुलसीदासजी को रामकथा अपनी माँ हुलसी जितनी प्रिय है।

सिवप्रिय मेकल सैल सुता सी।
सकल सिद्धि सुख संपति रासी।।

भगवान शिव को यह कथा नदी जितनी प्रिय है और सिद्ध तथा सुख की तो ये दाता है।

सदगुन सुरगुन अंब अदिति सी।
रघुबर भगति प्रेम परमिति सी।।

सद्गुणरूपी देवताओं को जन्म देनेवाली यह कथा देवमाता अदिति जैसी है। भगवान की भक्ति और प्रेम की हद है रामकथा।

रामकथा मंदाकिनी चित्रकूट चित चारु।
तुलसी सुभग सनेह बन सिय रघुबीर बिहारु।।

ये अभी जितनी चौपाइयां कहीं है उसका पाठ करें तो कितनी नदियों का स्नान हो जायेगा!

कथा क्रम में आगे बढ़ें। गतकल भगवान शिव का विवाह हुआ। भगवान शंकर कैलास पर बैठे। पार्वती योग्य समय पर शिव के पास गए और प्रश्न पूछा कि महाराज, मेरे मन से वो संदेह अभी गया नहीं है कि राम ब्रह्म है या सामान्य मनुष्य? मेरे मन के संदेहों को आप कथा द्वारा निर्मूल कीजिए। ये रामतत्त्व क्या है? यह सुनते ही शिव को आनंद हुआ और मन में अपने इष्टदेव राम का स्मरण किया है। धन्य हो देवी! आप के समान कोई परोपकारी नहीं। आपने मुझ को रामकथा पूछी। ये ऐसी कथा है, जो सकल लोक को पवित्र करनेवाली गंगा है। कथा के लिए जो निमित्त बनता है, उसको दो बार धन्यवाद दिया और कहा, आप के समान कौन उपकारी है? रामकथा के लिए जिसको निमित्त बनाता है वो समाज होगा, परिवार होगा, समिति होगी वे बहुत बड़े अधिकारी हैं। दानाभाई परिवार यहां बहुत बड़ा उपकारी है। मुझको दानाभाई से कुछ लेना नहीं कि उनका बखान करूं। उन्हें चाहिए तो मुझसे ले जायें! ये गुरु की कृपा है मुझ पर; गर्व नहीं है मुझे उसका।

किसी ने मुझ से पूछा कि बापू, ये सब आप योजनाबद्ध बोलते हैं? मैंने कहा, योजनाबद्ध नहीं परन्तु आशीर्वादबद्ध बोलता हूं। अभी भी कोना सुगंध दे रहा है।

घड़ीभर वो लिए तुम जहाँ बेठे थे पैड़ के नीचे,
सुना है आज तक उस पेड़ का साया महकता है।

उसने तो सुना है; मैंने तो अनुभव किया है कि वो कोना महकता है। शिवजी ने कहा, देवी, अभी एक जन्म के बाद भी आप कह रही हैं कि राम ब्रह्म हैं या मनुष्य? रामतत्त्व वो है, जो पैर बिना चलता है, हाथ बिना कर्म करता हैं, शरीर बिना सब को स्पर्श करते हैं, जीभ बिना बोलता है, नेत्र बिना सब का दृष्टा बनता है। ऐसी उसकी अलौकिक करनी है। वो निर्गुण निराकार ब्रह्म भक्तों के प्रेम के लिए, समाज की समस्याओं का नाश करने के लिए समय-समय पर धरती पर अवतार लेता है। कार्य-कारण सिद्धांत इश्वर को लागू नहीं होता, फिर भी राम का जन्म क्यों हुआ उसके पांच कारण आप को कहता हूं। पहला कारण वैकुंठ के दरवाजे पर जय-विजय नाम के द्वारपाल, सनतकुमारों के साथ दोनों का संघर्ष हुआ, परिणाम स्वरूप शाप मिला। और उनका उद्धार करने के लिए राम को आना पड़ा। दूसरा कारण अवतार का सतीवृंदा, उसके साथ भगवान विष्णु ने जगत के कल्याण के लिए थोड़ा छल किया और वृंदा ने शाप दिया कि तुम्हें मनुष्य बनना पड़ेगा। तीसरा कारण, नारदजी ने शाप दिया और भगवान को मनुष्य होना पड़ा। चौथा कारण, मनु और शतरूपा ने बहुत तप करके नैमिषारण्य में गोमती नदी के किनारे प्रभु से मांग की कि अगले जन्म में आपके जैसे पुत्र का जन्म हो हमारे यहां। भगवान ने कहा कि मेरे जैसा तो जगत में कोई है ही नहीं; मैं ही आपके यहां आऊंगा; ऐसा वरदान दिया। पांचवां और अंतिम कारण राजा प्रताप भानु का है। ब्राह्मणों ने शाप दिया। प्रतापभानु रावण बना। उसका भाई अरिमर्दन कुंभकर्ण बना और उसका मंत्री धर्मरुचि दूसरी माता के पेट से जन्म लेकर विभीषण बना।

रामकथा में रामजन्म से पहले रावण जन्म की कथा है। पहले निशि अर्थात् रात्रि होती है। इसलिए पहले निशिचरवंश की कथा कही है, फिर सूर्यवंश की, राम अवतार की कथा शुरू करते हैं। रावण, कुंभकर्ण, विभीषण ने बहुत तप किया, दुर्गम और दुर्लभ वरदानों को प्राप्त किया। मिले हुए वरदानों का दुरूपयोग किया। धरती व्याकुल हो उठी, गाय का रूप धारण कर पृथ्वी ने ऋषिमुनियों के पास जाकर पुकारा। ऋषिमुनियों ने कहा, रावण के जुल्म के कारण हम चिंतन-मनन भी नहीं कर सकते हैं। सभी देवताओं के पास

गये। देवताओं ने कहा, हमारे पुण्य समाप्त होने की तैयारी है। सब पितामह ब्रह्मा के पास जाकर बिनती करते हैं। ब्रह्मा कहते हैं, अब तो एक ही उपाय है। हम सभी मिलकर परमतत्त्व को पुकारें। ब्रह्मा की उपस्थिति में तमाम देवता, ऋषिमुनि और समस्त धरती गाय का रूप लेकर परमतत्त्व की प्रार्थना करते हैं। सब ने परमात्मा को पुकारा है। आकाशवाणी हुई, धैर्य धारण करो। वैसे कोई कारण नहीं फिर भी कारण के साथ रघुवंश में धरती पर अवतार लूंगा। अपने अंशों के साथ मैं प्रगट होउंगा। भूमि का भार उतारूंगा। थोड़ी प्रतीक्षा कीजिए। इस प्रसंग पर मेरी व्यासपीठ हंमेशा कहती रही है, अपने हृदयरूपी अयोध्या में विश्राम रूपी राम को प्रगटित करना हो तो तीन सूत्रीय फार्मूला है। युवा भाई-बहेनों को खास कहता हूं, पहले पुरुषार्थ कीजिए, फिर आप जिसको मानते हैं उसे पुकारें, फिर प्रतीक्षा कीजिए।

तुलसीदासजी हमें अयोध्या ले जाते हैं। रघुवंश का शासन है। वर्तमान राजाधिराज अवधपति दशरथजी धर्मधुरंधर हैं। महाराजा ज्ञानयोगी, कर्मयोगी और भक्तियोगी हैं। उनकी रानियां पवित्र आचरण करनेवाली हैं। राजा रानियों को प्रेम करते हैं। रानियां राजा को आदर देती है। और राजा-रानी अपने हरि को भजते हैं। राम जैसा पुत्र कुल में लाना हो तो तीन वस्तु कीजिए। पुरुष ने अपनी पत्नी को प्रेम देना। पत्नी ने पति को आदर देना। और दोनों जन समय मिलने पर प्रार्थना करे उनके यहां राम जैसा पुत्र जन्म लेता है। आदर्श गृहस्थाश्रम दर्शाता है 'मानस।' आज सब का दांपत्य बिगड़ रहा है। आप घूमे-फिरें, मौज करें, जीवन के आदर्शों को न्याय दीजिए और वर्ष में एकाद कथा सुनिए। आप मुझे नव दिन दीजिए, मैं आप को नवजीवन दूंगा। दशरथजी का दिव्य दांपत्य, परन्तु एक ही दुःख कि पुत्रसुख नहीं है। मनुष्य को मुश्किली हो तो राजा के पास जाता है, पर राजा को मुश्किली हो तो कहां जायें? इसलिए कहीं से जवाब न मिले तो गुरुद्वार जाना चाहिए। राजा गुरु के द्वार जाकर गुरु को सुख-दुःख की बात कही। गुरु ने कहा, महाराज, धीरज धारण कीजिए; पुत्रकामेष्टि यज्ञ कीजिए। शृंगीऋषि को बुलाया गया। यज्ञ शुरू हुआ। भक्ति के साथ आहुति दी। आखिरी आहुति के वक्त यज्ञपुरुष अग्नि रूप में प्रसाद का चरू लेकर उपस्थित हुआ है। वशिष्ठजी को प्रसाद देकर कहा, ये खीर राजा को दीजिएगा, अपनी रानियों को बांट दें। राजा ने आधा प्रसाद कौशल्या को दिया। आधा था उसका पा भाग कैकयी को दिया, पाव भाग का प्रसाद था उसे दो भाग में बांटकर कैकयी और कौशल्या के हाथ से सुमित्रा को दिया। तीनों रानियों ने प्रसाद उदर में पधराया; सगर्भा स्थिति का अनुभव हुआ है।

पंचांग अनुकूल हुआ। चराचर हर्ष में डूबा है। सरयू नदी में मानो अमृत बह रहा हो ऐसा लगता है। यज्ञकुंड में आहुति दिये बिना अग्नि प्रज्वलित हुई है। समस्त प्रकृति प्रसन्न है। त्रेतायुग, चैत्रमास, शुक्लपक्ष, अभिजित, मध्याह्न का सूर्य, भगवान के प्रगट होने का समय। चैत्र नवरात्र पूरा हुआ। शक्ति उपासना के दिन पूरे हुए और शक्तिमान के प्रगट होने का दिन आया। पृथ्वी के ब्राह्मण देवता, पाताल के नागदेवता और स्वर्ग के देवता भगवान की गर्भस्तुति करते हैं। समस्त जगत में जिसका वास है अथवा तो पूरा जगत जिसमें निवास करता हैं, ऐसा ब्रह्मतत्त्व, परमतत्त्व माँ कौशल्या के प्रसाद में आया। चतुर्भुज रूप में परमात्मा का प्रागट्य हुआ। हाथ जोड़कर कौशल्या ने कहा, हे अनंत, आप की स्तुति किन शब्दों में करूं? माँ के अंक में आकर भगवान नवजात बालक की भांति रो पड़े। बालक के रूदन को सुनकर अन्य रानियां दौड़ आयी! आकर देखा तो कौशल्या की गोद में अलौकिक बालक रुदन कर रहा है। भ्रम के साथ रानियां दोड़ी कि ये क्या है? आया ब्रह्म और हुआ भ्रम! दशरथजी को समाचार दिया कि आप के यहां पुत्र का जन्म हुआ है। यह सुनते ही ब्रह्मानंद समान आनंद हुआ। वशिष्ठजी आयें हैं। निर्णय हुआ, ब्रह्म बालक बनकर आया है। समस्त अयोध्या में, समस्त विश्व में रामजन्म की बधाइयां शुरू हुई। महुवा की इस व्यासपीठ से आप सभी को रामजन्म की बधाई हो।

कथा सुनने आये तब फ्रेश होकर आये, प्रमादी होकर नहीं आना चाहिए। दूसरे, प्रसन्न चित्त से कथा सुनने आये। तीसरे, कथा सुने उसमें कीर्तन आये तो गहरी सांस ले। ये योग का प्रकार है। मेरा योगा, ध्यान, कसरत सब मेरे व्यासपीठ पर पूरा हो जाता है। नव दिवस न सुना जा सके तो कोई बात नहीं; सबका अपना उत्तरदायित्व होता है। कथा किसी को बांधती नहीं, कथा तो फ़र्ज का भान कराती है। चौथा, कथा में बैठे तब रिलेक्स होकर बैठे। पांचवां, उपवास रखिए। उपवास अर्थात् आंखों का उपवास रखिए, केवल व्यासपीठ पर ही नजर रखिए। अपने कान का उपवास रखिए कि नव दिवस तक अन्य कोई बात मुझे नहीं सुननी है। जीभ का उपवास रखिए कि मैं किसी की निंदा नहीं करूंगा।

कथा श्रोताओं के केमिकल्स बदलती है

कथा के विषय में प्रवेश करें उससे पहले हमने समाचार पत्र में पढ़ा कि हमारे दो वीर जवानों को पड़ोसी ने बर्बरतापूर्वक मारकर शिरच्छेदन किया है! ऐसे वीरजवानों का स्मरण करता हूं; उसकी शहीदी को सलाम करता हूं। साथ ही साथ अपने कश्मीर में पांच पुलिस कर्मी भी संघर्ष में शहीह हुए हैं। उनकी शहीदी को भी मैं सलाम करता हूं। और अन्य दो-तीन लोग मर गये हैं, शायद नागरिक होंगे। हम सब उन वीरों को, शहीदों को प्रणाम करते हैं, श्रद्धांजलि देते हैं; उनके परिवारों को संवेदना और दिलासा भेजते हैं। रामकथा के यजमान परिवार की ओर से हम उन लोगों के लिए सवा लाख रूपये वहां भेजने की व्यवस्था करेंगे।

चलिए, हम कथा में प्रवेश करें। बहुत ही प्रश्न आ रहे हैं। आप मुझसे प्रश्न पूछ सकते हैं, स्वतंत्रता है। परंतु जितने का जवाब आता होगा उतने ही का जवाब दे सकूंगा। मुझे सबका जवाब आता ही होगा, ऐसी अपेक्षा आप नहीं रखिएगा। बहुत से प्रश्न घरेलू है, उनकी चर्चा खुलेआम करना योग्य नहीं है। आपकी गली में इलेक्ट्रिसिटी का स्तंभ गिर गया है, इसे आप नगरपालिका में कहिए। आध्यात्मिक सवाल होंगे, साधना के प्रश्न होंगे, 'मानस' के प्रसंग के संदर्भ में सवाल होंगे उसके जवाब गुरुकृपा से जितना समझ में आयेगा उतना दूंगा। जवाब न दूं उसके तीन कारण है, या तो मुझे जवाब आता नहीं होगा, या तो पढ़ने का समय ही नहीं मिला होगा, या तो आपके प्रश्न का जवाब अगले दिनों में आ गया होगा, पर आपका ध्यान न रहा होगा।

कथा के संदर्भ में प्रश्न लेता हूं। जो कथा तमाम लोगों का हित करती है ऐसी कथा के लिए भवानी ने शंकर से प्रश्न पूछा और शिव ने वैसी कथा गाई। उसमें केन्द्र में जो ग्रंथ है, 'रामचरितमानस' उसे वाल्मीकि के शब्दों में 'रामायण' कहते हैं। दोनों को हम रामकथा कहते हैं। कथा का विशेष रूप से निरूपण हो रहा है। जो लोग चोटी (शिखा) रखते हैं; जिसको अधिकार है; मुझको भी एक कुंभ मेले में जगद्गुरु ने कहा कि मोरारिबापू शिखा रखो अथवा भगवा पहन लो। मैंने कोई जवाब नहीं दिया। नहीं तो मुझे कहना था, मैंने शिखा निकाल दी इतना ही नहीं, जनेऊ भी निकाल दिया है। संन्यासी जनेऊ रखे। चोटी में एक गांठ मारते हैं। एक ग्रंथि ही है। चोटी की बात करते हैं तो फिर चाणक्य याद आता है। मैंने अभी हाल में

नगीनबापा को कहा कि विदुर नीति, चाणक्य नीति और भर्तृहरि द्वारा बताये नीति पर आज के संदर्भ में थोड़ी बातें होनी चाहिए कि उसमें कितने सूत्र प्रासंगिक है, कितने संशोधन करने जैसे है? तो चाणक्य याद आते हैं। जूड़ा न संवारने के संदर्भ में यज्ञकुंड की पुत्री द्रौपदी याद आती है। ऐसे बहुत से प्रसंग अपने यहां हैं।

शिखा की एक ग्रंथि होती है। फिर यदि वो गांठ खुल जाए बाल में तो चिंता नहीं करनी चाहिए। ग्रंथ का काम ही यही है, ग्रंथि छुड़ाना। कथा मेरी और आपकी ग्रंथियों का निकाल कर देती है। जनेऊ में तीन ग्रंथि होती है, वो तीन वो तीन वेद का प्रतीक है। सूफीवाद में पंच ग्रंथि की कथा आती है। सूफी परंपरा में कोई बीमार आदमी सूफी के पास जाता था तब वो लोगों बीमारी दूर करते थे। पर जो वस्तु दवा से होती हो उसमें आपको साधन नहीं लगाना चाहिए। बाकी ऐसा होता था। परब की जगह का हमारें यहां तो प्रमाण भी है। हो सकता है। परंतु अब विज्ञान ने ये सब बीरा उठाया है। पर था तो सही। चमत्कार के रूप में नहीं, पर साधना कर सकता है। एक वस्तु याद रखिएगा, रामनाम जैसी कोई औषधि नहीं है। ऐसी ताकत जिसके पास है, वो परमात्मा की निश्चित की हुई नियति को स्वीकार करता है। कभी ईश्वर नियति तोड़ता है, पर साधु नहीं तोड़ता। साधना के अर्थ में तो शिखा में एक ग्रंथि है। यज्ञोपवित में तीन ग्रंथि है। सूफीवाद में पांच ग्रंथि है। अपने यहां लग्न होता है उसमें सात ग्रंथि है कि सात जन्म तक आपको जुड़े रहना है; जिसको सप्तपदी, सात फेरा कहते थे। गढजोड़ में सात गांठ मूल में है।

आज भी ऐसी चिठ्ठी आई है कि बापू, नदी में बाढ़ होती और हम अपने गांव नहीं जा पाते थे तब रामजी मंदिर में आकर रुकते थे तब सावित्री माँ हमे रोटी खिलाती। तलगाजरडा में ही जन्म लेना है और उसी माँ के किनारे जन्मना है, ऐसा मैं क्यों कहता हूं? मेरे हरि के यहां व्यवस्था हो तो कर दिखाए, क्योंकि अपने जीवन की गरिमा होती है। मेरे पास कितने लोग आते हैं कि बापू, ये पांच हजार रूपया और दस हजार रूपया सत्कर्म में खर्च करना है, अपने हाथ से खर्च कीजिए। तब मैं उनसे कहता हूं, तुम्हारे आसपास जरूरतमंद हो उसे अपने हाथ से खर्च करे। मुझको और आपको 'रामायण' यही सिखाएगा। मैं खुलेआम कह देता हूं कि दसवां भाग लेकर आते हैं उसे पहले तो कहता हूं कि किसी की फीस भर दो, मंदिर में दे दो, गौशाला में दे दो। पर इन नौ दिनों में जो आता है उसको कहता हूं कि मेहता साहब की हुंडी में डाल दो।

तो बाप! वैदिक परंपरा में लग्न के भी कितने प्रकार है, गांधर्व लग्न, मैत्रेय लग्न, छाया लग्न, वचन का लग्न। मूल परंपरा में सात गांठ का रिवाज था। सूफी ऐसी गांठ बांध देते कि हम साधना में लीन हो जाते। पयगंबर साहब को जब आयातें आने लगी तब बुखार आ गया।

उस की आंखों में ही खुदा दिखाई देता है।
हमने आयातें पढ़ने की अकारण मेहनत की।

राज कौशिक कहते हैं कि-

उसने देखते ही दुआओं से मुझे भर दिया।
मैने तो अभी सजदा भी नहीं किया था।

पयगंबर साहब को पूरा शास्त्र उतर आया तब एकदम कांप रहे हैं तब उनकी धर्मपत्नी कहती हैं कि आपको कुछ आया हो तो कह डालो। पयगंबर साहब ने कहा कि आया है, पर कहा नहीं जा सकता। उनकी पत्नीने खूब कहा तब उन्होंने बोला और उनकी पहली श्रोता उनकी धर्मपत्नी थी।

ऐसी ही सात गांठ हमारी कथा परंपरा में है। भागवत कथा में सात गांठ का बांस रखा जाता था। और ऐसा कहा जाता कि एक दिन की कथा में एक-एक गांठ छूटती जाती है और सातवें दिन परीक्षित को मोक्ष। इस पर भी संशोधन होना चाहिए। केले का स्तंभ रखा जाता है। अपने यहां कदलीवन कामना का वन गिना जाता है। चेतमछंदर कदलीवन में फंसा है। केले का रस आदमी को कामना से मुक्त करता है। इसका अर्थ यह है कि केले का पत्ता इसीलिए कथा में रखते थे कि हे वक्ता, आप केले के स्तंभ के बीच बैठे हैं; ध्यान रखिएगा, फंसना मत। केले में कामना कम करने की ताकत है उसी तरह आप सम्यक कामना रखना। जौ बोतें हैं उसका कारण है, जैसे रोज जवारा बढ़ता है, वैसे श्रोता के हृदय में भी जवारा बढ़ना चाहिए। प्रवाही परंपरा में इस पर संशोधन होना चाहिए। मात्र टीका ही मत कीजिए। गलत हो तो सुधारने को तैयार हूं। केले के बीच में बैठा हुआ वक्ता तो दिखता ही नहीं था! अर्थात् वक्ता को छोड़ कर वक्तव्य को पकड़ें। वक्ता को भी होता कि हमें अपना प्रदर्शन नहीं करना है। ये सभी व्यवस्था के रूप में आये हुए कथाकार थे। अस्तित्व ने जिसको आमंत्रण दिया था वे थे। कथाकार का जगत; कलाकार का जगत; उसमें जबरदस्ती कथाकार, कलाकार नहीं हुआ जाता। उसके मूल में कुछ पड़ा होना चाहिए। फिर अस्तित्व उसमें कुछ वृद्धि करेगा। तुलसीदासजी कहते हैं, कथा बोध की तो होती है पर विरोध की भी होती है। मुझको कैसा फलफूल करना है ये देखना है। इक्कीसवीं सदी के अंत तक कथा के विज्ञान पर संशोधन होना है कि श्रोताओं के कौन से केमिकल्स बदलते हैं? क्यों श्रोताओं की आंख में आंसू आते हैं? भक्ति-शास्त्र दर्शन का विषय नहीं है; चिंतन या शब्द का विषय नहीं है; यह एक विज्ञान है।

भारत की व्यासपीठों पर संशोधन बाकी है। लोगों ने ऐसा ही माना है कि ये सब परंपरा हैं। साहित्यकारों, इस क्षेत्र का मूल्यांकन तो कीजिए! बाप! यह कथा तीन देवताओं की स्मृति में है। आओ, हममें जवारा ऊगें। कथा तो मैं बबूल को भी सुनाता; इतनी भीड़ की कोई जरूरत नहीं। पर इस पर विचार करना पड़ेगा कि क्यों इतने लोग कथा सुनते हैं? नहीं तो टी.वी. की व्यवस्था है; घर पर सुनाई देता है तो भी आते हैं! आज पूरी दुनिया में लाईव टेलिकास्ट हो रहै हैं। क्यों मंडप भरता है? पर इसमें कथाकार को ध्यान रखना चाहिए कि ये लोग हमारे खातिर नहीं आते हैं। लोगों का केमिकल्स बदलती है। फिर से कहता हूं, कोई मजूरी पर भी न रखेगा! एक बार मैंने प्याज की मजूरी की है, आठ-नौं वर्ष की उम्र थी तब। मूंगफली बिनने का काम भी मैंने किया है। रामजी मंदिर का पुराना नरिया उतार रहे थे। मूंगफली खोलने का काम किया है। मूल में तो ये मेरी समृद्धि है, उस पर अब थोड़े फूल आए हैं। मूंगफली के छिलके को कान का आभूषण बनाकर पहनते थे!

पहले गांव भी इतने सुंदर थे! साधु-ब्राह्मणों पर कष्ट आता तो लोग प्रार्थना करते, 'वहेलेरा पधारो हरि, संतोनी वहारे।' तब ऐसे भजन गाये जाते होंगे। साधु पर ऐसी भावना कि हमारा जो होना हो वो हो, हमारे साधु को कुछ नहीं होना चाहिए। संप्रदायों की छोटी-छोटी ग्रंथियों ने इन मूल्यों को नष्ट करने का काम किया है। तलगाजरडा की बात करूं; अभी भी मैं गाड़ी में निकलता हूं; कोई भरवाड बहन बालक को गोद में उठाई हो, सिर पर पिलाने का अनाज रखी होती है और अपने बालक से कहती है, 'बापू को पैर लागो।' 'बापू, भला कीजिएगा।' भला करने के सिवाय कोई कुछ मांगता नहीं। ये सभी मंत्र हैं। एरकन्डिशन रूम छोड़कर साक्षरों, गांवों में आओ! संशोधन करो। और जगत को इक्कीसवीं सदी का मूल्यवान ग्रंथ दो। किसी पर मुसीबत पड़ती है तब लोग उसकी मदद करते हैं, यह 'परस्पर देवो भव' की बात है। 'तुम देव बनकर देवता को भजो।' ये सूत्र है।

हनुमानजी चूड़ामणि लेकर लौटे। मित्रों को मिले। नवल इतिहास रचा गया। मधुवन के फल खाये। अंगद की अगुवानी में टुकड़ी सुग्रीव के पास गई। सब मिलकर प्रवर्षन पर्वत पर भगवान राम के पास आये और जामवंतजी ने हनुमानजी की कथा गाई। हनुमानजी ने चूड़ामणि देकर जानकी की कथा कही, तब भगवान ने पूछा, जानकी ने तुमसे जो पूछा उसका जवाब तुमने दिया? हनुमानजी ने कहा, हां प्रभु। राम ने कहा, अब मैं जानकी के विषय में पूछुं, उसका जवाब तुम दो। हनुमानजी ने कहा, मैं कैसे गया? कैसे आया? ये सब आपके प्रताप से हुआ, पर मुझसे मेरी माँ के दु:ख के बारे में मत पूछना। यह गुरुमुख बिना नहीं समझ आता। कोई कोना पूजना पड़ता है।

सीता कै अति बिपति बिसाला।
बिनहिं कहें भलि दीनदयाला।।

आधी पंक्ति बोली त्यों ही भगवान ने हनुमानजी को रोका, तुम व्याकरण के जानकार हो, चारों वेद तुम्हे जिह्वाग्र है, तुम्हारे जैसा चिंतक मैंने कहीं देखा नहीं। तुम्हारी वाणी पर राम स्वयं मुग्ध हैं। तुम बोलने में ऐसा क्यों कर रहे हो? सीता पर विपत्ति है, ऐसा कहो न! हनुमानजी कहते हैं, अति विपत्ति कहूं इस में आपको क्या आपत्ति है? रामजी ने कहा, अति विपत्ति कहना हो तो साथ में 'विशाल' रखो। एक बार 'विपत्ति' शब्द प्रयुक्त किया तब तुमने कहा, 'कह हनुमंत बिपति प्रभु सोई।' हनुमानजी की आंख में आंसू आ गये कि संस्कृत वाङमय से लेकर तुलसी दर्शन तक सबने आपकी आंखों को विशाल कहा है; आपके नयन और हृदय भी विशाल है। आपके हाथ चाहे जितने विशाल हो, विपत्ति तक पहुंच जायें। जैसे गजराज को विपत्ति पड़ी, द्रौपदी को विपत्ति पड़ी तब आपके हाथ पहुंचे पर मेरी माँ की विपत्ति आती है, इसलिए आपके हाथ छोटे पड़ जाते हैं! देवता तो स्वार्थी हैं। किसी के शब्द को पकड़ लेना तो होशियार आदमी को खूब आता है! फिर चढ़ा देता है वो अपने नाम से! यही देवता रणमैदान में जब राम को कहने लगे, 'अतिसय दु:खित देखी बैदेही।' महाराज, जानकीजी अति दु:खी हैं। ईश्वर की सार्वभौम करुणा को प्रगट करवाने का काम कोई साधु पुरुष कर सकता है। गाय के आंचल में बछड़ा माथा मारता है तब प्रवाह आता है। साधु बिना ईश्वर की करुणा अपने तक नहीं पहुंच सकती। कोई बीच में चाहिए।

भगवान ने हनुमान से कहा, तुम्हारी बात मैं समझ गया; अब आगे बोलो। तब हनुमानजी ने कहा, आगे बोलने का साहस नहीं है। ये सुनते ही भगवान के राजीव नेत्रों से आंसू गिरने लगे।

सुनि सीता दुख प्रभु सुख अयना।
भरि आए जल राजिव नयना।।

कभी हरि का हाथ छोटा पड़ता है तब समाज के श्रद्धा का हाथ लम्बा हो जाता है। लोगों की एक महिमा है। इसका संशोधन होना चाहिए।

'रामायण' में नव गांठ है। ये कथा निरूपण है। ग्रंथ उसका नाम है, जो गांठ पड़ी हो उसे भेदता है। हममें एक ग्रंथि है भयग्रंथि। आपको अपने स्थान का विस्तार करना पड़े, अपने अनुयायियों को बढ़ाना पड़े, अपने साथ बहुतों को रखना पड़े! इसमें स्पष्ट नहीं दिखता परंतु कहीं भयग्रंथि होती है। आपके फोलोअर्स कितने हैं, आप कितनी प्रवृत्तियां करते हो उससे

शांति नहीं मिलेगी, शांति मिलेगी-

न कर्मणा न प्रजया धनेन त्यागेनै के अमृतत्वमानशु:।
परेण नाकं निहितं गुहायां विभ्राजते यद्यतयो विशन्ति।।

ये शब्द उपनिषद के हैं। अनुयायी बढ़े ये खराब नहीं है, स्थावर-जंगम मिलकत बढ़े, कर्म-प्रवृत्ति बढ़े ये खराब नहीं, पर भयस्थान तो है ही। वैराग्य बिना ज्ञान होगा ही नहीं। तुलसी का सूत्र है। पानी बिना नौका नहीं चलती उसी तरह वैराग्य बिना ज्ञान नहीं प्रगट होगा। निष्कुलानंद का पद बहुत पसंद है मुझे, 'त्याग न टके वैराग्य बिना।' जिस साधुसमाज में मैं जन्मा हूं उसको वैरागी बावा कहा जाता है। मुझको बहुत अच्छा लगता है। वैराग्य हमारा लक्षण है।

मुझको बहुत से लोग पूछते हैं कि बापू, आप कहते हैं, मेरा कोई फोलोअर्स नहीं है पर मेरे बहुत से फ्लावर हैं। तो इस फोलोअर्स और फ्लावर्स में क्या भेद है? विचारहीन पीछे-पीछे दौड़ा करे उसे फोलोअर्स कहते हैं और रोज फूल की भांति खिलता है उसे फ्लावर्स कहते हैं। फोलोअर्स बहकता है और फ्लावर महकता है।

ना कोई गुरु ना कोई चेला।
अकेले में मेला, मेले में अकेला।

मेरी कोई नई बात नहीं है, शंकराचार्य ने कहा है, 'गुरुर्नैव शिष्य: चिदानन्दरूप: शिवोडहं शिवोडहम्।' फोलोअर्स गतानुगति होता है। अच्छे भी होते; हां, नहीं होते ऐसा नहीं। पर बहुधा समूह होता है। फूल तो खिलते हैं, किसी की स्पर्धा में नहीं होते, अपनी महक लेकर खुलते हैं। फ्लावर को कोई आदेश नहीं होता। फूल भगवान को चढ़ा सकते हैं, अनुयायी को चढ़ा सकते हैं? मुझको किसी सिक्युरिटी की जरूरत नहीं, क्योंकि मुझको कोई भयस्थान नहीं है। हां, व्यवस्थ जरूरी है। भयग्रंथि से पीड़ित 'रामायण' का एक पात्र सुग्रीव। भयग्रंथि से मुक्त कौन करेगा? बीच में कोई साधु आये तो मुक्त हुआ जा सकता है। हनुमान साधु बनकर आये हैं, उन्होंने सुग्रीव को भयग्रंथि से मुक्त किया है। सुग्रीव बहुत भयभीत है, भागता रहता है। पहाड़ों पर चढ़ जाता है। ऊपर से दो-तीन लोग को भी देखता है तो डर जाता है कि ये मुझ को मारने आये होंगे? राम के लिए 'गरीबनवाज' बिरूद है। बालि के लिए 'बलशाली' शब्द प्रयुक्त किया है 'दोहावली' में। भाषान्तरकारों के मतानुसार बलशाली अर्थात् सेनावाला। ऐसा अर्थ नहीं होगा। बालि सेना कहां रखता था? बालि सेना लेकर लड़ने गया हो ऐसा एक भी वर्णन नहीं मिलता है। वो आदमी मायावी को मारने जाता है तो भी सुग्रीव को कहता है, तू बाहर रहना। मैं अकेला ही काफी हूं। तुम पन्द्रह दिन यहां बैठना; यदि न आऊं तो शिला ढ़ंककर जाना। सिंहों का झुन्ड नहीं होता और सिंह का किसी दिन राजतिलक नहीं होता। वनराज तो जन्मजात होता है। हम सब को मानपत्र देना पड़ता है तब हम बड़े होते हैं। प्रभु ने अपने मित्र सुग्रीव को राजा बना दिया। क्योंकि राम का बिरुद है 'गरीबनवाज।' सुग्रीव गरीब है। एक वस्तु याद रखियेगा दरिद्र न रहना, गरीब रहना। दरिद्र का अर्थ होता है वस्तुओं का अभाव और गरीब का अर्थ है रंक स्वमान। गंगासती कहती है-

भक्ति रे करवी एने रांक थईने रहेवुं पानबाई,
मेलवुं अंतरनुं अभिमान रे।

जिसे भजन करना है वो दरिद्र नहीं है, रंक है; अभाव में जीता है, वही उसकी मौज है।

दूसरी पापग्रंथि। बहुतबार आदमी को एक गांठ हो जाती है कि मैं ही पापी हूं।

सहज पापप्रिय तामस देहा।
जथा उलूकहि तम पर नेहा।।

विभीषण को यह पापग्रंथि है। जेसे उल्लू को अंधेरे पर प्रेम होता है ऐसे ही हमें पाप पर प्रेम होता है। मैं युवा जगत को खास तौर पर कहता हूं कि पाप नहीं करना चाहिए, पर हम इन्सान है, कभी भूल हो जाये तो पापग्रंथि नहीं बांध लेना चाहिए। हमसे पाप कितना-सा होगा? प्रभु की रहमत बहुत बड़ी है। हमारे पाप की औकात क्या? तुलसी कहते हैं, 'राम-राम कहकर जो ऊबाँसी लेगा, उसके पाप के ढ़ेर खत्म हो जायेंगे।' मानव शरीर है। कमजोरियां हममें होंगी, पर इसका अर्थ ऐसा नहीं कि पूरी ज़िंदगी पापी ही हैं। पापग्रंथि से मुक्त बनिए। और इसमें भी कोई साधु ही मदद करेगा। इसीसे हनुमानजी आते हैं विभीषण के पास। विभीषण ने कहा, ऐसा पापी हूं मैं। तो हनुमानजी ने कहा, मैं कहां बडा कुलीन हूं? सुबह में हमारा नाम लेता है उसको भोजन नहीं मिलता, ऐसा कहकर, उसकी पापग्रंथि दूर करते हैं। भगवान कहते हैं, 'पापवंत कर सहज सुभाऊ।'

तीसरी पूर्वग्रह की ग्रंथि। ऐसी ग्रंथि थी सती में कि कुंभजऋषि क्या कहेंगे कथा? जब वे पार्वती बनी तब मजबूत गांठ थी विश्वास की गांठ, जो कोई नहीं तोड़ सकता। पूर्वग्रह की ग्रंथि तभी छूटती है, जब शंकर जैसा महापुरुष उन्हें कथा सुनाये। कहीं साधु ऐसी ग्रंथि छोड़ते हैं। कहीं स्वयं हरि आकर ग्रंथि छोड़ते हैं। बहुत से आदमियों को अमुक लोगों पसंद ही नहीं होते! तो इसका अर्थ कि हम उसको पसंद नहीं ही होंगे!

चौथी लघुताग्रंथि। अंगद में लघुताग्रंथि थी। उसको ऐसा ही लगता कि सुग्रीव ने मुझको युवराज बनाया

है, पर वो मुझको मार डालेगा। और इसलिए उसे सुग्रीव के प्रति हंमेशा आशंका बनी रही। इसी कारण इस ग्रंथि को राम ने तोड़ा। रामराज्य होने के बाद मित्रों को बिदा किया तब सखाओं को बिदाई भेट दिए तब प्रभु ने अपने गले की माला अंगद को पहनाई है, इससे उसकी लघुताग्रंथि गई। सुग्रीव को आश्चर्य हुआ तब भगवान ने सुग्रीव को कहा कि तुमको समझना चाहिए कि बालि के समक्ष तुम लड़ रहे थे और भयभीत होकर तुम भागे तब तुम्हारे गले में जयमाला पहनाई थी और फिर बालि के निर्वाण के बाद तुम्हारा भय टूटा था। वही माला इसके कंठ में पहना रहा हूं अर्थात् इसका ध्यान रखना। यह लुघुताग्रंथि से पीड़ित है। और अंगद, तुम ध्यान रखना, तुम्हारे गले में मैंने माला पहनाई है; सुग्रीव की ताकत नहीं, तुम्हें कुछ कर सके। तो लघुताग्रंथि का नाश हरि ही कर सकते हैं।

पांचवीं अंहकार की ग्रंथि। अहंकार की ग्रंथि बालि मे और रावण में है। बहुतों में अहंकार की गांठ पड़ जाती है कि मेरे जैसा कोई नहीं है। मैं यानी मैं! तुलसी कहते हैं, बालि, तुझ में अंहकार ग्रंथि है। तेरी पत्नी तुझ को समझा रही थी, तूं नहीं माना। और बालि ने स्वीकार भी किया सही कि मुझमें अहंकार की ग्रंथि है। रावण में भी अहंकार की ग्रंथि है। हनुमानजी ने बहुत कहा, तू तमोगुणवाला अहंकार छोड दे, रजोगुण रख। यज्ञयाग, पूजापाठ भले करना। अहंकार की ग्रंथि भी हरि बिना हीं छूटती। बालि के हृदय में बाण मारा और रावण को नाभि में बाण मारा तब इन दोनों के अहंकार की ग्रंथि छूटी है।

छठ्ठी संप्रदाय की ग्रंथि। हमारा संप्रदाय, धर्म, पंथ की ग्रंथि बंधती है जो हमें मुक्त होने नहीं देती। 'संप्रदाय' शब्द बहुत अच्छा है। बल्लभाचार्य भगवान से पूछिए। पर जब ग्रंथि आती है, कट्टरता आती है तब उचित नहीं होता। वैष्णव शिव का नाम भी न लें! शिवपंथी विष्णु का नाम न लें! इतने तक जड़ता आ गई कि 'कपड़ां सिवाना है' ऐसा नहीं कहेंगे! उसमें शिव का नाम आता है! इसलिए कहते हैं, 'कपड़ां गढ़वाना है।' अब ये ग्रंथियां टूटने लगी हैं। वैष्णव संप्रदाय, शैव संप्रदाय, शाक्त संप्रदाय ये सब बंदगी की व्यवस्था है। पर जब ग्रंथि आती है तब बहुत मुश्किली पड़ती है। दीवालें खड़ी होती हैं। मज़हबी गांठे पड़ती है; धर्म के नाम पर कट्टरता आती जा रही है। ऐसी ग्रंथि तो कोई कबीर जैसा साधु आये तो तोड़ेगा। काशी में मरो तो ही मुक्ति मिलती है, यह एक गांठ है। कबीर पूरी ज़िंदगी काशी में रहे और मरते वक्त लगा कि मुझको ये गांठ छोड़नी है; और मगहर में जाकर मरे। मगहर में जो मरता है उसको मुक्ति नहीं मिलती। उन्होंने कहा, मुक्ति स्थान का विषय नहीं है, समझदारी का विषय है। तो अपने धर्म को कभी छोड़ना नहीं। पर दूसरे के धर्म की टीका मत करो; दूसरे के देवों, मंदिरों की टीका मत करो। सनातनता, सनातनता है। 'रामायण' में शैव, वैष्णव, शाक्त तीनों साथ में बैठे हैं। शंकर भगवान शैव हैं। पार्वती शाक्त है। और कथा वैष्णवी है। ये है ग्रंथि भेद की प्रक्रिया। कालान्तर में समाज में गलत सिद्ध हो जाता है। मैं बार-बार अपनी बात, अपना मत कहता हूं इसमें द्वेषवृत्ति नहीं पर भविष्य में गलत इतिहास न रच जाये इसके लिए प्रार्थना प्रस्तुत करता हूं। नहीं तो भविष्य में गलत धारणाएं बैठा दी जायेंगी। इन ग्रंथियों को भेदना चाहिए। इस में सबका कल्याण है। कबीर मुल्ला और पंड़ित को एक साथ ग्रंथि छोड़ने की बात करते हैं। जो चींटी के पैर के पायल की आवाज़ सुनता है वो परमात्मा तुम्हारी आवाज़ नहीं सुनेगा? ऐसा कहकर कबीर ने ग्रंथिभेदन का काम किया।

सहजानंद स्वामी जूनागढ़ में हाथी पर निकले। उसमें एक देवीपूजक तरबूज की जांकी लेकर खड़ा था। सहजानंद स्वामी ने ऐसा नहीं कहा कि मैं देवीपूजक का तरबूज नहीं खाऊंगा। उन्होने ग्रंथि भेदन किया है। इसलिए हम ध्यान रखना चाहिए कि नई ग्रंथियां पैदा न हों। सहजानंद स्वामी ने उस तरबूज की जांकी को लेकर खाया। इसको महापुरुष कहेंगे। वैष्णव संप्रदाय में आये हुए नई ग्रंथि पैदा करे! शिव को माननेवाले नई ग्रंथि पैदा करे! गांठ चाहे जितनी छोटी हो पर दोरे की लंबाई तो कम हो ही जाती है। जितनी अधिक गांठ उतना तुम्हारा दोरा छोटा। गलत इतिहास न रचा जाये इसलिए तलगाजरडा प्रार्थना करता है। महापुरुष ने तो अद्‌भुत काम किया है। हम स्वार्थो के कारण गांठें लगाते गए! दयानंद सरस्वती ने 'सत्यार्थ प्रकाश' लिखकर कितनी गांठों को छोड़ने की तैयारी की! अपने धर्मस्थान केवल धनवैभव में डूबते जा रहे थे और अंतिम आदमी की सेवा नहीं करते थे! ऐसी एक गांठ पड़ गई! उस ग्रंथि को तोड़ने के लिए रामकृष्ण परमहंस का आश्रय लेकर विवेकानंद ने मैदान में उतरकर अपनी संस्था का नाम रखा 'रामकृष्ण मिशन।' ये 'मिशन' शब्द परदेश का है, फिर भी उन्होंने ग्रंथि तोड़ी कि सत्य जहां से मिले वहां से लो। अपने दंतालीवाले स्वामी सच्चिदानंद महाराज ग्रंथिभेदन का बहुत बड़ा काम कर रहे हैं। हम सबको करना पड़ेगा।

सातवीं विश्वास की ग्रंथि: 'भरोसो दृढ इन चरनन केरो।' पार्वती सती थी तब पूर्वग्रह की ग्रंथि थी पर पार्वती हुई तब 'नारद बचन न मैं परिहरऊं।' मेरे गुरु ने जो मुझको कहा उसमें फिर शंकर मना करे तो शंकर की बात तोड़ दूंगा, पर गुरुवचन नहीं तोडूंगा। ये थी विश्वास की ग्रंथि। अमुक धर्म ऐसी बातें करते हैं कि आपके राम भी नरक में जानेवाले हैं! कृष्ण तो गये ही हैं! ये सभी ग्रंथियां हैं। किसको स्वर्ग में डालना किसको नरक में डालना ये तुम्हारे जेब में है? ऐसा करने से तुम सनातनता को नुकसान नहीं पहुंचा सकते। तुम राम, कृष्ण, शिव को खारिज नहीं कर सकते। अमुक वस्तु गांव में ऐसी आ गई है कि लोग राममंदिर जाना बंद कर दिए! 'जय सीयाराम' कहना छोड़ दिया! कोई दूसरा ही सूत्र आ गया! गढ़डावाले जादवजी बापा ऐसा ही कहते थे कि 'गांव का उबारा भरो, अन्य गांव का उबारा भरने मत जाओ।' आपके गांव में जो साधु-ब्राह्मण हो उसको बचाओ। एक बात समस्त समाज को कहनी है, राम, कृष्ण, शिव इन सबको आप ठीक से समझो। ये मूल आदि-अनादि तत्त्व हैं। दानाभाई ने डुंगर के राममंदिर के लिए बत्तीस लाख रूपये दिए हैं। गांव के राममंदिर रहने चाहिए। कृष्ण मंदिर, शिवमंदिर रहने चाहिए। नयें मंदिर बनें उसका स्वागत कीजिए। ये मंदिरों का देश है। उपेक्षा किसी की भी मत कीजिए। पर सनातन धर्म से अपेक्षा रखिए और वो भी आपसे अपेक्षा रखता है। मैं मस्जिद में भी जाता हूं, हिन्दु-मुस्लिम की तकरीर में भी जाता हूं। हृदय से सभी का स्वागत करता हूं, पर अपनी सनातनता नहीं छोड़ता। और किसी मुस्लिमभाई से ऐसा नहीं कहता कि अपना इस्लाम धर्म छोड़ दें। अपना पकड़ रखो पर दूसरे का मत छुड़वाओ।

आठवीं जड-चेतन की ग्रंथि। जड़-चेतन की गांठ हो नहीं सकती, मुश्किल है। पर तुलसी कहते हैं, ये झूठी है पर छूटती नहीं है। सच्ची गांठ खुल जाती है, मिथ्या गांठ छूटती ही नहीं! क्योंकि ये गांठ है ही नहीं। ऐसी गांठ चेतन जीव और जड़ माया के बीच पड़ी है। माया और चैतन्य की गांठ ऐसी पड़ी है कि छूटती नहीं, क्योंकि सच्ची नहीं है। मिथ्या गांठ खोलने का उपाय तुलसी ने बताया कि सात्त्विक श्रद्धारूपी गाय को पाले और गाय को दूहे, विश्वास के पात्र में उसका दूध लेने के बाद उसको जमाये, फिर विचार पूर्वक उसका मंथन करके माखन उत्पन्न हो, उसमें से तलछट और घी अलग पड़े, नारायण स्वरूप को चित्त के दीये में रखे, तीन अवस्था और तीन गुण की बत्ती बनाये और ज्ञान का दीया प्रज्वलित करे, उसके उजालें में बैठकर किसी माया और चैतन्य की गांठ छोड़े तो छूटेगी। पर देवता उसे बूझाने का बहुत प्रयत्न करते हैं! इसीसे ज्ञान मार्ग बहुत कठिन गिना जाता है। ऐसा वर्णन ''उत्तरकांड' में है।

नौवीं संकोच की ग्रंथि। वैसे संकोच की गांठ अच्छी है, पर उस आदमी को लोग कभी कमजोर मानते हैं। संकोच की ग्रंथि समवयस्क मित्रों अथवा सखियां छुड़वा सकती हैं। संकोच, शर्म, मर्यादा ये कुछ ठीक सुंदर ग्रंथि हैं, पर साधक मुक्ति के मार्ग पर बढ़ता है तब ये भी छूटती है। जिस घर में कोई व्यक्ति शर्म-संकोच से रहता हो वो घर भला लगता है। 'मानस' में लिखा है, जानकीजी विवाह कर आयी तब उनके हाथ मैं मैंढल बंधा है उसे छोड़ने की विधि हुई तब तलसी कहते हैं, खूब आनंद हुआ। भगवान राम जानकी के हाथ की गांठ छोड़ते है, तब गांठ मजबूत होने से खुल नहीं रही थी तब जनकपुर से आयी सीता की सखियां रामजी का विनोद कर रही है कि 'धनुष तोड़ना सरल है पर ये स्नेह की गांठ खोलना कठिन है।' ऐसी थोड़ी गांठे रखिएगा। आप दुनिया में कहीं भी रहते हो पर अपने शील की गांठ रखिएगा। साधु-संतों के संग, बुजुर्गो के संग, देवस्थानों में जाते समय कैसा व्यवहार करते हैं उसके लिए शील की गांठ है। आपको कुछ चाहिए तो भी शील छोड़कर नहीं भागना चाहिए। ये गांठ खराब नहीं लगती। यह जनेऊ के गांठ की तरह है; शिखा के गांठ की तरह है; सप्तपदी के गांठ की तरह है; सूफी की बंधी साधना की गांठ की तरह है। उत्यंत निकट आते हैं फिर शील-संकोच कम होता है। जितनी निकटता आयेगी उतनी आप दिल से बातें कर सकोगे और झुठी गांठे खुलने लगेंगी। नज़दीक आओ बाप! धर्म की दीवारें खड़ी न हों इस के लिए दरवाजा तैयार करो। 'सब नर करहि परस्पर प्रीति।'

तो ये नौं-नौं ग्रंथियों को तोड़ डाले ऐसी इस कथा का निरूपण है। कथातत्त्व क्या है? उसको अलग-अलग संदर्भों में 'मानस' में जो छिपा हुआ रहस्य है उसकी बातें हम कर रहे हैं। कल हमने रामजन्म तक की कथा देखी। रामजन्म हुआ तब एक महीना तक दिवस ही रहा, रात हुई हीं नहीं! रात तो पड़ती ही होगी। प्रकृति के नियम तो वैसे

इक्कीसवीं सदी के अंत तक कथा के विज्ञान पर संशोधन होना है कि श्रोताओं के कौन से केमिकल्स बदलते हैं? क्यों श्रोताओं की आंख में आंसू आते हैं? भक्ति-शास्त्र दर्शन का विषय नहीं है; चिंतन या शब्द का विषय नहीं; यह एक विज्ञान है। भारत की व्यासपीठों पर संशोधन बाकी है। साहित्यकारों, इस क्षेत्र का मूल्यांकन तो कीजिए! इस पर विचार करना पड़ेगा कि क्यों इतने लोग कथा सुनते हैं? नहीं तो टी.वी. की व्यवस्था है; घर पर सुनाई देता है तो भी आते है! आज पूरी दुनिया में लाईव टेलिकास्ट हो रहै हैं। क्यों मंडप भर जाता है? पर इसमें कथाकार को ध्यान रखना चाहिए कि ये लोग हमारे खातिर नहीं आते हैं। कथा लोगों के केमिकल्स बदलती है।

ही चलते हैं। भगतबापू कहते हैं-

आभना थांभला रोज ऊभा रहे,
वायुनो वींझणो रोज हाले;
उदय अने अस्तनां दोरडां उपरे,
नट बनी रोज रविराज म्हाले;
भागती, भागती, पड़ी जती, पड़ी जती,
रात नव सूर्यने हाथ आवे,
कर्मवादी बधां कर्म करता रहे,
एहने ऊंघवुं केम फावे?

कैकेयी के यहां पुत्र का जन्म हुआ। सुमित्रा के यहां दो पुत्रों का जन्म हुआ। भगवान शंकर कैलास के शिखर पर पार्वती को कथा कहते-कहते बोले, देवी राम का प्राग्ट्य हुआ तब मैंने एक चोरी की। पार्वती कहती हैं, किसी का जन्म होता है तो उसमें तो दिया जाता है, चोरी करते हैं? शिव ने कहा, मैंने वैसे चोरी नहीं की पर राम के दर्शन के लिए अयोध्या जाना था और आपने मुझसे पूछा कि कहां जा रहे हैं? पर मैंने आपको कहा नहीं क्योंकि मैं कहता कि रामदर्शन के लिए जा रहा हूं तो आप जिद करती कि साथ में आना है। एक बार आपको कथा सुनने के लिए ले गया और सीता के वियोग में राम रो रहे थे, वो देखकर आपको शंका हुई कि ये ब्रह्म कैसा? बाल रूप राम को रोते देखकर आपको शंका होती फिर आपका जन्म निष्फल होता इसलिए आपको नहीं ले गया। जैसे आप घर पर झूठ बोलकर तीन से छह 'बाहुबली' देख आते हैं वो चोरी है! फिल्म देखना हां। अच्छी फिल्म देखना। जिसमें सुंदर शास्त्रीय संगीत हो, शास्त्रीय नृत्य हो, भारतीय संस्कृति को बल मिले ऐसे डायलोग हो, नखरा न हो ऐसी फिल्म देखना चाहिए। भारतीय संस्कृति को सुशोभित करते हो ऐसे नाटक देखिए। चरित्र निर्माण के चलचित्र हों तो देखना। परन्तु चित्त बिगड़े, वृत्ति बिगड़े उससे दूर रहना चाहिए। यजमान की फरमाइश है, चलिए गीत गाते हैं-

अगर मुझ से महोब्बत है,
मुझे अपने सब गम दे दो।

ये पंक्तियां फिल्म में भले प्रयुक्त हुई हो पर 'नारदसूत्र' है अथवा 'प्रेमसूत्र' है कि हे हरि, हमें आपसे प्रेम है। इसलिए वैष्णव कृष्ण की नजर उतारते हैं। हमें आप पर भक्ति है और आपको हमारा प्रेम हो तो है ठाकुरजी, अपने सभी दुःख हमें दीजियेगा। हम संसारी तो सभई दुःखों के अभ्यस्त हो गये हैं पर आपको दुःख नहीं पड़ना चाहिए। वृत्ति अच्छी होनी चाहिए। इसलिए फिल्म की पंक्ति गा रहा हूं कि मेरा हेतु समझें। बुद्ध भगवान ने सबको चंद्र दिखाया। उनका इरादा चंद्र बताना ही था परन्तु कालान्तर में लोगों ने उनकी अंगूली को चांद समझ लिया। हम बहुत बार मूल इशारें को नहीं समझ पाते अथवा मिथ्या पकड़ लेते हैं।

आज गुजरात के विषय में कविता आयी है मेरे पास। गुजरात ने तीन प्रधानमंत्री दिए, गुलज़ारीलाल नंदा, मोरारजी देसाई, नरेन्द्र मोदी। विनोद जोशी की कविता है-

हुं एवो गुजराती
जेनी हुं गुजराती ए वातथी गजगज फूले छाती।

मिलिन्द गढ़वी का शे'र है-

जीतवालों को पचेमान बहुत करता हूं।
हार भी जाउं तो हैरान बहुत करता हूं।
मैं दीया हूं मुझे शायद वो बुझा दे लेकिन,
आंधीओं को मैं परेशान बहुत करता हूं।

चारों पुत्रों का नामकरण होता है। वशिष्ठजी कहते हैं, राजन्! ये श्यामवर्ण का बालक है कौशल्यानंदन जिसका नाम लेने से जगत को आराम मिलेगा, उसका नाम राम रखता हूं। राम जैसा ही वर्ण, स्वभाव, शील; कैकेयी का पुत्र ये समस्त जगत का भरण-पोषण करेगा, किसी का शोषण नहीं करेगा इससे उसका नाम भरत रखता हूं। सुमित्रा के दो पुत्र, जिसके नाम स्मरण से शत्रुता का नाश होगा, उसका नाम शत्रुघ्न रखता हूं। समस्त जगत का आधार शेषनारायण के रूप में; जिसकी वृत्ति उदार है, राम को प्रिय है ऐसे बालक का नाम लक्ष्मण रखता हूं। राजा, आपके पुत्र वेद के सूत्र है। व्यासपीठ अक्सर कहा करती है, राम को जब मंत्ररूप में जपते हैं तब बाकी के तीन नामों को हमें आचरण में करना पड़ेगा। राम-राम जप ने के साथ दूसरे का पोषण करना है। राम का नाम जपता है उसे किसी के साथ दुश्मनी नहीं रखनी चाहिए। ये शत्रुघ्न नाम की सार्थकता है। तीसरा नियम, अपने से हो सके उतना आधार बनना चाहिए। कोई गरीब विद्यार्थी हो उसकी फीस भर सकते हैं। बीमार को दवाई का रूपया दे दें, अन्नक्षेत्र में गेहूं भेजे यहीं रामनाम की सार्थकता है। रामनाम महामंत्र है, उसे जपने की ये तीन शर्तें हैं। भगवान का यज्ञोपवित संस्कार हुआ। गुरु के यहां पढ़ने गये। अल्पकाल में विद्या प्राप्त की। इस तरह प्रभु बड़े होने लगे। विश्वामित्रजी राम की मांग करते हैं यज्ञ रक्षा के लिए। ऋषि संपत्ति नहीं, संतति मागते हैं। दो पुत्रों को लेकर विश्वामित्र आये। रास्ते में ताड़का का उद्धार किया। यज्ञ में मारीच को फन बिना के बाण मारकर लंका की ओर फेंका! सुबाहु को निर्वाण दिया। पदयात्रा करते हुए प्रभु अहिल्या के आश्रम में आये हैं। राम ने अहिल्या का उद्धार करके गंगा स्नान किया। जनकपुर में जनकजी ने स्वागत किया और और 'सुंदर-सदन' में राम-लक्ष्ण को ठहराया और दोपहर को भोजन करके विश्राम करते हैं।

मानस-कथा - ५

शंकर परंपरा के साधु को ज़हर पीना पड़ता है

'मानस-कथा', जिस कथावस्तु को केन्द्र में रखकर हम संवाद रच रहे हैं। गतकल चित्रकूट में मैं कह रहा था कि कथा की शास्त्रीय चर्चा बहुत हुई है ग्रंथों में कि कथा तत्त्व क्या है? जिसको शास्त्रीय भाषा में कथा निरूपण कहते हैं। परन्तु ऐसी बहुत उंची शास्त्रीय चर्चा करने के लिए कथा में बैठा जो समाज है, उसके लिए थोड़ा कठिन होगा। भागवत कथा क्षेत्र के समर्थ कथाकार पूज्य शरदबापा बैठे हैं। भागवतजी की रास पंचाध्यायी की कथा पर बहुत से महापुरुषों ने भाष्य लिखे हैं। मैं पुण्य स्मरण करता हूं, भागवत विद्यापीठ, सोला के तपस्वी ऋषि कृष्णशंकर दादा; उन्होंने 'भागवत' पर आधारित बहुत से भाष्यों का संकलन करके समाज को बहुत बड़ा प्रदान किया; खास तौर पर हमारे कथाजगत को बहुत बड़ा प्रदान किया है। उसमें की एक टीका, कथातत्त्व का ऐसा भाष्य है कि कथा षड्धा (छः प्रकार की) होती है। जो लोग थोड़े सयाने हैं अपने को ऐसा मानते हैं वे 'कथा-बथा' कहते हैं, उन्हें मेरा जवाब है। कथा बहुत आदि-अनादि तत्त्व है बाप! उसके रूप बदले, वक्ता बदले, संदर्भ बदले परंतु वो अमर तत्त्व है। जिसको कथादर्शन में रस है वे लोग तुलसीदास ने 'मानस' में जो विशिष्ट निरूपण किया है, उसका भी अभ्यास करें। तुलसी की एक पंक्ति आपको कहता हूं-

औरउ कथा अनेक प्रसंगा।

तुलसी कहते हैं, राम की कथा में तो राम ही नायक हैं। और शास्त्र का नियम है कि कथा का मूल केन्द्रबिंदु जो हो उसे आदि, मध्य और अवसान में सिद्ध करना पड़ता है।

एक मँह आदि मध्य अवसाना।
प्रभु प्रतिपाद्य राम भगवाना।

ऐसी चर्चा हमारे कथाकार संमेलन में करने जैसी होती है, बृहद समाज में ये थोड़ी कठिन भी पड़ेगी। पर मैं थोड़ा अपना पक्का कर लेता हूं। इतने संत बैठे हैं तो मुझको थोड़ा आशीर्वाद प्राप्त होगा। तुलसी कहते हैं, रामकथा में दूसरे बहुत से प्रसंग हैं। मूल तो राम की कथा, सीता की कथा, भरत की कथा, लक्ष्मण की कथा, अवधपति दशरथ-कौशल्या की कथा, जनक की कथा, शत्रुघ्न की कथा, राम के साथ जुड़े पात्रों की कथा, रावण की कथा, बालि की कथा है। परन्तु दूसरे कितने प्रसंग भी हैं। तुलसी कहते हैं, जैसे कोई सुन्दर सरोवर होता है वहां अनेक पक्षी आते रहते हैं वैसे दूसरी जो कथा हैं, उसके सन्दर्भ में दूसरे पक्षी हैं।

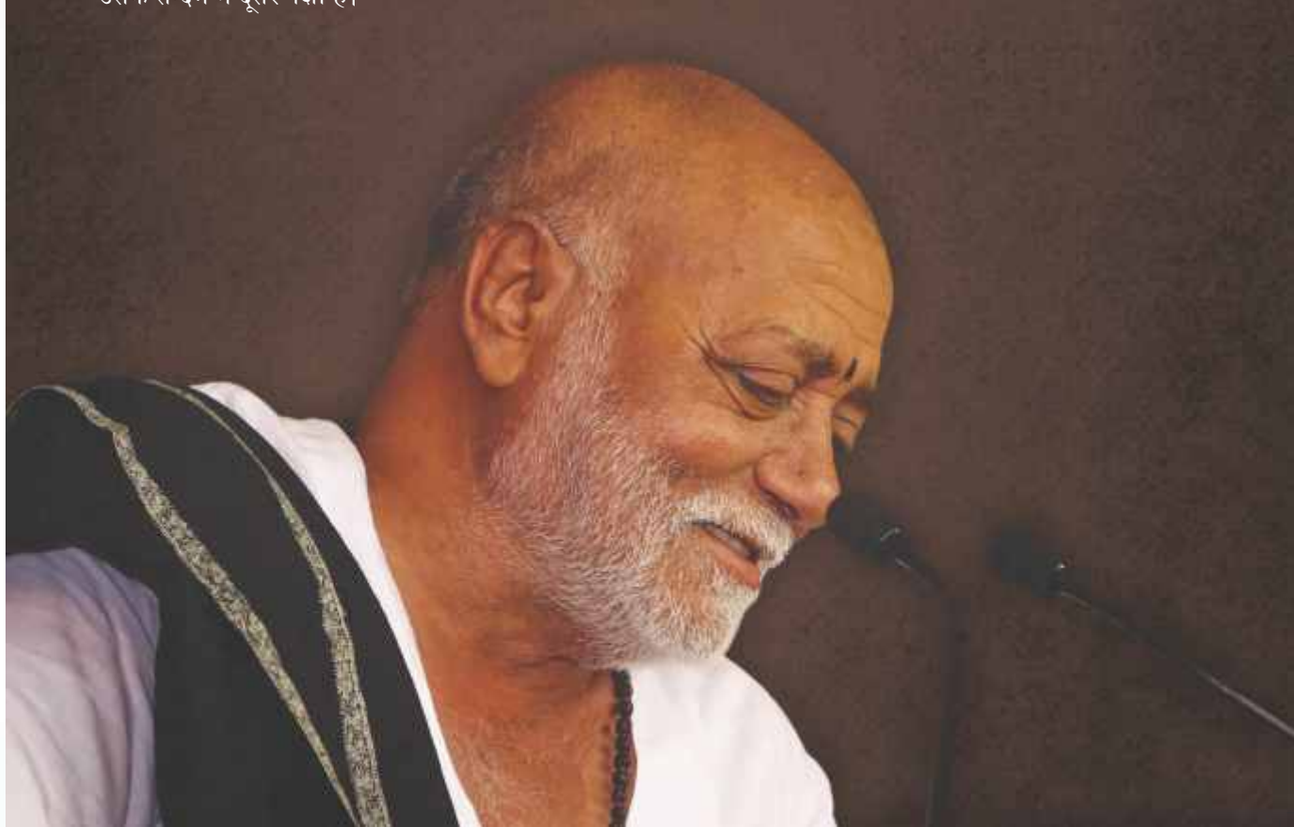

कथा तत्त्व बहुत गहन तत्त्व है। छः प्रकार की कथा कही गई है। १. खंड़ कथा, २. दृष्टांत कथा, ३. आख्यान कथा, ४. परी कथा अर्थात् दंतकथा, ५. मूल कथा, ६. गद्य कविता। वक्ता जब व्यासपीठ पर बैठकर बोलता है तब वो कविता गाता है। पर वो पद्य कविता नहीं है, गद्य कविता है। जो लोग संगीत का विरोध करते हैं उन्हें पता नहीं है कि कथा के साथ संगीत आदि-अनादि काल से जुड़ा हुआ है। पर जिसको संगीत नहीं आता वो उसकी टीका करते हैं। हमें जो नहीं आता उसकी टीका करके बुद्धि का प्रदर्शन नहीं करना चाहिए। ओशो बोलते तब लगता जैसे कविता बोली जा रही है। अपने पूर्वप्रधान मंत्री वाजपेयीजी बोलते हैं तो ऐसा लगता है, कविता बोल रहे हैं। कल्पना कीजिए कि शुकदेवजी बोलते होंगे तब कैसा गद्यकाव्य होगा! मेरा भुशुंडि बोलता होगा वो कैसा गद्यकाव्य होगा! हम सब गातें हैं, उपकथा कहते हैं, खंड कथा कहते हैं, बोध कथा कहते हैं, मूल कथा को केन्द्र में रखकर हम रास करते हैं, परन्तु वक्तव्य जितना हो रहा है वो भी गद्यकविता है। रास पंचाध्यायी की टीका ऐसा कहती है इसलिए तलगाजरडा को बल मिलता है। कथा अर्थात् हम सब कहते हैं उतना नहीं है। कोई भी अच्छी कहानी कहनेवाला फिर चाहे डायरा ही हो तो भी मुझे आपत्ति नहीं है। दो जन बैठे हो और बातें करते हो तो वो भी गद्य कविता है साहब!

कथा में हजारों आदमी बैठते हैं ये तो कथायुग चल रहा है इसलिए बैठते हैं। आपको नहीं आना हो तो भी आना पड़ता है। आप बचकर निकल नहीं सकते हैं। ये काल ऐसा है। काल का प्रभाव लगे बिना नहीं रहता। वैशाख महीने में गर्मी लगेगी ही। वैसे ही ये कथा का काल है। इसमें आप को आना ही पड़ेगा। टीका करने, भूलें काढ़ने, द्वेष करने आना ही पड़ेगा! बहुतों को ऐसा लगता है कि क्यों जायें कथा में? ऐसा विचार करते-करते मंडप तक आ जाते हैं! क्योंकि ये मौसम है कथा का। मोरारिबापू कहते हैं इसलिए नहीं। फिर से कल का निवेदन कि पचास या सौ वर्षों के बाद कथा पर संशोधन होनेवाला है कि कथा मनुष्य के मस्तिष्क का कौन-सा केमिकल्स बदलती है कि क्या है ये सब? मंडप में इतने आदमी बैठे हैं वो केवल खाने के लिए ही नहीं आये हैं इतना समझ लीजिएगा। सहन नहीं कर सकते हैं वो लोग कहते हैं कि कथा में रसोई चलती है इसलिए सब आते हैं। ऐसा नहीं है। एक सौ सत्तर देशों में टी.वी. पर सुनते हैं, उसके लिए भोजन टी.वी. में से निकलता है? ऐसा नहीं है साहब! कथा गद्य कविता है। ये पदावलि नहीं है। ये गेय प्रवचन है। ये सिंगिंग लेक्चर है। विवेकी होगा वो गाता ही होगा; प्रेमी होगा वो गाता होगा; सच्चा ज्ञानी होगा वो गाता ही होगा। झूठा होगा वो मुंह चढ़ाकर बैठा होगा! मीरां ने प्रेम किया इसलिए उसने गाया; नरसिंह ने प्रेम किया इसलिए गाया; नानक ने प्रेम किया इसलिए उसने गाया; कबीर ने प्रेम किया इसलिए उसने गाया। आप नहीं रह सकते! मज़बूरी है। तो छठ्ठा लक्षण है गद्य कविता। वक्ता बोलता है तब लगता है कविता, भले प्रवचन हो। तो ऐसी कथा के छः लक्षण हैं।

ऐसी कथा को सुनने के शास्त्रीय आठ लक्षण हैं। अस्तित्व की व्यवस्था में जो वक्ता आये हैं, पृथ्वी पर जो आ गये हैं, जो हैं, जो आनेवाले हैं, उन सब की ये परिस्थिति होती है। कथा-श्रोता को कथा का शब्द पकड़ना चाहिए। आज कुछ प्रश्न मेरे पास हैं। मुझे लगता है कि इन्होंने शब्द पकड़ा ही नहीं! नहीं तो ये बातें कल कह गया हूं वही बातें पूछी हैं! शायद उस समय ये लोग ध्यान में होंगे! ईश्वर की व्यवस्था के रूप में आया हुआ वक्ता वो स्वयं नहीं बोलता, उसके होठ पर और जीभ पर माँ सरस्वती की अंगुलियां आती हैं। कवि के हृदय के अंदर, वक्ता के हृदय के अंदर भगवान हैं। वक्ता भी कवि है। कथा के शब्द को पकड़ो तब अपने ढ़ंग से उसका अर्थ मत कीजिए। शास्त्र ने क्या अर्थ किया है? और शास्त्र जिसने पचाया है अथवा शास्त्र ने जिसको चारों हाथ से आशीर्वाद दिया है, वो क्या अर्थ करता है, उसे पकड़ो।

कथा में व्यंग्य आये तब व्यंग्य है ऐसा समझना चाहिए। कथा का व्यंग्य संदेशमूलक होता है, द्वेषमूलक नहीं होता। मेरे और आपके लिए कोई कुछ बोलता है वो संदेशमूलक हो तो उसका आभार मानना चाहिए परंतु द्वेषमूलक बोलता हो तो उसका कुछ सुनना ही नहीं। तो कथा में आनेवाले व्यंग्य को समझें। वक्ता की जवाबदारी है। किसीके लिए उसे द्वेष नहीं होगा पर व्यंग्य संदेशमूलक हो।

श्रोता को शब्दार्थ के साथ ही साथ भावार्थ भी समझना चाहिए। कथा को स्नेहात्मक भाव से समझना चाहिए। कृष्णशंकर दादा कहते थे कि कथा स्नेहात्मक होनी चाहिए; सूत्रात्मक होनी चाहिए; सत्यात्मक होनी चाहिए; स्मरणात्मक होनी चाहिए; सेवात्मक होनी चाहिए। मेरी आत्मा की जागृति के लिए इन तीन घण्टे की कथा में से कौन-सा सूत्र योग्य लगता है, उसको पकड़ने की तैयारी के साथ श्रवण। सभी सूत्र सबके लिए न भी हो। अपने लिए जो सूत्र हो उसको पकड़ लेना चाहिए। मेरा अनुभव है, अपने कथाजगत का बखान नहीं करता परन्तु मैं किसी भी कथाकार को सुनने जाता हूं; मुझको कुछ न कुछ नया मिलता है। कथा में हमारे अनुकूल हो ऐसा कुछ न कुछ मिलता ही है। आप के दरवाजे खुले होने चाहिए।

किसी भी जगह आप पूर्वग्रहमुक्त चित्त से सुनें तो कुछ नया मिलता ही है। जलालुद्दीन रूमी से उसके शिष्यों ने पूछा कि हमें आपको ठीक से सुनना हो और पचाना हो तो किस विद्या का उपयोग करना चाहिए? तो रूमी बोला,

चार वस्तु का ध्यान रखना चाहिए। १. कोमल बनकर सुनना; विनम्र बनकर के, अभिमान मुक्त चित्त से सुनना कि मुझको इसमें कुछ आता नहीं है। २. कथा कितनी लम्बी चलेगी ऐसा अधीर बनकर कथा मत सुनना। धैर्य रखें। आधे घण्टे की कथा सुनना हो तो साढ़े बारह बजे आइए। ३. हो सके तब तक शरीर का संतुलन बनाये रखें। ये सब मनोवैज्ञानिक वक्तव्य हैं। कथा में बहुत हलन-चलन नहीं करे। जब कि मैंने तो सब छूट दे रखी है। पर बहुत से आदमी एक जगह बैठ नहीं सकते! ४. ऐसे आदमी की कथा सुनें जो शकुनवंत हो। क्योंकि शकुनवंत जहां बैठ कर जाते हैं वो कोना भी महकता रहता है। किशन बिहारी नूर का शेर है-

यहां कोई आया भी है और ठहरा भी है।
घर की दहलीज़ पर उजाला बहुत है।

यहां कोई आया था। यहां कोई ठहरा था। तो आठ प्रकार से कथा सुनी जाती है। एक कथा बहुत गजब का काम कर दे साहब! ये माध्यम जैसा-तैसा नहीं है। मैं कथा कहता हूं इसीलिए नहीं कहता। पर अच्छी बातें जहां से मिलें वे सब कथा है। जो निष्काम भाव से जहां-जहां बोलते हैं; द्वेषमूलक नहीं, संदेशमूलक बोलते हैं वो हरिकथा है। तो आठ लक्षण श्रोता के हैं। षड्धा लक्षण कथा के हैं। ऐसी शास्त्रीय चर्चा कथाओं की हैं। ऐसी कथा भगवद् कृपा से हमने महुवा में आरंभ की है। कथा का अधिक निरूपण करें तब इतना ही कहूंगा कि जैसे आदमी के शरीर में पांच विषय जुड़े हुए हैं शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध। भगवान की कथा को शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध पांच वस्तु है।

कथा को शब्द लागू पड़ता है। शब्दमयी कथा होती है। पर कथा के शब्द वो हैं, जिसे बोलने से अपना मंगल हो और सुनते ही सुननेवाले का मंगल हो। 'मंगलानां च कर्त्तारौ वन्दे वाणीविनायकौ।'

कथा का स्पर्श करते हैं अर्थात् चार वस्तु होती है। देह की वृत्तियां कम होती हैं। कोई व्यक्ति पोथी लेने जाता हो उसका फोटो पाड़ना और पोथी रखने के बाद उसका फोटो पाड़ना। उसके शरीर के केमिकल्स बदलते हैं। कथा के स्पर्श का विज्ञान है। इसीलिए कहता हूं कि कथा और भक्ति पर वैज्ञानिक संशोधन होंगे; पचास-साठ वर्ष के बाद करने ही पड़ेगें। ये सिद्धांत नहीं, ये विज्ञान है। परम वैज्ञानिकों ने कथा शुरू की है। 'वन्दे विशुद्ध विज्ञानौ' वाल्मीकि वैज्ञानिक हैं, हनुमानजी वैज्ञानिक हैं, कुंभज ऋषि वैज्ञानिक है। इन सबने विज्ञान में विशारद किया है; उन्होंने कथाएं गाई हैं। तो स्पर्श है तो देह की वृत्ति को बदलता है। क्योंकि पोथी को हाथ छुआकर ऐसा बोलते हैं? इससे बहुत मिलता है यार! उसके स्पर्श का अनुभव होता है। शरीर को भी स्पर्श करती है और कथा मन को भी स्पर्श करती है। मन को तभी कथा स्पर्शी है कहलायेगा जब बुद्धि का भटकाव बंद हो और निर्णयात्मक बने। चित्त को तभी कथा स्पर्शी कहलायेगी कि चित्त के सभी कर्म और संस्कार मिटने लगते हैं। सभी चित्र डिलिट हो जाते हैं। अहंकार को कथा स्पर्श करती है तब अहंकारवाला आदमी नमने लगता है।

कथा का रूप उसे कहेगें, जो श्रोता और वक्ता को स्वरूप का बोध कराए। जिसने कथा के स्वरूप को समझा है उसे अपने स्वरूप का संधान हुआ है। भगवान शंकर कथा कहते हैं, शुकदेवजी कथा कहते हैं, महापुरूष कथा कहते हैं तब उन्हें ऐसा स्वरूप भान होने लगता है, उन्हें ऐसा लगता है कि कथा अब आगे कैसे ले जाती है? शायद छोड़ देनी पड़े! उसे ट्रेक बदलना मुश्किल पड़ता है।

कथा का मूल रस शांत रस है। फिर करुण रस, बीभत्स रस, हास्य रस। कविता के सभी रस कथा में आ ही जाते हैं। एक कथा ऐसी करनी है कि रोज एक रस। एक दिन वीर रस; एक दिन करुण रस; एक दिन शृंगार रस; एक दिन बीभत्स रस, बीभत्स मतलब मर्यादा में। एक दिन भयानक रस। एक दिन ऐसा आये कि लड़के सो जायें माँ की गोद में! एक दिन अद्‌भुत रसयुक्त! एक दिन ऐसी कथा कि तीन घण्टे खिलखिलाकर हसा ही करें। एक दिन ऐसी शृंगार रसवाली कथा करनी है कि कुंआरों को लग्न करने की इच्छा हो जाये! 'हनुमानचालीसा' बंद कर दें और 'शिवचालीसा' शुरू कर दें। ऐसा मनोरथ है। समाज को पता तो चले कि कथातत्त्व क्या है? कथा का मूल रस है शांत रस। शांत रस वही निष्पन्न कर सकता है, जिसकी कामना अधिकांशतः समाप्त हो गई हो। जब तक कामना होगी तब तक हमको तरंगायित करेगी ही, शांत नहीं होने देगी हमें।

कथा की गंध का क्या कहना? चारों और उसकी खुश्बू फैलती है। महुवा का स्वाहीली भाषा में अर्थ होता है फूल। महुवा का एक अर्थ है प्रियतमा। जहां फूल होगा वहीं मालन होगी। कथा महुवा में है पर उसकी खुश्बू चारों तरफ है। लाईव टेलिकास्ट में लोग सुनते हैं वो खुश्बू ही है न! फूल हर जगह नहीं जा सकता, खुश्बू हर जगह जाती है। परवीन शाकीर कहती हैं-

तेरी खुश्बू का पता करती है।
मुझपे अहसान हवा करती है।

कथा छूपी नहीं रहती, चारों तरफ उसकी महक फैलती है। तो कथा को शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध है। ऐसी कथा हमने तीन स्मरण में 'मातृदेवो भव,' 'पितृदेवो भव,' 'आचार्यदेवो भव' के लिए शुरू की है।

बाप! जगत में बहुत प्रकार के अनर्थ हैं। 'श्रीमद्‌भागवत' में अर्थ के पंद्रह अनर्थ बताए हैं। परन्तु भगवान की कथा चार अनर्थों का नाश करती है। हम सभी

इसीलिए गाते हैं, सुनते हैं, इसीलिए इतना विराट आयोजन करते हैं कि अपने अनर्थ खत्म हों। इन चार अनर्थों का नाम पहले कहता हूं। १. पापजन्य अनर्थ, २. पुण्यजन्य अनर्थ, ३. भक्तिजन्य अनर्थ, ४. ज्ञानजन्य अनर्थ।

पापजन्य अनर्थ; पाप के कारण जो भी कोई अनर्थ हुए हों। 'पाप' शब्द प्रयुक्त कर रहा हूं इसलिए डरने की जरूरत नहीं है। मैंने कल भी कहा था कि हम सब कर करके पाप भी कितना कर सकते हैं? अपनी बिसात क्या है कि हम बड़ा पाप कर सकें? पाप करना नहीं चाहिए, पर पाप से डरना नहीं चाहिए। क्योंकि पापजन्य अनर्थ उत्पन्न होते हैं। पापजन्य अनर्थ तीन हैं। एक तो सब से डर लगता है। अगले को पता ही नहीं होता फिर भी पाप करनेवाले को डर लगता है कि इसको पता होगा तो? किसी से नहीं डरता होगा तो अन्तरात्मा से डरता है। निर्भय तो सत्य द्वारा ही होते हैं, पाप से नहीं होते।

दूसरा पाप ये है कि हमारे पाप कभी-कभी छाया फल देते हैं। शास्त्र में छाया फल है, पाप करता है उसके साथ जो जुड़ा होता है उसको भी थोड़ा फल भोगना पड़ता है। एक आदमी कुटुंब में पाप करता है तो पूरे कुटुंब को सहन करना पड़ता है। जैसे दाहिने हाथ में फोड़ा हो तो वेदना पूरे शरीर को होगी। घर में एक जन को बुखार आये तो पूरे घर का खाना छूट जाता है। कर्म के सिद्धांत में कर्म करता है उसको ही फल मिलता है वो ठीक है। परन्तु छाया कर्म भी होता है। एक व्यक्ति की उदासी, चिंता घर के अनेक सदस्यों को उदास कर देती है। पाप का तीसरा अनर्थ है, हमें मूढ़ कर देती है, अंधा कर देती है! हमें सूरज दिखता ही नहीं है। दीप जैसा सत्य सामने हो तो भी 'जथा उलुकहि तम पर नेहा।' तुलसी कहते हैं, उल्लू मानते ही नहीं कि दिवस उग रहा है। ये पाप जन्य अनर्थ हैं।

भगवान की कथा के द्वारा हम सब निर्भय होते हैं। परीक्षित निर्भय हुआ कि भले सर्प मुझे दंश दे; सातवें दिन मेरे बुद्धपुरुष की हाजिरी में काल आये तो भी मुझको कोई चिन्ता नहीं, क्योंकि मेरा बुद्धपुरूष शुकदेव बैठे होंगे तो मुझको किसका डर है? पाप का जो डर लगता है, उस अनर्थ को कथा नाश करती है। पाप द्वारा परिवार को जो थोड़ी कर्मछाया भोगनी पड़ती है अनर्थ के रूप में। भगवान की कथा से इस अनर्थ का नाश होता है। अपनी मूढ़ता समाप्त होकर नई दृष्टि हम को प्राप्त होती है। तो भगवान की कथा पापजन्य अनर्थों का नाश करती है।

पुण्यजन्य अनर्थ; पुण्यजन्य अनर्थ भी खड़ा होता है। मैंने इतना बड़ा पुण्य किया ऐसे भाव से अनर्थ जनमता है। मैंने इतना सारा दान दिया, वो दाता को अनर्थ जन्मा। मैंने इतना बड़ा यज्ञ किया। ये सब पुण्यजन्य अनर्थ हैं। कलसरिया परिवार ने इतना बड़ा यज्ञ किया, ये कितना बड़ा पुण्य है, पर उसमें मैंने ये कर्म किया यह विचार आये तो अनर्थ जनमने का डर है। पर प्रभु की कृपा कि नहीं जनमता क्योंकि मुझको परेश कह रहा था कि मेरे पिता जनरल रसोई में खाने जाते हैं! इसका मतलब, कभी पुण्यकर्म से अहंकार जन्म लेता होगा, वो आया नहीं। ये प्रभु की कृपा है।

'रामायण' में लिखा है, बहुत पुण्य होगा तो संत मिलेगें। 'पुन्य पुंज बिनु मिलहिं न संता।' पर कोई संत मिल जाये फिर हमें ऐसा लगता है कि मेरी इस संत के साथ जैसी पहचान है वैसी किसी के साथ नहीं, तो ये आप के पुण्य का अनर्थ है। मेरे साथ आना, तारीख ले दूंगा। मेरे साथ ऐसा बोले तो फंसे समझना! सीधे आओ मेरे पास। तलगाजरडा का रास्ता खुला है। तुलसी कहते हैं, साधु की पहचान के चार लक्षण हैं। ऐसा साधु मिल जाए। जिसका मेरा-तेरा मिट गया हो; किसी को पराया न गिने। जिसके मोह का अंधकार मिट गया और गुरु के शब्द का उजाला हो गया। जिसको आत्मप्रकाश हुआ है, वो संतराज है, संतशिरोमणि है। ऐसा कोई मिले तो वो कपड़ा कैसा पहना है उसकी चिंता मत करो। महापुरूष भगवा कपड़ा पहने तो हम पहचान सकते हैं कि ये संन्यासी है, साधु है। बाकी मूल संतत्व किसी भी रूप में हो, किसी भी अवस्था में हो ऐसे लक्षणोंवाला साधु पुण्य के प्रताप से मिलता है। ईश्वर आपको मिलें और ऐसा कहें 'मांग मांग', तो दूसरा कुछ मत मांगना, इतना ही मांगना कि हे ईश्वर, आप को याद करते हुए जिसकी आंखों में आंसू आ जाते हो ऐसे किसी साधु की भेंट करा दे।

'रामायण' के आधार पर एक वस्तु याद रखना, भक्ति की परीक्षा हमेशा भगवान करते हैं, दूसरा कोई भी नहीं कर सकता। 'रामायण' का हस्ताक्षर है इस बात पर कि भक्ति की परीक्षा राम ही कर सकते हैं और भक्त की परीक्षा रावण ही कर सकता है। दूसरे किसी में सामर्थ्य नहीं। बड़ी से बड़ी परीक्षा है आग लगाने की। जानकी भक्ति है, उसकी परीक्षा राम ने की। हनुमानजी से कहा कि सीताजी को अग्नि कसौटी में से प्रवेश कराओं। यानी ऐसी भक्ति करनी चाहिए कि परीक्षा लेने भगवान को आना पड़े। भक्त की परीक्षा रावण ही करता है। हनुमानजी भक्त हैं, उनकी परीक्षा रावण ने की कि आग लगाओ! दोनों जगह अग्नि है।

देवता और असुर दोनों ने साथ मिलकर समुद्रमंथन किया। फिर बहुत कुछ निकला। भगवान शंकर प्रगट रूप में इस मंथन में जुड़े न थे। शंकर को खबर थी कि ऐसा खाली-खाली नहीं मथना चाहिए। इसलिए भगवान शंकर उसमें सक्रिय न थे। भगवान विष्णु इसमें सक्रिय थे। पर थोड़े कम थे। वो तो लक्ष्मीजी निकलीं इसलिए सक्रिय

हो गये! ब्रह्माजी तो मंथन की प्रक्रिया में बहुत कम दिखे हैं। विष निकला तो हुआ, कौन पियेगा? तब देवताओं ने विष्णु को कहा। विष्णु कहते हैं, ये कठिन है। अब शंकर को कहें। शिवजी को जहर पिलाने स्वार्थी देव आये हैं यह खबर पार्वती को लगी। सामान्य स्त्री भी अपने पति को कोई विषम परिस्थिति में डाले तो सहन नहीं कर सकती। 'मानस' में विषम परिस्थिति का नाम ही विष है। पार्वती ने शिव को मना की, आप मत पीना। ये स्वार्थी लोग हैं। शिव ने समझाया कि देवी, ये परोपकार हैं; दूसरे के लिए पीना पड़ता है। शिव नहीं माने और कहे कि आप पत्नी हैं, आज्ञाकारी है, मेरी बात मान लो। पत्नी को पति कहे वैसा करना चाहिए। एकाद वर्ष तो करके देखो ये प्रयोग। आप का घरवाला शैतान होगा तो भी साधु हो जायेगा। शिष्य को गुरु की बात मान लेनी चाहिए। एक वर्ष तो मान लेनी चाहिए। आप का गुरु बबूल होगा तो भी कल्पतरु हो जायेगा। 'आग्या सम न सुसाहिब सेवा।' बाप की आज्ञा एक वर्ष तो मान कर देखें! इसलिए कहता हूं कि 'रामायण' धर्मशाला नहीं, प्रयोगशाला है। पर आप एक बार तो प्रयोग कीजिए। भारतीय संस्कृति है, ये पाश्चात्य संस्कृति नहीं है। ये भारत है, जहां जन्म लेने की इच्छा देवताओं को भी होती है। भारत का गौरव वो गौरव है। तीन बार दोनों हाथ उठाकर बोलिए, 'राष्ट्रदेवो भव।'

चौबीस घण्टे से मेरे मन में कस्मकश चल रही है कि निवेदन करूं या नहीं? पर आज के अखबार का एक वाक्य पढ़कर मुझको थोड़ी ठंड़क मिली कि उसमें भारतीय सेना बोली है कि निर्णय हम करेगें, स्थल और समय की राह देखें। धन्यवाद है अपने देश की आर्मी को; आज का निवेदन है कि स्थल और समय हम लोग निश्चित करेगें, किसी नेता को पूछने नहीं जायेगें; और पूछना भी मत! बहुत अच्छी बात है। इतने वर्षों से सेना को छूट नहीं दी जा रही थी! मरते हैं वहां और मंत्रणाएं दिल्ली में होती हैं! एक मीटिंग वहां जाकर करो! सेना का निवेदन मुझे पसंद आया। मैं पूर्ण अहिंसावादी इन्सान हूं। परन्तु राष्ट्र का गौरव है। कम से कम राष्ट्र की बात आये तब तो अन्य लोग नो बोल मत फेंकें! जैसा-तैसा निवेदन मत करो! राष्ट्र की बात हो तब सब को एक रहना चाहिए। इसमें अपने-अपने हित की बात नहीं करना चाहिए। हितों की बात करनी हो तो इस्तीफा दे दो। मैं इस देश का नागरिक हूं। व्यासपीठ से बोलने का मुझको अधिकार है। साधुबावा नहीं बोलेगा तो दूसरा कौन बोलेगा? राष्ट्र की महानता हैं।

एक दूसरे की बात मानें। एक महीना, दो महीना, एक वर्ष बात मानें; अगला व्यक्ति चाहे जैसा होगा, ईश्वर उसमें परिवर्तन लायेगा। पर हम सब राह नहीं देखते! भवानी भारतीय नारी हैं। उनका पति ज़हर पिये यह उसको पसंद नहीं होगा, इसलिए जगदंबा भवानी ने हाथ पकड़ा कि महादेव, आप मत पियो; मुझे पता है आप अजर-अमर हैं; मैं आप की धर्मपत्नी हूं। ये सभी तो स्वार्थी झुण्ड हैं। जगत में सब कुछ इसी तरह से चलता है। इसमें कोई फेर नहीं पड़ता। पात्र बदलें हैं, घटना बदली है। बाकी ऐसी की ऐसी परंपराएं जगत में चलती है। शिव समझाते हैं कि जगत के कल्याण के लिए मुझे पीना चाहिए। जहां हलाहल का प्याला उठाया है वहां तो ज्वालाएं उठने लगी। वो पी गए। उसका कारण ये कि उस वक्त वे बोल रहे थे राम, राम राम। तुलसी कहते हैं, राम और विष मिलाया उसमें से मिला विश्राम। मैं कल कह रहा था कि अमृत पी कर हंसते रहना कोई बड़ी बात नहीं है। जहर पीकर हंसते रहना उसकी खुमारी है। महादेव ज़हर पीने लगते हैं। एक बार मेघाणी ने कहा कि-

छेल्लो कटोरो झेरनो आ पी जजो बापु।
सागर पीनारा अंजलि नव ढोळजो बापु।

दूसरी गोळमेजी परिषद के वक्त गांधीजी स्टीमर में बैठ गये और मेघाणी को विलंब हुआ तब पत्र भेजा। सफल न होगे तो कुछ नहीं, पर बापू, आप ज़हर पी आओ। वहां से समाधान का पूतला लायें न लायें, कोई चिन्ता नहीं है! देश आप के साथ खड़ा है बापू! हम आप को आलिंगनबद्ध करेगें मेरे बाप! आप जाकर आइए।

महादेव ने जैसे ही प्याला उठाया, दिशाओं में से ज्वाला निकलती है! देवताओं की आंखें फट गई! होठ से लगाकर आधा पीया, तब पार्वती से नहीं रहा गया, प्याला ले लिया। यदि नाभि तक ये ज़हर गया होता तो यह जगत खत्म हो जाता। शिव देवी से कहने लगे कि लाइए, लाइए, उसमें वो घूंट उतर नहीं पाया और नीलकंठ हो गया बाबा! बाप! आपसे मुझको कहना है कि आधा प्याला रह गया, उसका क्या हुआ? उस शंकर परंपरा में जितने साधु है, उन्हें ज़हर पीना पड़ता है। कभी मीरां ने पीया, कभी सुकरात ने पीया, कभी नरसिंह मेहता ने पीया, कभी नानक ने पीया। शंकर परंपरा के महापुरूष होगें, जगत कल्याण के लिए जनम होगा, उसे ज़हर पीना पड़ेगा और वो पीकर भी प्रसन्न रहते होगें। अभी भी वो ज़हर है। मूलदास को वो पीना पड़ा। सूफियों को पीना पड़ा, जेन को पीना पड़ा। वो बचा हुआ ज़हर वैसे का वैसा है। जिसके भाग में आया वो पीते गये और अमर होते गये। ईश्वर उसी को ज़हर दिलाता है जो हंसते-हंसते पी सकते हैं। 'हे जी राणाजीने कहेजो के पाछां झेर मोकले।' सुकरात जब धीरे-धीरे ज़हर पी रहे थे तब उन्हें कहा गया कि जल्दी पी जाओ। इसमें तो मरोगे नहीं तुम! तब सुकरात ने कहा कि नहीं मरूंगा तो ओर पीउंगा।

हवे मित्रो बधा भेगा मळी वहेंचीने पी नाखो,
जगतनां ज़ेर पीवाने हवे शंकर नहीं आवे।
- जलन मातरी

साधु को पीना चाहिए, क्योंकि उसको पता है कि ये शंकर का जूठा है, इसको पीने की एक लिज्जत होती है। ये परंपरा ऐसे ही चली है। कितनों ने ज़हर पिया और कितने पीते रहेगें।

ज्ञानजन्य अनर्थ; मुझको इतना आ गया, मैं इतना जानता हूं, इसमें से अनर्थ जनमते हैं। सोक्रेटीस तो कहता था, जो कुछ भी नहीं जानता वो सब कुछ जानता है। और जो जानता है, ऐसा बोलता है वो कुछ नहीं जानता। अब तो अच्छा हुआ है कि रामकथा, भागवतकथा, शिवकथा का इतना प्रचार किया हमारे कथाकारों ने, नहीं तो दो-दो चौपाई आती है उसके समधी बात कहते कि हमारे समधी तो 'रामायण' घोलकर पी गये हैं! मेरे बचपन का अनुभव है। वो बुज़ुर्ग मुझ से कहते, लड़के, इस चौपाई का अर्थ क्या होगा? मुझको आता हो तो भी जवाब न देता। दूसरी जगह जाकर बड़ाई करते कि बापू को भी जवाब नहीं आता। जवाब के तुम लायक न थे! खुद कुछ जान गया है ये ज्ञान का अहंकार है।

भक्तिजन्य अनर्थ; भक्ति करते-करते जो ज्ञान आता है वो भक्तिजन्य अनर्थ है। हम माला करते हैं वो दूसरे को पता चलना चाहिए, ये भक्तिजन्य अनर्थ है। भगवान की कथा चार-चार अनर्थों को निर्मूल करती है।

'पुण्यं पापहरं सदा शिवकरं विज्ञानभक्तिप्रदं' विज्ञान उसे कहते हैं जिसमें दंभ नहीं चलता। इसलिए दो कथाओं से कह रहा हूं भक्ति विज्ञान है। पुण्य में से उत्पन्न हुआ अनर्थ, पाप में से उत्पन्न हुआ अनर्थ, ज्ञान कल्याणकारी कहलाता है पर ज्ञान द्वारा जो अहंकार आता है उसके अनर्थों का नाश करती है और भक्ति के दंभ को भक्ति का विज्ञान दूर करता है। 'मायामोहमलापहं सुविमलं प्रेमाम्बुपुरं शुभम्' कहके तुलसी 'मानस' में उद्घोषणा करते हैं।

भगवान के कथा की ये महिमा है। ऐसी कथा महुवा के आंगन में हमने शुरू की है। कथा के क्रम में भगवान राम और लक्ष्मण को लेकर जनकपुर पहुंचे हैं। वहां की कथा को आगे बढ़ाउं उससे पहले दो-तीन मिनट भगवत् नाम का संकीर्तन। अकेले में घूनते हैं वो धूण कहलाती है; समूह में धूनते हैं वो धून कहलाती है। तुषारभाई शुक्ल ने 'धूण' पर कविता भेजी है।

मस्ती-फकीरी हाल छे मारो, एकलो एकलो धूणुं।
हजी महेके अंदर अंदर हैयानो अेक खूणो।
एक भरोसो रामनामनो, लागे नहीं एने लूणो।

भगवान राम, लक्ष्मण मुनि के साथ जनकपुर के 'सुंदरसदन' में ठहरे हैं। सांझ हुई। जनकपुर में राम की उम्र के जितने कुमार थे उन सब को राम से मिलना है। राम के उम्र के लड़कों के जीव का जो भाव था उसे जीवधर्म के आचार्य लक्ष्मणजी भांप गये और उनके मन में इच्छा हुई कि भगवान के पास ये लोग नहीं आ सकते हैं, भगवान को बाहर जाना चाहिए। ये विचार मुझको पसंद है। अपने समाज में बहुत बड़े आदमी हुए हैं। अनेक क्षेत्र में; इसका हमें गौरव है, पर छोटा आदमी उनके पास नहीं जा सका और बड़ा आदमी स्थान छोड़कर उनके पास नहीं जा सका उसका एक अंतर सदैव रहा है। दोनों इकट्ठे होने चाहिए। तुलसी के रामराज्य की परिकल्पना ऐसी है कि राम को महल में से मिलने के लिए बाहर आना चाहिए। लक्ष्मण के मन की गति राम समझ गए। राम का इरादा था, लक्ष्मण की इच्छा पूरी करूं; नगर का दर्शन करके नगर को दर्शन दूं। विश्वामित्र ने मंजूरी दी है।

राम-लक्ष्मण महल से बाहर आयें। राम की उम्र के सभी नवयुवक भगवान को घेर लेते हैं। पूरा गांव पागल बना है। जनकपुर वेदान्तियों का नगर है। यहां नाम-रूप को मिथ्या माना जाता है। पर सभी को राम का रूप देखने की इच्छा हुई और नाम जानने की इच्छा हुई। मिथिला के ज्ञानी पुरुष दोनों तरफ कतार में खड़े रहे। बीच के रास्ते से राम की उम्र के लोग राम को लेकर आगे बढ़ते हैं। ज्ञानी कम बोलते हैं, वो भार में रहते हैं, आकर्षण हुआ, पर स्वीकार नहीं करते! तुलसीदासजी ने ज्ञान और वैराग्य को पुरुष कहा है, भक्ति और माया को नारी कहा है। मिथिला की स्त्रियाँ मर्यादा के कारण अपने झरोखे से राम को निहार रही हैं।

नाम-रूप में नगर को डुबाकर प्रभु वापस आयें। संध्या पूजन किया। गुरुदेव की चरण सेवा की, प्रभु ने विश्राम किया। दूसरे दिन की सुबह गुरुपूजा के लिए पुष्प लेने राम-लक्ष्मण जनकपुर के महिला बाग में गये। उसी समय जनक राजा की महारानी सुनयना अपनी पुत्री जानकी को सखियों के साथ भवानी की पूजा करने बाग में भेजती हैं। जानकीजी आती हैं। बाग में प्रवेश किया। भवानी की स्तुति की। अपने अनुरूप वरदान मांगा। एक सखी बगीचा देखने में पीछे रह गई वो राम-लक्ष्मण को देखकर धन्य हो गई। जानकी को कहा, गौरी की पूजा बाद में भी होगी, राजकुमारों को देख लो। सीताजी बाग में गई हैं। राम-सीता एक दूसरे को समर्पित हुए हैं। जानकी राम के रूप में बहुत डूब गई तब सखी उन्हें समय से रोककर मंदिर में ले जाती है। पूरे प्रसंग का तात्त्विक अर्थघटन रामकिंकरजी महाराज से समझने जैसा है। जिसका भाव हो उसका नाम देना चाहिए। मैं लगभग नहीं ही चुकता। बहुत बार हम किसी के विचारों को अपने नाम से चढ़ाकर बोलते हैं वो प्रज्ञाचोरी है। जानकीजी बाग में आकर सरोवर में स्नान कीया। फिर भवानी की स्तुति की वो सखी राम के पास ले गई राम नजदीक आये तो सखी बीच से हट गई। राम के भाव में सीताजी बहुत डूब जाती हैं तब वही सखी उन्हें रोककर मंदिर में ले जाती है। पंडितजी कहते हैं, रामदर्शन करना हो तो पहले बगीचे में जाना चाहिए। बगीचा अर्थात् संत की सभा।

साधु का संग करें; पर उसके हृदय तक पहुंचने के लिए तुलसी कहते हैं, सरोवर में स्नान। पंडितजी कहते हैं, सरोवर में स्नान करना यानी संतहृदय में स्थान मिलना। स्नान के बाद पंडितजी कहते हैं, भवानी की स्तुति करना चाहिए। भवानी यानी श्रद्धा। पहले सत्संग फिर श्रद्धा दृढ़ होगी। तो कोई गुरु मिल जायेगा, जिसने राम को देखा होगा। जो देख कर बोलता होगा। गुरु की प्राप्ति होने के बाद उसको आगे करना चाहिए। सीता जगदंबा है पर सखी ने राम को देखा इसलिए वो गुरुपद प्राप्त की, उसको आगे किया। आगे रखना अर्थात् उसे आदर देना। सखी बीच से हट जाती है। परम तत्त्व को मिलाने के बाद गुरु भी बाधक नहीं बनता।

सीताजी भवानी के मंदिर में गई और भवानी की स्तुति करती हैं। फायदा क्या है इसका मुझे पता नहीं पर नुकसान नहीं होगा। मेरे देश की लड़कियां ये गौरीस्तुति सीख लें तो उन्हें श्रेष्ठता प्राप्त होगी, उन्हें उत्तम घर मिलेगा। इसके प्रयोग बहुतों ने किया है। मैं भय भी नहीं दिखाता और प्रलोभन भी नहीं देता। मेरे देश का युवा गुरुपूजा करे और मेरे देश की लड़की गौरी की पूजा करे, देश में रामराज्य स्थापित हो जायेगा। राम-लक्ष्मण गुरु की पूजा करते हैं और जानकी गौरी पूजा करती हैं। अभी गांवों में छोटी लड़कियां जयापार्वती का व्रत करती हैं। लड़कियों में अभी तेज है। लग्न के मंडप में तेज कन्या में अधिक दिखता है। उसके घूंघट में संस्कार की ज्योति प्रगटित होती है। 'मानस' की ये चौपाईयां पढ़ना।

जय जय गिरिबरराज किसोरी।
जय महेस मुख चंद चकोरी।।

हे हिमालयपुत्री, जय हो। महेश के चंद्रमाँ जैसे मुख की चकोरी, आप की जय हो। गणपति और कार्तिकेय की जननी, आपकी जय हो। जगत को उत्पन्न करनेवाली, पालन करनेवाली, लय करनेवाली, हे दुर्गा, आप की जय हो। स्वतंत्र विहार करनेवाली हे आद्यशक्ति, आपकी जय हो। 'मानस' की कथा में लिखा हैं, मूर्ति हिलने लगी, हंसने लगी, मूर्ति डोलने लगी और मूर्ति के कंठ से प्रसाद की माला नीचे गिरी। जानकी ने प्रसादी की माला अपने मस्तक पर धारण किया है। बुद्धि में ये नहीं बैठता कि मूर्ति बोले? मूर्ति हंसे? डोले? अमुक वस्तु अपने लिए नहीं बनती वो सिद्धांत नहीं बन जाना चाहिए।

श्रद्धानो हो विषय तो पुरावानी शी जरूर?
कुरानमां तो क्यांय पयबरनी सही नथी।

श्रद्धा का विषय हो तो होगा। मेरा तर्क ऐसा है कि जानकी स्तुति करे और भवानी की मूर्ति बोले इसमें आश्चर्य क्या है? अपने यहां ऐतिहासिक प्रसंग है कि जगदंबा की स्तुति कवियों ने की, रजवाडे या उनके आश्रितों ने की, मुश्किली में पड़ी कुटुंब की लड़कियों ने की तब मूर्तियों ने जवाब दिया है। मूर्ति बोलती है यदि हममें अपनापन हो तो! अपने साथ तो घरवाले भी नहीं बोलते! मूर्ति कहां से बोलेगी? हम में विनय और नियम हो तो मूर्ति बोलेगी, हंसेगी।

आज सब उल्टा हो रहा है। यहां मूर्ति हिलती है, बोलती है, मूर्ति के गले में से माला गिरती है। जानकी स्थिर हैं। जो निष्ठा में स्थिर होगी उसके समक्ष मूर्ति बोलती है। अभी मूर्ति स्थिर है और हम सब धूनते हैं। तब मूर्ति बोलती थी और साधक स्थिर था, आज साधक धूनता है और मूर्तियां स्थिर हो गई है। भवानी ने जानकी को आशीर्वाद दिया, तुम्हारे मन में जो सांवरा बस गया है, वो तुझे मिलेगा। जानकी के मन में हर्ष नहीं समाता और जानकी का बायां अंग शकुन के लिए फरकने लगता है। अपने यहां शकुनशास्त्र का नियम है कि महिला का बायां अंग फरके तो अच्छी निशानी है और पुरुष का दायां अंग फरके तो शकुन है। उसमें भी पूजा, पाठ, स्तुति के समय अंग फरके तो अधिक अच्छा गिना जाता है। फरकना अर्थात् फरक के बंद हो जाये तो। घण्टे-घण्टे फरके तो डाक्टर को बताना चाहिए। जानकीजी सखियों के साथ माँ सुनयनाजी के पास आई और लड़की ने दिल खोलकर बात की। पुष्प लेकर राम-लक्ष्मण गुरु के पास आकर पूजा करते हैं। दोनों भाइयों को आशीर्वाद दिया है। दोपहर के भोजन के बाद विश्राम हुआ।

शंकर परंपरा के जितने साधु हैं, उन्हें ज़हर पीना पड़ता है। कभी मीरां ने पीया, कभी सुकरात ने पीया, कभी नरसिंह मेहता ने पीया, कभी नानक ने पीया। शंकर परंपरा के महापुरुष होंगे, जगत कल्याण के लिए जनम होगा, उन्हें ज़हर पीना पड़ेगा और वे पी कर भी प्रसन्न रहते होगें। अभी वो ज़हर है। मूलदास को पीना पड़ा, सूफियों को पीना पड़ा, झेन फ़कीरों को पीना पड़ा। वो बाकी रहा ज़हर वैसे का वैसा है। जिसके भाग में आया वो पीते गये और अमर होते गये। ईश्वर उसको ही ज़हर दिलाए जो हंसते-हंसते पी सकता है।

कथा दर्शन

- कथा अमृत है। कथा का अमृत मुंह से नहीं, कानों से पीया जाता है।
- कथा जैसा बड़ा कोई दान नहीं और कथा गानेवाले जैसा बड़ा कोई दानवीर नहीं।
- कहानी सुला देती है, कथा सोये हुए को जगा देती है।
- कथा में से हमें अनुकूल हो ऐसा कुछ न कुछ मिलता ही है।
- कथा का व्यंग्य संदेशमूलक होता है, द्वेषमूलक नहीं होता।
- रामनाम जैसी कोई औषधि नहीं।
- कुसंग के कारण आये आवरण बदल सकते हैं; उसका एक ही साधन है सत्संग।
- भक्ति-शास्त्र दर्शन का विषय नहीं; चिंतन या शब्द का विषय नहीं; यह एक विज्ञान है।
- सनातन धर्म जैसा कोई मानवधर्म नहीं है।
- धर्म की दीवारें निर्मित न हो इसलिए दरवाज़े बनाओ।
- सद्गुरु का काम जो खुले हो उसको ढांकने का है।
- ईश्वर की सार्वभौम करुणा को प्रगट करने का काम कोई साधुपुरुष ही कर सके।
- साधुपुरुष निंदा न करे, निदान करे।
- जगत कल्याण के लिए जिसका जन्म हो उसको ज़हर पीना पड़ेगा।
- शरणागति कभी स्वतंत्रता की बाधक नहीं बनीं।
- मुस्कुराहट मुक्ति है। मानव हंसता होना चाहिए।
- परिणाम आपके कर्मों से नहीं आयेगा; परिणाम आयेगा ईश्वर के विधान से।
- हम कई बार अन्य का हित करते हैं लेकिन उनको पवित्र नहीं कर सकते।
- दूसरों की निंदा करने की इच्छा हो तो समझना कि हमारी आंख पवित्र नहीं है।
- हम अहंकार के घर में ज्यादा से ज्यादा रहते हैं।
- सुरी तत्त्वों से आसुरी तत्त्वों बहुत बलवान होते हैं; उनमें ऊर्जा ज्यादा होती है।

मानस-कथा - ६

निंदा, इर्ष्या और द्वेष तीनों बड़े कषाय हैं

'मानस-कथा', इसके विषय में हम सब बातें कर रहे हैं। बहुत-से प्रश्न हैं, 'बापू, कथा कितने प्रकार की होती है?' कथा अनेक प्रकार की होती है। पर मुख्यत: तीन प्रकार से कथा चलती है। इन तीनों के भी बाहर एक चौथा प्रकार है, पर वो तो किसी-किसी जगह ही होती है। कथा का एक प्रकार है रजोगुणी कथा। जिस कथा में अतिशय रजोगुण की प्रधानता होती है। व्यासपीठ को खूब सजाया होता है। ये खूब स्वागत योग्य है; इसका विरोध नहीं है। ये सभी बातें संदेशमूलक है, द्वेषमूलक नहीं है। ये आप के मन नें ध्यान रखियेगा। और इतनी स्पष्टता के बाद भी कोई अन्य अर्थ करे तो जवाबदारी आपकी, मोरारिबापू की नहीं हैं। व्यासपीठ को आप खूब सजाते हैं, झकाझक करते हैं, व्यासपीठ की पृष्ठभूमि में खूब भड़कदार पृष्ठभूमि तैयार करते हैं। श्रोताओं में भी रजोगुणी वृत्ति अधिक हो ऐसे प्रश्न होते हैं। वक्ता स्वयं रजोगुणप्रधान हो या उसकी वेशभूषा उसकी हलन-चलन, उसकी अदाओं में हमको रजोगुण पकड़ में आता है। जिस कथा में अधिक प्रलोभन बताए गये हो; आप कथा करायेंगे, सुनेंगे तो आपको ऐसा फायदा होगा। ये सभी कथाएं रजोगुणप्रधान कथाएं हैं और उसकी भी महिमा है।

धीरे-धीरे इन सब गुणों में से एक गुण से दूसरे में, दूसरे में से तीसरे में हमें प्रवेश करना होता है। हम सभी संसारी हैं। मतलब ये तो केवल आपने पूछा इसलिए मेरा इतने वर्षों का अनुभव गुरुकृपा से आपके साथ बांट रहा हूं। वो खराब नहीं है। आप इसकी ओर उपेक्षा न रखिएगा। मेरे लिए कथातत्त्व बहुत महत्त्व का तत्त्व है। आपका मोरारिबापू कहना चाहता तो ऐसा बेधड़क कहेगा कि अब मेरी कोई निष्ठा कर्म में नहीं रहीं। कर्म कर रहा हूं। चौबीस घंटे कर्म करता हूं। 'गीता' ने ऐसा कहा है कि एक क्षण भी कोई कर्म बिना नहीं रह सकता। पर मोरारिबापू की कोई निष्ठा अब कर्म में नहीं है। कर्म चलते हैं। और उसमें भी मैं कहता रहता हूं, चलता है तब तक चलता रहेगा। बाकी कोई कर्मनिष्ठा नहीं रही। कर्म करना ही पड़ेगा। मैं रोज आपके सामने हाज़िर होता हूं। शाम को लोगों से मिलता हूं। लोकहित होता है ऐसे कारणों के लिए कथा भी देता हूं। स्वयं ऐसे कार्यक्रम लेता हूं। सतत दौड़ता हूं। ये सभी कर्म हैं। नहीं है ऐसा नहीं पर निष्ठा कर्म में नहीं रही। ये आपके सामने तलगाजरडा का आत्मनिवेदन है। क्योंकि गुरुकृपा से समझ आता जा रहा है, कर्म की गति बहुत गहन है। उसमें हम उलझ जाते हैं। चतुर आदमी को या तो ऐसे कर्म आरंभ नहीं करना चाहिए या तो आरंभ करने के बाद जैसे 'गीता' कहती है, 'सर्वारंभ परित्यागी।' सभी किए हुए आरंभ का हवन कर देना चाहिए।

मुझे आज किसीने ऐसा भी पूछा है कि 'बापू, आप बीच-बीच में 'गीता' की बात करते हैं पर हमें 'गीता' का श्लोक नहीं समझ आता, संस्कृत हमें नहीं आती, गांव में रहते हैं; तो 'गीता' कैसे पढ़े?' 'गीता' का समश्लोकी भाषान्तर हुआ है।

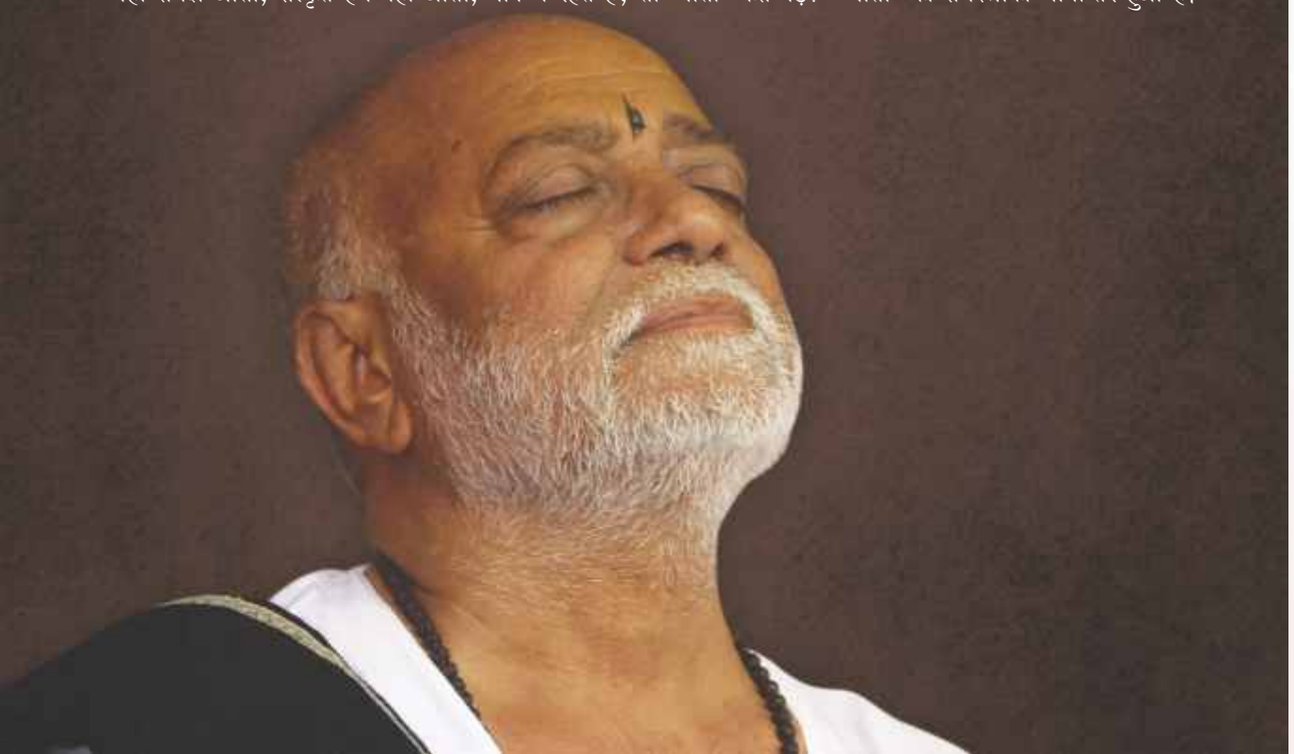

'गीता' में संस्कृत में जो कहा गया है वो अपनी भाषा में कहा गया है। उसे पढ़िए। गाय काली हो या सफेद हो, कोई चिन्ता नहीं; दूध तो सफेद ही निकलेगा। आप संस्कृत में पढ़े या गुजराती में। हां, संस्कृत की महिमा है। उसका अनादर नहीं करना। क्योंकि वो दिव्यवाणी है। हमें संस्कृत न आये इसके लिए हम को आलोचना करने का अधिकार नहीं है। अपनी माँ है यह नहीं भूलना चाहिए। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। मैंने भाषा पर कहा है तब कहा है कि अपनी गुजराती भाषा वो हमारा धर्म है। अपनी भाषा में ही बोलना चाहिए। आप इंग्लिश भाषा में पढ़े, जरूरी है दुनिया में आगे बढ़ने के लिए। पर आप अपने घर में गुजराती भाषा ही बोलें। भाषा जीवित रहनी चाहिए। क्योंकि गुजराती भाषा अपना धर्म है। उसे पकड़ रखें। हिन्दी भाषा यद्यपि राष्ट्रभाषा न हो सकी परंतु राष्ट्र में हिन्दी भाषा की महिमा है। हम कानूनी ढ़ंग से नहीं कह सके। परन्तु हिन्दी को हमने राष्ट्रभाषा का नाम तो दिया ही है।

गुजराती हम सब का धर्म है। हिन्दी हम सबका अर्थ है; अपनी समृद्धि है। हिन्दी हमें सार्थक बनाती है। हम प्रायमरी स्कूल में पढ़ते थे तब राष्ट्रभाषा हिन्दी की वर्धा की परीक्षाएं होती थी। और वो परीक्षा मैंने दी है साहब! चार परीक्षाएं दी हैं। गुजराती धर्म है। माता-पिता से प्रार्थना है, अपने बालक इंग्लिीश मिडियम में पढ़ें, विवेक से सिर पर हाथ से सहलाते हुए कहिए, घर में गुजराती बोलो। गुजराती पढ़ना-लिखना सीखना चाहिए। उसे गुजराती गीत सिखाओ। उसे गुजराती भजन सिखाओ। भगत नहीं बना देना है किसी को पर मूल वस्तु मत भूलिए। 'भगवद्गीता' कहती है, 'स्वधर्मे निधनं श्रेयः।' अपने धर्म में मृत्यु बेहतर है। गुजराती है अपना धर्म। हिन्दी है अपना अर्थ। अंग्रेजी है काम। धर्म, अर्थ काम। अंग्रेजी काम की भाषा है। मुझको अंग्रेजी नहीं आती इसलिए अंग्रेजी की टीका नहीं करूंगा। मुझसे लड़के अंग्रेजी में बोलते हैं, भाई सब बोलते हैं, कोई प्रवचनकार बोलता है, नगीनबापा बोलते हैं, कोई इंग्लिश में धड़धड़ाता है तो मैं प्रसन्न होता हूं। सच में, मुझको बहुत अच्छा लगता है। भाषा काम की है। हमारे लिए अंग्रेजी धर्म नहीं है। काम की भाषा है। सबके साथ समान दृष्टि रखना चाहिए। पर घर में एक माँ है। और घर में एक कोई काम करती है बहन वो काम करती है। हमें समान दृष्टि से देखना चाहिए। परन्तु माँ है वो माँ है और काम करता है वो काम करता है। उसी तरह गुजराती माँ है और अंग्रेजी हमारे घर काम करती है। उसको वेतन दीजिए। वो उम्लायक हो तो अपनी माँ की अपेक्षा उसको दर्जा दो, काम की भाषा है। हमें आती नहीं इसलिए टीका नहीं करनी चाहिए। आती नहीं इसलिए बेकार की कोरीगप भी नहीं मारनी चाहिए। पर सुरेशभाई दलाल ऐसा कहते थे कि वक्ताओं को प्रवचन करते समय कभी-कभी अंग्रेजी शब्द बोलना चाहिए यानी श्रोताओं को ऐसा लगे कि ये भी पढ़ा-लिखा लगता है! मुझको तो मेहता साहब पढ़ाते थे ये पता है। जब एन. टी. शेठ साहब हमें अंग्रेजी पढ़ाते। जे.पी. पारेख हाईस्कूल। उसके बाद एम. एन. हाईस्कूल में अधिक रहे। लम्बा कूर्ता। साहब! मेहता काका का वो लम्बा कूर्ता। हां, मूछ बांकी न थी पर ये सब छेलछबीले गुजराती थे।

लांबो डगलो मूंछ वांकडी,
बोल बोलतो तोळीतोळी,
छेलछबीलो गुजराती मारो...

नरसिंह मेहता की ये भाषा है साहब! अपनी गुजराती भाषा का आद्यकवि अपना मेहता है। वो भाषा हमारा धर्म है। हिन्दी अपना अर्थ है। और अंग्रेजी अपना काम है, उपयोगी है। पढ़ाओ लड़कों को परन्तु घर में, गांव में भाषा को पकड़ रखिए। जहां आवश्यकता हो, अंग्रेजी बोलिए। गुजराती धर्म है। अपना अर्थ हमारी समृद्धि है। हिन्दी कविताएं-साहित्य तो देखिए साहब! गजब का साहित्य है! सभी भाषाओं की महिमा है। उर्दू भाषा।

जिसको रास आ गये हैं तेरे ज़ुल्फ़ के अंधेरें,
वो कभी कहीं न भटके किसी रोशनी के पीछे।

हे मालिक, तेरी करुणा की ज़ुल्फ़ों का जिन को घटाटोप अनुभव हुआ है वो किसी जैसे-तैसे उजाले के पीछे नहीं भागेंगे।

तू अमीर है तो क्या है? मैं गरीब हूं तो क्या है?
तेरा महल बन रहा है मेरी झोंपड़ी के पीछे।

अंग्रेजी काम की भाषा है। अवश्य। मैं प्रसन्न होता हूं सब बोलते हैं तब। वो काम करें, पर माँ तो माँ है। उसको आदर दीजिए; उसको खुब सन्मान दीजिए। वो भाषा काम की भाषा है। पर बाप! संस्कृत वो तो मोक्ष की भाषा है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। इसलिए संस्कृत श्लोक की महिमा है। पर आपको संस्कृत न आये तो फिर समश्लोक की पढ़िए। परन्तु संस्कृत की भी महिमा है। अद्भुत भाषा है। और आज तो विज्ञान भी कबूल करता हूं कि संस्कृत भाषा खूब सरल भाषा है। हम भूल गए! पाश्चात्य दुनिया इसकी खोज कर रही है। संस्कृत की महिमा है।

तो जो मुझसे पूछा गया है उसका जवाब है कि कर्म की गति बहुत ही कठिन है। कर्म बिना हम रह नहीं सकते। कर्म करना पड़ेगा। पर 'गीता' कहती है, 'सर्वारंभ परित्यागी।' या तो तुलसी कहते हैं, अनारंभ। आप आरंभ ही न कीजिए। होता है उसे होने दो। जहां तक असंग रहकर उसमें चल सको, चलिए। पर जब ऐसा लगे कि कर्म मेरे लिए बंधन बन रहे हैं, तो नहीं खेलना कह दीजिए! तलगाजरडुं बहुत-सी प्रवृत्तियां करता है प्रभु की कृपा से। लोगों की सद्भावना से, साधु-संतों के आशीर्वाद से। पर मुझे बहुत

स्पष्ट है। कब ये सब बंद हो जाएगा कुछ कह नहीं सकते! सब हमें ही करना है ऐसा कहीं लिखकर दिया है? होता है तो करते हैं, नहीं होता तो नहीं करते! बहुत स्पष्ट! इतना सब हो रहा है। कभी बंद भी हो जाए। समाज को इसके लिए तैयार रहना। बंद होगा नहीं; मेरा नाथ संभाल लेगा; पर भजन के बदले मैं कुछ नहीं करने दूंगा। मेरे पास आया हुआ यदि भजन छोड़ देगा और केवल कर्म प्रवृत्त रहेगा तो ऐसी कर्मनिष्ठा मेरी नहीं बची। क्योंकि महत्त्व का भजन है। जिसने हरिनाम लिया, जिसने परमात्मा के नाम का आश्रय किया है उसे कर्म कुछ नहीं कर सकता। तो कर्म की गति बहुत गहन है। फिर एक बार कहता हूं, आदमी चाहे कितना व्याकरण करे तो भी कर्म बिना नहीं रह सकता ये भी ध्यान रखिएगा। परन्तु कर्म आसक्ति छूट जानी चाहिए।

मैत्रेय 'उपनिषद' में एक मंत्र है। ये सब मुझे याद आते हैं तो फिर कहता जाऊं बीच-बीच में।

अहंकारसुतं वित्तभ्रातरं मोहमन्दिरम्।
आशापत्नीं त्यजेद्यावत्तावन्मुक्तो न संशयः।।

बाप छोड़ने की जरूरत है? नहीं तो। माँ छोड़ने की, भाई-बहन छोड़ने की जरूरत नहीं है। पुत्र, लड़के को छोड़ देना? लड़का छोड़ दो ऐसा उपनिषद कहता है; पर कौन-सा लड़का? अपने अहंकाररूपी लड़के का त्याग कर दो। अहंकार पुत्र, क्योंकि अहंकार हमने ही खड़ा किया है। हमने इस लड़के को जन्म दिया है। मेरा उपनिषदकार कहता है, अपने अहंकाररूपी लड़के को छोड़ो। आपने जो संसार खड़ा किया है आपका पुत्र, परिवार, घर उसको छोड़ने की बात की ही नहीं है।

'वित्तभ्रातरं'; रूपिया है न वो आपका भाई है। आप कल्पना तो कीजिए, उपनिषदकारों ने कैसी बातें की हैं! भाई को छोड़ने की जरूरत नहीं। शास्त्र कहता है, पर उसे पैसे की आसक्ति छोड़ना है। उस भाई को छोड़ना हो तो दूसरे के कल्याणकारी दान में छोड़ना चाहिए कि लीजिए, मैं अपना भाई छोड़ रहा हूं। रूपये का तीन ही उपयोग है शास्त्र में; दान, भोग, नाश। या तो वो नाश होगा। पूरे कुल का नाश करता है। आवश्यकता से अधिक समृद्धि, सस्ती समृद्धि, पसीने बिना की समृद्धि, प्रामाणिकता बिना की समृद्धि, प्रमाण से अधिक समृद्धि, वो अपने कुल का नाश कराये सस्ता पैसा।

तो बाप! पैसा होगा तो उसका दूसरा उपयोग नाश है। बहुत बार संस्कार न हो तो लड़के भोग में खर्च कर डालते हैं। कोई कंपनी के मालिक कहते हैं, मेरे पिता गरीब थे इसलिए सामान्य होटल में ठहरता हूं। मेरे लड़के अमीर के पुत्र है इसलिए सेवन स्टार में ठहरते हैं! दूसरा इसका उपयोग नाश है; तीसरा भोग। परन्तु उसका पहला उपयोग दान है। पैसा का उपयोग दान। मतलब पैसा छोड़ना नहीं है। पैसा अपना भाई है। इसे जेब से निकाल कर रिक्षा कर सकते हैं। दाहिना-बायां हाथ है; अपनी भुजाएं हैं। पैसा छोड़ने की बात नहीं है। पर इसे दान में खर्च कर सकते हैं। रूपये की आसक्ति छूटनी चाहिए। 'मैत्रेय उपनिषद' कहता है, अहंकाररूपी पुत्र का त्याग कीजिए। पुत्र नहीं, पैसा आसक्ति और लोभ का त्याग कीजिए; रूपयें का नहीं। रूपया परमात्मा ने दिया हो तो खर्च कीजिए। दसवां भाग निकालिए। मैंने दो दिन पहले कहा था। चित्रकूट में चिट्ठियां आती हैं। लोग मुझसे पूछने आते हैं, दसवां भाग। मैंने कहा, मेहता साहब के उस काउन्टर पर जमा कराईए।

धन गलत जगह खर्च हो उसके बदले धन को शुभ काम में लगाना चाहिए। 'मोहमन्दिरम्'; घर को त्यागना नहीं है। पर उपनिषद कहता है, तुम्हारा प्रगाढ़ भरा हुआ पाया डाल गया है मोह, उस मोहरूपी मंदिर का त्याग करना है। सुंदर बंगले में रहिए। कौन मना करता है? मैं आपसे कहता हूं, पुत्र बंगला बनाए तो बाप को पसंद नहीं होगा ऐसा हो सकता है? कोई-कोई बाप ऐसा हो तो बात अलग है! बाकी तो बाप खुश ही होगा न कि मेरे पुत्र ने बंगला बनाया। और हरि तो बाप का बाप, उसका भी बाप, आदि बाप है। हम अच्छे मकान में रहे तो उसको कहीं खराब नहीं लगता। पत्नी को छोड़ने की बात नहीं है साहब! भगवान बुद्ध ने किया। वे तो अवतारी है। वो व्यवस्था है। बाकी पत्नी को छोड़ने के लिए शास्त्र ने कहा नहीं हैं। शास्त्रों ने कहा, आशा पत्नी। अपनी बढ़ती जा रही आशारूपी गृहिणियों का त्याग कीजिए। अपनी अपेक्षाएं जो बढ़ती जा रही है। उसके त्याग की बात यहां की है।

तो बाप! रजोगुणी कथा, इसमें थोड़ा चकाचौंध होता है। पर उसकी आलोचना नहीं है। कथा कथा है। पर धीरे-धीरे एक गुण में से दूसरे गुण में, दूसरे में से तीसरे में कथा की जो बात है। बहुत-सी कथा रजोगुणी होती है। बहुत-सी कथा तमोगुणी होती है। पैर रखते ही होता है कि यहां अहंकार, मूढ़ता, तमोगुण, बदला लेने की वृत्ति, दिखा देने की दानत है। कथा का ऐसा रूप हो जाता है। ऐसी बदला लेने की दिखाने की वृत्ति होती है। यजमान को भी होता है कि फलाना ने कथा कराई थी, मैं ऐसी कथा कराऊं कि वो आये तो उसको कहूं कि देखो, कैसा है? ये सब तमोगुणी कथा; बदला लेने की वृत्ति आती है। आप रहन-सहन दूसरे के जैसा कर सकते हैं; स्वभाव दूसरे के जैसा कहां से लाओगे? अपने तुलसी का पद आपको कहता हूं। मुझको अपने जेब की बात नहीं करनी है। अर्थ मेरे गुरु की कफनी में से निकलता है। बाकी मूल में तो शास्त्र है। तुलसी ने क्या कहा 'विनयपत्रिका' में-

कबहुँक हौं यहि रहनि रहौंगो।

हे प्रभु, हे राघव, कब की मेरी इच्छा है कि मैं ऐसे रहूंगा। किसके जैसा तुझे रहना है? भगवान ने पूछा, किसके जैसी तुझे रहन-सहन करना है? किसके जैसी चाल तुझको रखनी है? तो कहते हैं, साधु जैसी। इस पद की पूर्व भूमिका आप देखिए! तो भगवान कहते हैं, साधु की तरह रहो। तो कहते हैं, नहीं, अभी मुझको पद पूरा करने दीजिए। यह तो अभी पहली पंक्ति है। दो पंक्ति तो सुनिए ठाकुर!

श्री रघुनाथ-कृपालु-कृपातें संत-सुभाव गहौंगो।

मुझको साधु जैसा जीना है; रहन-सहन तो कर सकता हूं, पर स्वभाव का क्या करूं? मैं दूसरे की धोती पहन सकता हूं पर स्वभाव का क्या? कोई रखता है उसकी अपेक्षा डेढ़गुनी माला रख सकता हूं पर मूल स्वभाव का क्या? स्वभाव बड़ी चीज है। रहन-सहन तो मैं और आप चाहे जैसी कर सकते हैं। मेरे तुलसी कहते हैं, रहन-सहन भी मुझको जचेगा यदि उसका स्वभाव मुझ में आयेगा। हम स्वभाव कहां से लायेंगे? बहुत कुछ कर सकते हैं दूसरे के जैसा, पर गरीबी कहां से लायेंगे? साधु का मूल स्वभाव है गरीबी, दरिद्रता नहीं। 'गरीबी' गजब की बात है! गरीबी की व्याख्या मैंने कहीं की है। 'गरीब' शब्द अद्‌भुत है।

साधु का जो रंक स्वभाव होता है वो कहां से लाना? रहन-सहन उसके जैसी की जा सकती है, स्वभाव बाजार में नहीं मिलता। मैं किसी दिन मांगूगा नहीं। पर मुझको यदि हरि से मांगना हो तो इतना ही मांगूगा, मुझको साधु स्वभाव देना। प्रभाव को गोली मारो! दुनिया पैर नहीं लागेगी तो जाये पर मुझे साधु स्वभाव देना।

कबहुंक हौं यहि रहनि रहौंगो।

परिहरि देह-जनित चिंता, दुख-सुख समबुद्धि सहौंगो।

मेरा तुलसी कह रहा है, मेरी देहजनित सभी चिंताएं, सुख-दुख, आप मुझे ऐसा स्वभाव देना कि सुख हो या दुःख, मैं उसको समबुद्धि से स्वीकार करूं। पर वो मुझको पता नहीं है। मैं अपना कपड़ा तो दूसरे के जैसा सिलवा सकूंगा। वो मेरे बस की चीज़ है। माला मैं दूसरे के जैसा करवा लूंगा, मेरे अनुकूल है। दूसरे के जैसा तिलक कर सकूंगा, चल सकूंगा, बोलने की अदा करना मेरे वश में है, परन्तु यह वस्तु मेरे हाथ में नहीं है। वो तू कह दे। वो तो तू कृपा करेगा तो ही ये स्वभाव सुधरेगा। बाकी सब तो मैं कर लूंगा।

तो बाप! रजोगुणी कथा, तमोगुमी कथा, जिसमें दूसरे को दिखाने की वृत्ति हो। मेरे पास एक वक्ता आये। ये सब घटित प्रसंग कह रहा हूं। वो बहुत बड़े वक्ता थे अपने देश में। अन्य किसी प्रदेश के, जो हो सो! मतलब उसकी कथाएं जो मेरी कथा की तारीखें हो वो चलती होंगी। फिर मुझको कहे, बापू, आपकी कथा में कितने आदमी होते थे? मैं समझ गया कि इसको कोई तकलीफ़ है! इसलिए मैंने कहा, मंडप बहुत ही बड़ा था पर आधा ही भरता था! वो खुश हो गये! क्योंकि मुझको खबर थी, ये भूखा है! इसको ये रोटी दूंगा तो ही इसको आनंद होगा, नहीं तो नहीं होगा! मैं तो इस तरह जीने की कोशिश करता हूं। मुझको कौन-सी आपत्ति है? मैंने कहा, मंडप बेकार का ही बड़ा डाला! और चालीस प्रतिशत लोग आये! बाकी सब खाली पड़ा रहा! इससे वो दूगना खुश हो गया कि फिर उसको दक्षिणा न दो तो भी चलता है! इतनी खुशी हुई! दूसरा हमसे छोटा रहे ये वस्तु कितनी पुष्ट कर देती है हमें बाप! ये आध्यात्मिक मार्ग नहीं है। ये धंधे का मार्ग है। ये सब प्रोफेशनल मार्ग है।

तो मैं आपसे कह रहा था, चार प्रकार की कथा होती है। तमोगुणी कथा और फिर रजोगुणी कथा। कोई-कोई कथा सत्त्वगुणी होती है। मुझे कहना चाहिए। मेरे पुराने कथाकार जो भागवत कथाकार गांव में कथा करते थे, वे अधिकांश सत्त्वगुणी कथाएं थी। एकदम सीधी-सादी कथा। कोई रोष नहीं। कोई कुछ नहीं। बीच में शरबत आता तो व्यासपीठ छूट देती कि शरबत पी लो। महाराज शांत होते। सत्त्व नहीं खोते। बीच में चाय पिलानी है श्रोताओं को। बिलकुल रोष नहीं। और एक ही शैली में इतनी सुंदर, मधुर कथा। ये सब सत्त्वगुणी कथा। पर सर्वोत्तम कथा उसको कहेंगे जो तीनों गुणों से मुक्त हो। हम को ऐसा लगता हो कि ऐसा हो ही नहीं सकता, ऐसा हो ही नहीं सकता। न रजोगुण हो, न सत्त्वगुण हो, न तमोगुण हो, गुणातीत कथा। कथा के ये अमुक प्रकार है। कथा की अमुक रीति है।

मोरारिबापू की निष्ठा कर्म में नहीं है। काल में भी नहीं है। क्योंकि काल अति दुरति क्रम है। तुलसी कहते हैं, जो अपने हाथ में नहीं है उसमें झूठी निष्ठा रखकर क्या करना? होना होगा वो होगा। मैं बदल सकूं तो काल में निष्ठा रखूं। काल बदलता नहीं है। ग्यारह के बाद बारह ही बजेगा। घड़ी रुक जाये तो दूसरी बात है, देश बदल जाए और टाईम डिफरन्स होता है, बात अलग है कि यहां साडे चार घन्टे हम आगे होते हैं, और लंडन साड़े चार घन्टे पीछे हो और अमरिका नौ या साड़े नौ घन्टे वो बात अलग है। बाकी काल सदा दुरति क्रम है। उसका अतिक्रमण हो नहीं सकता। फिर खाली उसमें डरना क्या? उससे कैसा होगा? होगा जो होना होगा वो होगा! कालनिष्ठा भी नहीं रहनी चाहिए। न कर्मनिष्ठा, कालनिष्ठा, न गुणनिष्ठा। चार वस्तु है।

काल कर्म सभाव गुन घेरा।

चौथा सुभाव; सुभाव में नाम की निष्ठा है। अर्थात् नाम निष्ठा नहीं छोड़नी चाहिए, क्योंकि स्वभाव में यही है नाम

निष्ठा। कर्म करते रहना पड़ेगा। पर कर्मनिष्ठा छोड़े। हो गया तो होगा। नहीं होगा तो नहीं होगा। आरंभ किया है, पूरा होगा तो होगा, नहीं होगा तो नहीं होगा। कौन चिंता करे? मैं तो अपना अनुभव कह सकता हूं। स्वभाव में यदि नाम है, हरिनाम तो नाम निष्ठा तार देगी। तो-

नामवाळाने नहीं नडे,
सुखदु:ख आवे हरिनी इच्छा वडे।

मुझको बहुत पसंद है। सवाबापा ने पूरा कर्म का सिद्धांत उड़ा डाला। कर्म के कारण सुख-दु:ख आते हैं।

तो कथा के अनेक प्रकार है। अनेक ढंग से कथाओं का अवतरण धरती पर होता रहा है। पर वक्ता और श्रोता के लिए कथा में पांच वस्तु सीखने जैसी है। उसे कहकर कथा के लिए आगे बढ़ूं। ये पांच कथा में विघ्न करते हैं। वो पांच मुद्दे। उसके शास्त्रीय नाम हैं। मैं आपको सरलता से ही कहूंगा। क्योंकि मुझको दुर्बोध आता ही नहीं। मैं अपनी वाणी में ही बहता जाऊंगा। पर शास्त्रीय नाम भी मुझे आपको कहना चाहिए। कथा के जो बाधक तत्त्व हैं वो पांच हैं। उनके शास्त्रीय नाम हैं। एक है लय। दूसरा विक्षेप। तीसरा अप्रतिपत्ति। चौथा कषाय। पांचवां बाधक तत्त्व है स्वादानुभूति। ये शास्त्रीय है। ये सभी प्रतिबंध है। भगवद्कथा में मैं और आप लीन होते जाए, उसमें पांच स्पीड ब्रेकर हैं। 'मानस-कथा' जब सब्जेक्ट लिया है तब उसे अनेक एंगल से तलगाजरडी दृष्टिकोण निहारने की गुरुकृपा से कोशिश कर रहा है।

लय, पहला प्रतिबंध है। यहां तो ये सभी कथा के प्रतिबंध हैं। परंतु किसी भी साधना पद्धति में आप जाएं। ये पांचों प्रतिबंध आकर खड़े रहते हैं। लय का यहां अथ है कि हम कथा कहते हो, कथा सुनते हो और उसमें हमको प्रमाद आये; आलस आये। मैं आलोचना के रूप में नहीं कर रहा। ये एक खोज है। जैसे किसी को रोग हो और डॉक्टर को हमें छूट देनी चाहिए कि सब कुछ आप चेक अप कर दीजिए। किडनी, हार्ट, बी.पी. कैसा है? मगज कैसे काम कर रहा है? डॉक्टर टोटली बॉडी जैसे चेक करता है वैसे कथा में मैं और आप जो बातें करते हैं वो अपने समग्र जीवन का चेक अप है। इसमें कोई डरने या भूल की बात नहीं है। हम सब कथा में बैठे रहते हैं और हमें प्रमाद आता है। वो लय विघ्न है। वो साधक है। वैसे तो संगीत की दृष्टि से लय बहुत अच्छी वस्तु है कि लय में चलिए। यहां लय आध्यात्मिकता में बाधक बनी है। एक परम महापुरुष एक धर्म की बंदगी करते थे और उसमें लय पूर्वक संगीत चला तो बंदगी में विघ्न हुआ। तो वहां जो लय है वो उसे बाधक बनी। प्रमाद आये, आलस आये, हो सकता है। इतना ही नहीं, कदाचित् बीच-बीच में थोड़ी नींद आ जाये। ये प्रतिबंध हैं।

वक्ता के लिए बड़े से बड़ा फायदा ये है कि ये लय वक्ता को कभी बाधक नहीं होता। वक्ता कभी सोयेगा नहीं साहब! वक्ता किसी दिन बोलते-बोलते सो गया हो? लगभग वक्ता और मेरा किसी भी लोकप्रिय विद्या का गायक, वो गाते-गाते सो गया हो ऐसा उदाहरण नहीं बनता। बनेगा ही नहीं। नेवर। पर यहां सबकुछ हो सकता है! कभी बन भी सकता है। सो जाये! लोकसभा जागने के लिए है। सोने के लिये है? तो भी बहुत-से नहीं सो जाते? उन्हें मालूम है, लोकसभा का लाईव प्रसारण हो रहा है। पूरी दुनिया-देश उसे बैठे-बैठे देख रहे हैं। फिर भी बहुत-से सोते ही होते हैं! हरीन्द्र दवे, इतना जाग्रत पत्रकार, उसने एक बार लोकसभा में अमुक सदस्यों को सोते हुए देखा तब उसने टीका की कि सोती हुई लोकशाही! राजनीति में अथवा तो राष्ट्रकल्याण की चर्चा होती हो वो भी एक राष्ट्र साधना है; उसमें आप सो जाये ये ठीक नहीं। पर आपका दोष नहीं है। इसमें लय नामक बाधक तत्त्व है। आप इसके लायक नहीं थे पर जम गये हो! सो रूपया की बोतल के कारण आपको किसी ने मत दिया है! और उसमें आप गैरलायक होने पर भी आप सोने आये हैं! विधानसभा में बहुत-से सो जाते हैं! होता है। और बड़े-बड़े नेता सो जाते हैं! फिर भाड़ा-भत्ता के समय सभी जागते रहते हैं! उसमें सब जागते हैं! किसी की आलोचना नहीं है। ये समाज कल्याण की बातें हैं। ये लोक कल्याण की बातें हैं। ये राष्ट्र कल्याण की बातें हैं।

दूसरा, विक्षेप। आप और हम कथा में बैठे हैं। मैं कथा में बैठा हूं। और कोई अचानक आये; कोई आवश्यक, अति आवश्यक हो वह बात अलग है पर कोई अचानक मुझे स्टेज पर आकर चिठ्ठी दे कि बापू, थोड़ा ये कीजिए, तो उसे विक्षेप कहा जायेगा। जरूरत नहीं है। अत्यंत आवश्यक हो तो हमें प्रेक्टिकल रहना चाहिए। जगत में जड़ नहीं होना चाहिए। अत्यंत आवश्यक हो तो व्यासपीठ को भी टोका जा सकता है। आपको अत्यंत आवश्यक हो तो फोन पर बात करनी चाहिए; उसकी ना नहीं है पर वो विक्षेप है। फोन पर बात करना तो मैंने बंद कर दिया है प्रहार कर करके! नहीं तो मैं कथा करता रहूं और वो फोन पर बातें करता रहें! इसी के लिए आया हूं? विक्षेप से मुक्त रहें। शास्त्र मना करता है। आप कथा में बैठे हैं और आयोजक को कभी-कभी आवश्यक काम आया हो तो स्वयं सेवक आकर कहेगा, दानाभाई आईए। उठना चाहिए अवश्य। पर आध्यात्मिक दृष्टि से ये प्रतिबंधक तत्त्व आया है; वो विक्षेप है।

कथा का तीसरा प्रतिबंधक तत्त्व है अप्रतिपत्ति। संस्कृत शब्द है; उसका अर्थ है कि आप में शक्ति है, समझदारी है। समय भी है, फिर भी आप श्रेष्ठ वस्तु का त्याग

करते हैं वो अप्रतिपत्ति कहलाती है। आपके पास अभी महुवा में समय है, समझ है। कथा हो रही है, मेहता साहब के स्मरण में हो रही है। शक्ति है, सब कुछ है फिर भी आप ऐसा कहते हैं, कथा में क्या सुनना? कथा अर्थात् क्या? सामर्थ्य है। संस्कृत आती है। 'गीता' क्या पढ़ना? समाज सेवा करो न! 'गीता' पढ़े बिना तेरी समाज सेवा अहंकारी हो जायेगी। पहले 'गीता' पढ़। गांधीजी की समाज सेवा ऊंचाई पर गई थी क्योंकि 'गीता' पढ़ी थी। उसमें से अनासक्ति योग उत्पन्न किया था। पर ये प्रतिबंधक हैं। सामर्थ्य है। आपके पास रूपया है, समझ है, मुझे किसको देना चाहिए। फिर भी ऐसा कहते हैं ना रे ना, उसे क्या दे? क्योंकि वो सब कमिटीवालें खा जाते हैं! ये सभी विचार आते हैं ये सब प्रतिबंधक तत्त्व हैं।

चौथा अवरोध है कथा जगत का वो है कषाय। कषाय यानी पाप, दोष, अपराध, मैल, कीचड़, गंदगी अंदर की। जैन धर्म में ये शब्द बहुत प्रयुक्त हुआ है। सनातन धर्म उसे षड्कषाय कहता है। छ: प्रकार के कषाय काम, क्रोध, मोह, लोभ, मद, मत्सर; छ: प्रकार के जो षड्रिपु भी कहलाते हैं; दोष भी कहते हैं। कषाय; अपने छोटे-बड़े पाप; अपनी मूढ़ता हमें बाधा डालती है। हम गंगा तक गये हो, तबियत अच्छी हो परन्तु नहाने नहीं देता। वो कषाय बीच में आता है! थोड़ा पढ़े हो इसलिए होगा कि गंगा में नहाने से पाप बह जायेगा? भगतबापू कहते हैं-

भरोसे रहेवाय, एमां पंडनां डहापण न डोळाय,
एने भरोसे रहेवाय।
वैद घरना वाटेलां ओसड ना ओळखाय,
एने भरोसे रहेवाय।

उस पर यकीन करना चाहिए, उसमें खुद की चतुराई नहीं मिलानी चाहिए। एक प्रतिबंधक है लय; दूसरा विक्षेप; तीसरा है अपने में सामर्थ्य हो और हम समय चुक जाये; हरि भजने की बेला हो फिर भी 'राम राम राम राम' क्या करना? ये अप्रतिपत्ति बाधक तत्त्व विघ्न ड़ालता है। चौथा कषाय। छोटे-बड़े पाप। कफ हो जाये तो बराबर आवाज़ नहीं निकलती। आवाज़ तो हमारी टंकार लगे ऐसी है, पर कफ है। ये कषाय हममें रुकावट पैदा करता है! और मेरी दृष्टि से बड़े से बड़ा तीन कषाय, तीन बड़े से बड़ा पाप जो मैं अपनी अदा से कहता रहता हूं। एक निंदा, दूसरी इर्ष्या, तीसरा द्वेष। निंदा सत्यरूपी धर्म को ग्लानि पैदा करवाती है। निंदा करनेवाला किसी दिन सच्चा हो ही नहीं सकता। वो सत्यरूपी धर्म को ग्लानि पैदा कराये बिना रह ही नहीं सकता। निंदक सच्चा होता ही नहीं। और जो सच्चा होगा वो निंदा करेगा ही नहीं। मेरा वाक्य है, आप जानते हैं; साधुपुरुष निंदा नहीं करता, निदान करता है। मैं डॉक्टरी भाषा में कहता हूं। निदान करने की छूट होती है। निदान भी नींदा का ही एक प्रकार है। उसमें भी सत्य नहीं है। पर डॉक्टर को वो स्वीकार करना पड़ता है। केन्सर है। अंतिम स्टेज हो, छोटे-छोटे बच्चे हो, स्त्री मजदूर करती हो तो डॉक्टर निदान कर ले पर डॉक्टर को थोड़ी सत्य की ग्लानि देनी पड़ती है। खुलेआम कहा नहीं जा सकता। नहीं तो लड़के वैसे के वैसा ही मर जायेंगे। ऐसा कहा जायेगा कि कोई बात नहीं, कुछ नहीं है, हो जायेगा। निदान ऐसा करना चाहिए। डॉक्टर ने ऐसा नहीं कहना चाहिए कि खतम हो गया। निंदा सत्यरूपी धर्म को ग्लानि पहुंचाती है। दूसरा, इर्ष्या प्रेमरूपी धर्म को ग्लानि पहुंचाती है। प्रेम में इर्ष्या होती ही नहीं! पर जब इर्ष्या शुरू होती है तब प्रेमरूपी धर्म को ग्लानि होती है। और करुणारूपी धर्म को ग्लानि होती है जब आदमी द्वेष करता है। क्योंकि द्वेष करनेवाला हिंसा तक पहुंचता है। करुणारूपी धर्म को पीड़ा होगी, ग्लानि होगी और हिंसा तक पहुंचता है आदमी। ये बड़े से बड़ा कषाय है, जो कथा में हम को और आपको विघ्न पहुंचाता है।

पांचवां और अंतिम तत्त्व है कथातत्त्व में प्रतिबंधक तत्त्वों में उसका शास्त्रीय नाम है स्वादानुभूति; स्वाद का अनुभव। स्वाद खराब वस्तु नहीं है। पर कभी-कभी रामरस के बदले निंदारस का स्वाद अधिक आता है। वो निंदारस के स्वाद की अनुभूति मुझको और आपको कथा के रस में बाधक बनती है। निंदा का रस। वैसे तो नौ रस हैं। पर ये रस कहीं जैसा-तैसा नहीं है! आदमी टक्कर खाये! 'ऐसा? वो सब ऐसा है? होगा ही नहीं?' ऐसा जो मिथ्या रस की स्वादानुभूति रस की बाधक है; भगवद्कथा रस में प्रतिबंधक तत्त्व है। धीरे-धीरे इसमें से मुक्त हो सकते हैं। तो 'मानस-कथा' का विषय लेकर हम बातें कर रहे हैं।

मेरी दृष्टि से बड़े से बड़े तीन कषाय; तीन बड़े से बड़े पाप हैं जो मैं अपनी अदा से कहा करता हूं। एक निंदा, दूसरी इर्ष्या, तीसरा द्वेष। निंदा सत्यरूपी धर्म को ग्लानि पैदा कराती है। निंदा करनेवाला किसी दिन सच्चा होगा ही नहीं। वो सत्यरूपी धर्म को ग्लानि पैदा कराये बिना रह ही नहीं सकता। दूसरा, इर्ष्या प्रेमरूपी धर्म को ग्लानि पहुंचाती है। प्रेम में इर्ष्या होती ही नहीं। पर जब इर्ष्या शुरू होती है तब प्रेमरूपी धर्म को ग्लानि होती है। और करूणारूपी धर्म को ग्लानि होती है, जब आदमी द्वेष करता है। क्योंकि द्वेष करनेवाला हिंसा तक पहुंच जाता है। करूणारूपी धर्म को पीड़ा होती है, ग्लानि होती है और हिंसा तक पहुंच जाता है आदमी।

सनातन धर्म जैसा कोई मानव धर्म नहीं

'मानस-कथा', अपने यहां कबीर साहब ने ब्रह्मनिरूपण की बात की। तुलसीदासजी ने नामनिरूपण और भक्ति निरूपण की चर्चा की। हम सब मिलकर इन दिनों में कथानिरूपण की चर्चा कर रहे हैं। कथा एक ऐसा विशाल क्षेत्र है कि उसके लिए कितना कहूं? अब दो दिन बाकी हैं आज के दिन को छोड़कर। मेरे पास 'रामचरितमानस' में कथा के कितने प्रकार हैं उसकी एक लिस्ट है। उन सब पर मैं बोल नहीं सकूंगा क्योंकि समय नहीं है। पर वो लिस्ट आपको पढ़कर सुनाऊं ताकि आपको ख्याल आये कि कथा कितना विशाल पट लेकर बैठी है। कथा यानी एक था राजा और एक थी रानी इतना ही नहीं है बाप! फिर उसमें एक हीरो था; मुख्य कोई महिला थी; फिर कोई विलन था। ये पाश्चात्य जगत की जो कथा परंपरा है वैसी भारतीय कथा परंपरा नहीं है।

अहमदाबाद युनिवर्सिटी में एक बार मुझको उसके वाइस चान्सलर ने कहा कि बापू, हमने एक गोष्ठि आयोजित की है अपने विद्यार्थीओं के साथ; उसमें आइए और उसमें कथावस्तु के विषय में हम बातें करेंगे। और मैंने स्वीकार किया। मैं गया। उसके जो वाईस चान्सलर थे और दूसरे बहुत से बड़े विद्वान थे। उन सभी ने शरूआत में अपने-अपने अभिप्राय अपने-अपने प्रवचन में कहे। पर उन सभी का एक सूर ऐसा था कि कथा को उन लोगों ने वार्ता कहा। यद्यपि वार्ता भी है, उसकी ना नहीं कह सकते। पर कथा केवल कहानी नहीं है। कथा कुछ भिन्न है, जिसका पार न पा सकें ऐसा कोई शिखर है। इसलिए स्वाभाविक है कि कथा को कोई केवल कहानी कहेगा तो तलगाजरडा सहन तो कर लेगा क्योंकि साधु का लक्षण है सहन करना। पर ये सत्य नहीं है। मुझे विनयपूर्वक जवाब तो देना ही रहा। इसलिए मैंने उनसे कहा, वडील, आपने मुझको बुलाया कथा के लिए, कथातत्त्व के लिए; मैं आभारी हूं कि मैट्रिक में तीन बार अनुत्तीर्ण हुए व्यक्ति को युनिवर्सिटी में बुलाए और ऐसा कठिन विषय लेकर बातें करें। आपका आभार। पर मुझको माफ़ कीजिएगा, इतना ही कहूंगा कि वार्ता और कथा में बहुत अंतर है। कहानी सुला देगी। आप लड़के के सिर पर हाथ फेरें, पीठ पर हाथ फेरें, एक था राजा, एक थी रानी, यह पांच मिनट कीजिए, लड़का सो जायेगा! ये अच्छी वस्तु है। क्योंकि सुषुप्त अवस्था ये योग में अच्छी अवस्था का नाम है। इसलिए ठीक है। परंतु वार्ता सुला देती है, कथा सोये को जगा देती है। इसलिए कथा को आप कहानी के साथ मत जोड़िए।

तो कथा बहुत ही बड़ा विशाल क्षेत्र है। आदि-अनादि काल से ये चल रहा है। तो कितने प्रकार की कथाओं का निरूपण तुलसीदासजी करते हैं, उसकी एक लिस्ट है। वो केवल पढ़ जाता हूं। इन सबकी चर्चा तो संभव नहीं। केवल नाम पढ़ जाता हूं। एक तो 'रामायण' में कथा है उसका नाम है कर्मकथा। अब कर्मकथा पर आप नौ दिन बोल सकते हैं। कर्म के सिद्धांतो; कर्म कहां से प्रगट होता है? कर्म का मध्य, आदि, अंत क्या है? कर्म प्रधान है या उपप्रधान? ऐसे अनेक विषय को केन्द्र में रखकर आप कह सकते हैं और श्लोक से लोक तक के सार आप प्रस्तुत कर सकते हैं। अध्ययन और गुरुकृपा की जरूरत है। एक कथा का नाम रामकथा में है कर्मकथा-

करम कथा रबिनंदनि बरनी।

कर्म कथा को तुलसीदासजी ने यमुना कही है। वो कर्म कथा है। व्याख्या करने जाऊंगा तो कितना बोलना पड़ेगा! गुरुकृपा से इन सब पर खूब बोला जा सकता है। फिर एक कथा है समन्वय कथा।

हरि हर कथा बिराजति बेनी।
सुनत सकल मुद मंगल देनी।।

एक कथा है हरिहर कथा; दोनों की कथा है। समन्वय, सेतु, युगपद, संक्षेप में रघुनाथ की कथा। 'रामकथा' शब्द ऑलरेडी कितनी बार आया! नौ बार। कहीं-कहीं 'श्रीराम कथा'। 'श्री' लगाते हैं तुलसी। वो विशेष कारण होगा। कितनी बार 'रामकथा' शब्द 'मानस' में आया है।

तुलसी कथा रघुनाथ की।

'कथा उमाके', उमा की कथा, शिवकथा। एक कथा है, 'सीय स्वयंबर कथा सुहाइ।' सीता और राम के स्वयंवर की कथा। अति सुंदर कथाएं है ये सभी। एक-एक मुद्दा लेकर अभ्यासी वक्ता हम सबकों बहुत ही मार्गदर्शन दे सकता है साहब!

पंथकथा खर आतप पवनू।

एक कथा है पंथ की कथा, मार्ग की कथा। हमको किस मार्ग जाना है? पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण में जाना है? और किस मार्गदर्शक को साथ ले जाना है? पंथ कथा में कौन-सा पाथेय लेंगे? तुलसी कहते हैं, श्रद्धा का पाथेय लेकर चलेंगे? किस मार्ग से जाना है? भरद्वाज से मेरे राघव पूछते हैं, मुझको पगदंडी बताइए, यहां से मुझको किस मार्ग से जाना है? पंथ कथा एक स्वतंत्र सब्जेक्ट बन जायेगी। उसमें फिर ये छोटे-बड़े पंथ भी आयेंगे। ये पंथ, वो पंथ! सनातन धर्म में जो छोटी-छोटी पगदंडियां बनायी हैं नाहक की! गैरकानूनी पगंदडियां पाड़ी वे सभी आ जायेंगे। ये सब शोर्ट कट निकालना! नया रास्ता तो कहां से निकालेंगे? इसलिए दूसरे के खेत में! ये सभी लोग है न अभी-अभी उतर पड़े हैं मानव धर्म, मानव धर्म! पर सनातन धर्म जैसा कोई मानव धर्म नहीं। आप सभी क्यों निकल पड़े हैं? वो कहते हैं, हमने नया संशोधन किया है! पर सनातन के उदर में दुनियाभर का मानव धर्म समा जाता है। सनातन धर्म ने मानव धर्म का इन्कार किया? तो सब कहते हैं, हम अन्य किसी धर्म में नहीं मानते; हम मानव धर्म में मानते हैं। पर मानव धर्म का बाप सनातन धर्म है ये तू क्यों भूले जा रहा है? यह एक बहुत गलत प्रचार शुरू हुआ है। और ऐसा करनेवाला गौरव ले रहा है! सनातन के उदर में से मानव धर्म, प्राणी धर्म, भूत धर्म, सत्य धर्म सब कुछ उसीसे निकला है। मानव धर्म ही है ये। बहुत से लोग अपनी चुतुराई दिखाने के लिए कहते हैं, मानव धर्म श्रेष्ठ धर्म है! मानव धर्म भी इसके अंदर आता है। कुछ बात तो बहुत विनयपूर्वक कहनी ही पड़ेगी। ये सब छोटी-छोटी पगदंडियां निकाली हैं!

विनोबा ने वैदिक धर्म की बात की। विनोबाजी मानव धर्म के विरुद्ध हैं? किसी की मजाल नहीं! गांधी ऐसा कहते हैं, 'गीता' ये मेरा प्राण है। 'गीता' की चर्चा करनेवाले गांधी किसी दिन मानव धर्म चुके हैं? 'रामायण' करनेवाले मोरारिबापू किसी दिन मानव धर्म कहने की बात चुके हैं? एक उदाहरण बताईए। हम लोग तो मानव धर्म में मानते हैं! आप समझकर बोलिए! धर्म पर बोलो तब विचार करके बोलो; अभ्यास करके बोलो। और अभ्यास नहीं किया हो तो तुम्हारे सिर पर किसी का हाथ हो ऐसे गुरु की कृपा से बोलो अथवा तो निवेदन मत करो! सब ने पगदंडी बनाई है अपनी अपनी! क्योंकि लम्बे रास्ते पर भटक जायेंगे। इसलिए सबने पगदंडी बनाई है। कोई ग्रूप में जो अपने-अपने धर्म की बातें करनेवाले लोग मेरे पास कथा मागते हैं! मैं टाल देता हूं कि मेरी कथा नहीं करनी चाहिए। आप नुकसानी में जाओगे! मैं सभी ग्रूप से दूर रहता हूं साहब! वैसे आदर देता हूं तब अपना हृदय खाली कर दूं पर सबको इतनी तो खबर होनी ही चाहिए। उसमें राजकीय क्षेत्र हो, साधु क्षेत्र हो, अखाड़ा, धर्म, पंथ या दुनिया का कोई भी क्षेत्र, मैं सबसे दूर रहता हूं। क्योंकि सबका ग्रूप है। फिर पीछे से वोही बातें करते हैं। ऐसी बातें करते हैं वो सब कुसंग है। फिर साधु करे तो साधु, राजनेता करे तो वे, पंथ करते हो तो पंथ, विद्या के उपासक करते हो तो वो सब कुसंग है। 'नारद भक्ति सूत्र' कहता है, कुसंग सर्वथा त्याज्य है। संन्यास जगत हो या दुनिया का कोई भी क्षेत्र, मैं सबसे खूब बराबर का डिस्टन्स रखता हूं। पंथ कथा में अद्भुत कथा का विषय है। क्योंकि पंथ कथा में दुष्टता आती है। खर, अतप, गरमी है। संताप होगा। उसमें आंधी जैसी बातें होंगी। तो एक पंथ कथा है। इसलिए मुझे वो कथा कहनी नहीं है, नहीं तो अभी भी एक बढ़िया कथा तलगाजरडा में करनी है! जब होगी तब; मेरा नाथ

करायेगा तब! ईश्वर कराये तब; किसी स्मरण में करनी है नाम लिए बिना। होगी तो होगी, नहीं होगी तो कोई बात नहीं, नहीं खेलते! पंथ कथा; फिर हरिकथा।

जिन्ह हरि कथा सुनी नहिं काना।

एक विभाग है हरिकथा। स्वतंत्र हरि की कथा। कथा के सभी अलग-अलग सब्जेक्ट 'मानस' में से चुने गए फूल हैं ये सब। और मुरझायें नहीं ऐसे फूल हैं।

पूरब जन्म कथा चित्त लाई।

एक पूर्वजन्म की कथा है। ये सब चुन-चुन कर वेणी गुंथने जैसे प्रसंग हैं। थोड़े प्रसंग मिले उसकी वेणी होगी, थोड़े मिले तो हाथ के कंगन बने, गले के हार बने। ऐसे सभी उत्तम प्रसंग हैं। आकाश छोटा पड़ जाये ऐसा शास्त्र है साहब! ये तो केवल नाम। पूरब कथा जिसमें अनेक जन्मों की कथा होती है। मनुष्य अनेक बार आया है। कभी अपना पूर्वजन्म था और कभी पूनर्जन्म हो भी सकता है। यह एक चक्र है। यह एक चैतन्य का चक्र है।

'रामायण' में गंगा अवतरण की कथा है। गाधीसुत विश्वामित्रजी की राम के प्रश्न पर पूरी गंगा अवतरण की कथा स्वतंत्र विषय बन जाये। नौ दिवस गंगा को उतारा जा सकता है। तो गंगा अवतरण की कथा भी एक कथा का विषय है।

गौतम नारि श्राप बस उपल देह धरि धीर।
चरन कमल रज चाहति कृपा करहु रघुबीर।।

ये अहिल्या के उद्धार की कथा तुलसीदासजी ने की है। अहिल्या पर तो तलगाजरडा एक कथा कह चुका है। 'मानस-अहिल्या' एक कथा हो गई है। अहिल्या उद्धार की कथा स्वतंत्र विषय है। 'रामायण' में बहुतों की निज कथा है। गाधीसुत विश्वामित्र की कथा पूरा स्वतंत्र प्रकरण है। विरोध प्रगट करे ऐसी एक कथा है।

कहिसि कथा सत सवति कै जेहि बिधि बाढ़ बिरोधु।

मंथरा उसकी आचार्य है। कथाकार का नाम है मंथरा। उसके सौतनों की अलग-अलग कथा कहकर कैकेयी के दिमाग में विरोध का एकदम विप्लव करती है। ये कथा का नाम विरोध कथा, सौतनों की कथा।

कद्रूँ बिनतहि दीन्ह दुखु तुम्हहि कौसिला देब।

कद्रू और विनता ने एक दूसरे को दुःख दिया वैसे ही कैकेयी, तुम्हें कौशल्या वैसा ही दुःख देगी क्योंकि सौतन! वो किसको दुःखी नहीं करती? ऐसा कहकर विरोध कथा कही। बोध कथा जैसे ही विरोध कथा भी 'मानस' में है।

परी कथा। एक तो मार्ग की कथा है तो दूसरी मार्गी की कथा है। जो मार्ग पर चढ़ गया हो उसकी कथा है। रास्ते पर चलता है। उसकी कथा। पुरातन कथा।

कथा पुरातन कहै सो लागा।

पुरातन कथा ये भी एक विषय है। तो-

तापस अंध साप सुधि आई।
कौसल्यहि सब कथा सुनाई।।

अंध तपस्वी की कथा। तापस, श्रवण के माँ-बाप की कथा। ये तो स्वतंत्र विषय है। रामराज्य, रसभंग उसकी कथा। राम वनवास की कथा।

भरत कथा भवबंध बिमोचनि।

भरत की कथा जो भवबंध को तोड़ डालती है।

तात सक्रसुत कथा सुनाएहु।
बान प्रताप प्रभुहि समुझाएहु।।

हनुमान सीता को खबर देकर निकले फिर जानकी ने कहा कि बाप! रामजी को सक्रसुत की कथा सुनाना। उनमें कितनी ताकत है ये राम भूल गये हो तो उन्हें याद दिलाना। मुझसे तीन-चार-दिन पहले किसी ने पूछा, दूसरे प्रदेश में से हिन्दी में एक प्रश्न मेरे पास आया उसमें ऐसा पूछा था कि बापू, ये सक्रसुत की कथा यानी क्या? सक्रसुत कथा अर्थात् इन्द्र के लड़के जयंत की कथा। जानकी कहती हैं, मेरे पग में जयंत चांच मारकर गया तब तिनके का बाण बनाकर राम ने ब्रह्मलोक तक उसे शांति न लेने दी; उस इन्द्र के पुत्र की कथा उनसे कहना। जिसने चांच मारी तो राम का बाण इतना उठ गया तो ये रावण मुझको चुराकर निकल गया है और फिर भी आप कुछ नहीं कर रहे हैं? उस बाण के प्रभाव की कथा सुनाना।

सिर अरू सैल कथा चित रही।

रावण एक कथा शुरू करता है। बस जब होता है तब मस्तक की कथा और पर्वत उठा लिया, कैलास उठा लिया। उस रावण कथा का बहुत बड़ा विद्वान वक्ता है। उसका सब्जेक्ट ही यही है। अपने मस्तक मैंने काट-काट कर चढ़ाया है और मैंने पर्वत उठाया है। यही बस एक ही कथा की हमेशा बात करता है। सीताहरण की कथा; जानकी अपहरण की कथा; फिर दंतकथा। 'रामायण' में दंतकथा की बात आई है।

प्रभु अवतार कथा पुनि गाई।
तब सिसुचरित कहेसि मन लाई।।

भगवान के अवतार की एक कथा। और भगवान ने बचपन कैसे बिताया, ये फिर सब्जेक्ट बदल जायेगा। ये चरित्रकथन होगा।

सागर निग्रह कथा सुनाई।

सागर निग्रह कथा। भगवान ने धनुषबाण उठाया 'सुंदरकांड' के अन्त में और वो सागर निग्रह की कथा। वह भी एक स्वतंत्र विषय है। 'रामायण' मैं बहुत विचित्र कथाएं हैं। हम को ऐसा लगता है कि अद्भुत रस झलकता है। पर सभी विचित्र कथा हैं। दिमाग को न समझ आए ऐसा विचित्र कथा का भी एक सब्जेक्ट 'मानस' रखता है।

कहन लगे कहु कथा रसाला।

जो कथा करने का मैंने मनोरथ किया हां! नौ रस की कथा। मनोरथ है। होगा तो होगा। एक दिन शांत रस से शुरू कर शांत रस में पूर्णाहुति कर डालनी है। दूसरे दिन वीर, अद्भुत, रौद्र, भयानक, शृंगार, करुण, हास्य रस ये एक-एक रस को एक-एक दिन ये मनोरथ है। मेरे मालिक करायें और मेरे गुरु करायें तो होगा। स्थल और समय मैं निश्चित करूंगा। जहां होगा वहां। इच्छा है। सभी इच्छाएं अपनी पूरी हो ऐसा होता नहीं। और उसके लिए गांठ लगाकर बैठना, होगी तो होगी।

सावधान मन करि पुनि शंकर।
लागे कहन कथा अति सुंदर।।

केवल सुंदर कथा। केवल सुंदर, सुंदर, सुंदर। 'सुन्दरकांड' की कथा उसमें सीता सुंदर; सिंधु तीर एक भूधर सुंदर; एक सुंदर पर्वत; उसमें एक मुद्रिका मनोहर सुंदर। सब सुंदर, सुंदर। सुंदर कथा ये भी एक सब्जेक्ट है।

बिमल कथा कर कीन्ही अरंभा।

एक कथा है निर्मल, जिसमें अपवाद की कोई कथा नहीं है; निर्मल, निर्मल। वो तप कर रहा था शंबुक नाम का आदमी; उसको फिर मार डाला गया। वो विवाद कथा है। वो निर्मल कथा नहीं है। तुलसीदासजी निकाल देते हैं। मोरारिबापू कहते हैं, निर्मल कथा ही कहना चाहिए; कल्याण की ही कथा कहना है। सीता का दूसरी बार का त्याग; एक रजक के कहने पर उस पर प्रश्न खड़े हुए इसलिए राम को अपवाद लगा और इसी से अपवादवाली कथा थोड़ी निर्मल न रही। इसलिए मैं नहीं कहता। सीता की अग्नि परीक्षा; उसमें भी प्रश्न उठे; उस कथा में कहीं दुर्वाद है। राम स्वयं दुर्वाद बोले है। हां, मुझको वो स्वीकार्य न होगा। परंतु राम लीला कर रहे हैं उनके अभिनय में तुलसी ने मूल में संवाद ऐसे दिये; वाल्मीकि ने दिया इसलिए बोलना पड़ा। बाकी पसन्द न आये। राघव दुर्वाद करे उसे मैं स्वीकार नहीं कर सकता।

सुनु सुभ कथा भवानि रामचरितमानस बिमल।
कहा भुसुंडि बखानि सुना बिहग नायक गरुड़।।

हमारे कथाकारों को, वक्ता को बहुत बड़ी प्रेरणा मिले ऐसा सूत्र है। कथा के मूल वक्ता तो शंकर हैं। फिर भी जब भवानी को कथा कहते हैं तब क्या कहते हैं? ये कथा भुशुंडि ने गरुड को कही। शंकर भुशुंडि का नाम लेते हैं। हम नाम लेना सीखें। हमने ये कथा कहा से सुनी थी? मेरा आदि देव शंकर महादेव; वो ऐसा कहते हैं। उनसे ही कागभुशुंडि को मिली फिर भी बोले तब कहा, 'भुशुंडि बखानि।' क्या आदर दिया है वक्ता को? और हम सब तो सब कुछ अपने नाम पर चढ़ाते हैं! ये तो अच्छा है कि कबीर साहब का साहित्य अपने नाम नहीं चढ़ाते! मुझको बहुत प्रेरणा देता है ये सब। हे पार्वती, ये कथा कागभुशुंडि ने कही और विहंगनायक खगपति गरुड ने ये कथा सुनी। ये सब शुभ कथा मैं तुम से कह रहा हूं।

तैंतीस प्रकार की कथा है 'मानस' में। अभी भी कोई छूट जाता हो तो माफ़ करिएगा। बाकी तैंतीस प्रकार की कथा है। अब इसको कैसे पूरा करना नौ दिन में? और बाप! मुझको कहना चाहिए हृदयपूर्वक; पूरी प्रसन्नता से कहता हूं कि कथा का कथन करे वो जीभ तो पवित्र हो जायेगी; हमारा जीवन पवित्र होगा। हमारा कितना अच्छा समय बीते; ये तो सब है ही। पर अब जब कथा की बहुत महिमा तुलसी गाते हैं तब उसमें हमेशा श्रोताओं के लिए ही लिखा है कि कथा तो श्रोताओं का बड़भाग है। श्रोता की कथा। उसकी भी मुझे लिस्ट दी गई है। ये दो-चार मुद्दे कहकर आगे बढ़ूंगा कि जहां सब सुनने की ही बात कही है।

राम अनंत अनंत गुन अमित कथा बिस्तार।

आहाहा! राम अनंत है। उनके अनंत गुण। फिर उसकी कथा का विस्तार अनंत, अनंत, अनंत।

सुनि आचरजु न मानहिं जिन्ह कें बिमल बिचार।।

राम अनंत; गुण, कथा का विस्तार अनंत है। इसलिए श्रोताओं को तुलसी सावधान करते हैं कि सुनकर आश्चर्य मत करना। जिनके विचार निर्मल होते हैं वो किसी दिन आश्चर्य नहीं करता। वो स्वीकार करेगा। नहीं तो हमें ऐसा लगेगा कि ऐसा होता है? क्योंकि हमारे विचार निर्मल नहीं हैं। जिनके विचार निर्मल होंगे वो आश्चर्य नहीं करेगा। हमारी बुद्धि कुछ चीज ही पकड़ पाती है। कोई पशु जो देख पाते हैं उतना आदमी नहीं देख पाते। ये वैज्ञानिक सत्य है। मनुष्य जितना सूंघ सकते हैं उससे ज्यादा कुत्ते सूंघ सकते हैं। इसलिए चोर को खोजने के लिए कुत्तों को रखना पड़ा है। अपनी इन्द्रियों की सीमा है साहब! मेरे राम की अनंत कथा का विस्तार किसी दिन आश्चर्य नहीं करेगा। जिसके निर्मल विचार नहीं हैं उसको भगवान की कथा के अनंत विस्तार में अनेक प्रकार की शंका-आश्चर्य होगा। पर चालाक आदमी को आश्चर्य नहीं होता। जिसकी बुद्धि शुद्ध होगी वो सुननेवाला किसी दिन आश्चर्य नहीं करेगा। सुनने की दूसरी विद्या; कौन सुनता है कथा?

जीवनमुक्त ब्रह्मपर चरित सुनहिं तजि ध्यान।
जो हरि कथाँ न करहिं रति तिन्ह के दिय पाषान।।

जो जीवन मुक्त हो गया महापुरुष; जो ब्रह्म को पा गया हैं; ब्रह्मांड हो गया है; जो अपना ध्यान, बान, समाधि छोड़कर चरित्र सुनने बैठ जाता है। ऐसी भगवान की कथा में जिसको रति नहीं है, जिसे प्रेम नहीं है। तुलसी कहते हैं, उसका हृदय पत्थर का हृदय है। ब्रह्म को, परब्रह्म को पाया; ब्रह्म से भी आगे निकल गया ऐसा परमहंस ध्यान छोड़कर कथा सुनते हैं, ऐसी कथा का श्रवण।

बिनु सतसंग न हरि कथा तेहि बिनु मोह न भाग।
मोह गएँ बिनु राम पद होहि न दृढ़ अनुराग।।

सतसंग के बिना कथा नहीं मिलती। कोई दो साधु, दो सज्जन, दो अच्छे आदमी, दो मानव धर्म में माननेवाले इन्सान मिले। कुछ लोग सनातन धर्म का नाम नहीं लेते! आप पुत्र की प्रशंसा करे और बाप को भूल जाएंगे यह कैसे चलेगा? आप पुत्र की तारीफ़ करें और मूल उसकी माँ, अपने पेट में जिसने नौ-नौ महिना रखा है उस जननी को भूले तो आप प्रपंच कर रहे हैं, आप दंभ कर रहे हैं। आपकी समाज सेवा प्रपंची है। मूल में सनातनता है। मानव रहित कोई धर्म हो सकता है? मानव तो केन्द्र में होगा ही। दो सज्जन मनुष्य मिले और जो बोलते हैं वो हरिकथा होती है। दो किसान इक्ठें हो ओर अच्छी बातें करे तो उसमें से रामकथा जन्म लेती है। और तथाकथित त्यागी दूसरे की महानता सहन न कर सकते हो ऐसे यदि कथा आरंभ करें तो समझना चाहिए, निंदाकथन कर रहे हैं। इसे परखें। इसलिए सबसे डिस्टन्स रखें, जिससे आपके भजन में भंग न पड़े। नहीं तो ये सब वस्तु अपना दिमाग बिगाड़ती है। हमें दूसरे के प्रति द्वेष होने लगेगा। और द्वेष आयेगा तो साधना में रूकावट आ खड़ी होगी। गांव के दो किसान बैठे-बैठे अच्छी बातें करते हो तो उस सत्संग में जो बातें हो वो हरिकथा है। और तथाकथित महापुरुष यदि किसी की निंदा करते हो तो वो हरिकथा नहीं है। मुनियों को दुर्लभ ऐसी परमात्मा की भक्ति मनुष्य बिना प्रयास प्राप्त करता है; तुलसी कहते हैं, जो इस कथा को निरंतर विश्वस मानकर सुनेगा उसको मुनि दुर्लभ भक्ति प्रसाद के रूप में ठाकुरजी देंगे। ये सुनने का प्रसाद हरिकथा है। और आगे-

राम चरन रति जो चह अथवा पद निर्बान।
भाव सहित सो यह कथा करउ श्रवन पुट पान।।

रामचरण में यदि रति चाहो अथवा आप ज्ञानमार्गी है और मोक्ष को चाहते हैं तो कथा को अपने कान के दौने में पीजिए। तो कथा के वक्ता को लाभ तो ही है वाणी पवित्र होती है। मन को बोध मिलता है। समय अच्छा बीतता है। असत्य नहीं बोलता। निंदा-कूत्सा न होगी। हरि का ही वर्णन होगा। ये सब वक्ताओं को ही तो फायदा होता है। पर श्रोताओं को बहुत फायदा है बाप!

जगत में बड़े से बड़ा दर्द है तो चार है। उन चारों पीड़ा को दूर करे उसका नाम कथा है। चार पीड़ा है। वैसे तो पीड़ा बहुत हैं। जगत में प्रत्येक को अपनी-अपनी समस्याएं, मुश्किलियां, पीड़ा होती है; पर मानव देह में हम हैं तो मानव तक मर्यादित बात करें। पशु-पक्षी को उसकी पीड़ा होती है। वाचा रहित बेचारे कहां फरियाद करे? पर मानव फरियाद कर सकता है। और ये चारों पीड़ा जब हम बूढ़े होते हैं और अंत नजदीक आने लगता है तब आनेवाली पीडाएं हैं। उसका हम स्वयं उपाय कर सकने में समर्थ नहीं हैं। उसमें किसी का आधार ही लेना पड़ेगा। और मुझको और आपको कबूल करना ही पड़ेगा ऐसी चार वेदना, पीड़ा, दुःख का केवल कथा ही एक मात्र उपाय हैं।

पहली पीडा; जब हम जाने की तैयारी में होते हैं; उम्र हो गई हो; रोग घेरे हो; आप सब तरह से परवश हो गये हो तब एक पीड़ा जीवित आदमी को होती है वो है देह की पीड़ा, शरीर की पीड़ा होती है। देह पीड़ात्मक दुःख जिसको शास्त्रीय भाषा में कहते हैं। शरीर की पीड़ा। बी.पी., डायाबिटिस, किडनी काम नहीं करती, हाथ ठीक से काम न करते, सब कुछ उल्टा-पुल्टा होने लगता है! ये सब देह पीड़ात्मक दुःख है। और शरीर के अंत समय में पीड़ा का जो दुःख होता है 'गीता' के कहे अनुसार आहार, विहार, निद्रा, जागरण ये सब 'गीता' न्यायानुसार करे उसको आखिरी समय में देहपीड़ात्मक दुःख उतना आधिक नहीं भोगना पड़ता है! परन्तु अमर्यादित जीया हो, न आहार का, न विहार का ठिकाना, जीवन में पैसे की तान में, अधिकार के तान में हमें भान नहीं रहता फिर जो संयम-नियम बिना का जीवन जीया हो उसकी जो देहात्मक पीड़ा होती है उस समय उसमें से उबारनेवाला एक ही तत्त्व है और वो भगवद्कथा; हरि की कथा है। कोई शय्या पर पड़ा हो, अब उसे कहां कथा में हम ले जानवाले हैं? विज्ञान ने उपाय किया है। केसेट सुनाईए। अथवा तो हाल-चाल लेने जाये उससे कुछ मीठी बातें करें। उस आदमी को अंत समय में देहात्मक पीड़ा से राहत देगी, उसे मदद करेगी। दूसरा कुछ नहीं सुनाना उसे। उसे मीठी बातें सुनाए, मीठे बचन सुनाए।

दूसरी पीड़ा है पाप स्मरणात्मक पीड़ा। पूरी जिंदगी जो पाप किया हो और फिर वो पाप खूब चूभता है कि अरर्र...! मैंने पाप किया है, भूल की है, अपराध किया और उस समय ख्याल न रहा, इसको ऐसा कर डाला! ये सभी पाप स्मरणात्मक पीड़ा शुरू होती है। वो फिर बहुत वेदना उत्पन्न करती है। किसी को भी होगा साहब हां! अंत समय में होगा ही! 'तापस अंध श्राप सुधि आई।' दशरथ को पाप स्मरणात्मक पीड़ा। राम का, ब्रह्म का बाप है पर कौशल्या से कहता है, देवी, सामने की दीवार में तुम्हें कुछ दिखता है? दशरथ जी से कौशल्या कहती हैं, प्रभु, आपकी तबियत ठीक नहीं है। वहां दीवार ही है। कहते हैं, नहीं, मैं पागल नहीं हूं देवी! बहुत जिद्द की अवधपति ने तब पूछा, आपको क्या दिखता है? तो बोले, मुझको श्रवण के मां-बाप दिखते हैं। पाप स्मरणात्मक दुःख है; पाप याद आता है। उसकी औषधि एक ही है बाप! कोई उसको हरिकथा सुनाए अथवा तो कथा न समझ सके ऐसा हो; वो हरिनाम न ले सके ऐसा हो तो वो बैठे-बैठे बेरखा लेकर 'राम-राम', एक-एक माला करके उस दर्दी के ऊपर घुमाता जाए तो पाप स्मरणात्मक दुःख उसका नष्ट हो जाता है। उसका उपाय है भगवद्चर्चा, भगवद्नाम। नाम बहुत अद्भुत है। नाम महिमा गजब है!

तीसरा दुःख है अपने सगे-संबंधियों की ओर अपनी मोहात्मक पीड़ा। मैं मर जाऊंगा फिर लड़कों का क्या होगा? भाइयों का क्या? बाप का क्या? ये सब कैसे होगा? इन सबको कौन समझाएगा? ये जो मोह होता है। हमारी ममता जिस परिवार में हो उसकी पीड़ा याद आती है। और उसकी मुक्ति में भीम हरिकथा ही काम करेगी। 'रामायण' में इन सबके उपाय हैं। तुझको अंत में माँ की ममता वाधक है? बाप की ममता बाधक है? भाईयों की, लड़कों की सबकी चिंता होती है? क्या होगा? तो एक काम कर राम बोलते हैं, उन सबकी ममता का एक बड़ी रस्सी बनाकर मेरे पैर से बांध दे और फिर उस ममता के रस्सी से मुझको खींचना। उस ममता से भी मैं तेरे पास आकर खड़ा रहूंगा। ममता निरर्थक नहीं होगी।

तो देह की पीड़ा का दुःख, पाप के स्मरण का दुःख, सगे-संबंधियों का मोह और आसक्ति का दुःख और अंतिम दुःख एक ही है, भविष्य की चिंता। मनुष्य मरता है तो भविष्य की चिंता होती है। मैंने इतना किया था। इतना नहीं कर सका। अब क्या होगा? ये सब कैसे होगा? स्वाभाविक है। उसको मैं सलाह दूंगा हां साहब! मेरा जो मानो तो इतना आप सभी को अपनी थोड़ी-सी भविष्य की चिंता कम हो इतना कर लेना चाहिए। इससे अंतिम घड़ी में चिंता न होगी।

गतकल हम कथा के प्रवाह को आगे नहीं ले जा सके! थोड़े आगे बढ़ें बाप! भगवान राम, लक्ष्मण विश्वामित्र के साथ दूसरी रात्रि जनकपुर में पूरी करते हैं। सुबह होते ही तब राम-लक्ष्मण के साथ विश्वामित्र रंगभूमि में प्रवेश किए। जिसकी जैसी भावना वैसी प्रभु की मूर्ति का सबको दर्शन हुआ है। बंदीजनों ने उद्घोषणा की है। एक के बाद एक राजा खड़े होते हैं। महादेव के धनुष को कोई हिला नहीं सका! सन्नाटा छा गया! जनक राजा बैचैन हुए कि इतने राजा हैं; कोई धनुष को तोड़ नहीं सका वो तो ठीक पर तिल के दाने जितना उसकी जगह से हट भी नहीं सका? अब धरती पर कोई वीर नहीं! उसी समय मंच पर बैठे सुमित्रा नंदन लक्ष्मण खड़े हो गए! लक्ष्मणजी ने भगवान राम से विनंती की कि जनक अघटित निवेदन कर रहे हैं। तब इशारा किया, गुरु बैठे हो उनकी आज्ञा के बिना खड़ा नहीं होते। और राघव की पीठ पर हाथ फेरते हुए विश्वामित्र के मुख से शब्द निकले, राघव उठो, महाराज जनक को जो संताप हुआ है, उनका संताप मिटाने के लिए धनुष तोड़ो। गुरु को प्रणाम करके भगवान खड़े हुए। भगवान धनुष के पास पहुंचे हैं। भगवान ने किस तरह धनुष का एक छर पकड़ा, धनुष कैसे उठा, कब पकड़ा, कब ऊपर किया, कब टूटा, कुछ पता न चला!

शिव के धनुषभंग की आवाज़ सुनकर परशुरामजी आये। हाहाकार मच गया। फिर परशुरमजी विदा होते हैं और विघ्न पूरा हो गया। पत्र लेकर दूत अयोध्या गए। महाराज दशरथजी बारात लेकर पधारे हैं। मंगल मूल मागशीर्ष शुक्ल पंचमी का दिन निश्चित हुआ। जनकपुर में जयजयकार हुआ है। ऐसा उत्तम अवसर है तब मेरा गौरवशाली गुजरात और तंदुरस्त गुजरात, उसके हमारे मुख्यमंत्री विजयभाई रूपाणी आये हैं। मेरी व्यासपीठ कण्वऋषि के न्यास से; ऋषि परंपरा के न्यास से स्वागत करती है। बाकी राजसत्ता के साथ मेरा कोई लेना-देना नहीं है। कण्वऋषि के आश्रम में जब दुष्यंत राजा गए तब कण्व शिष्यों को कहते हैं, ब्रह्मकुमारों, अपने आश्रम में अपने देश के राजा आये हैं। और ऋषियों का कर्तव्य है कि उन्हें आशीर्वाद के लिए उन्हें आदर दें। ब्रह्मकुमार राजा का स्वागत करते हैं। ऋषि को राजा के साथ क्या लेना-देना? उसको उसकी कुटिया भली, उसका तप भला। मोरारिबापू को क्या लेना-देना? भला बापू का तप, भला उसका तलगाजरडा। पर कण्वऋषि की परंपरा है उसे साधु को निभाना चाहिए। अपने मुख्यमंत्री आदरणीय विजयभाई आये हैं। मेरी व्यासपीठ कण्व परंपरा में उसका स्वागत करती है। गुजरात की सेवा करने के लिए आपको और आपकी टीम को बहुत बल मिले और वो बल गुजरात के छोटे से छोटे आदमी को फलस्वरूप प्राप्त हो, ऐसी हमुमानजी के चरण में प्रार्थना करके अपनी शुभकामनाएं देता हूं।

ये सभी लोग हैं न अभी-अभी उतर पड़े है मानव धर्म, मानव धर्म! पर सनातन धर्म जैसा कोई मानव धर्म नहीं। वो कहते हैं, हमने नया संशोधन किया! पर सनातन के उदर में जगतभर का मानव धर्म समाता है। सनातन धर्म ने मानव धर्म का इन्कार किया? तो सब कहते हैं, हम दूसरे किसी धर्म में नहीं मानते, हम मानव धर्म में मानते हैं। पर मानव धर्म का बाप सनातन धर्म है वो तुम कैसे भूल जाते हो? ये एक बहुत गलत प्रचार शुरू हुआ है। और ऐसा करनेवाला गौरव ले रहा है! सनातन के उदर में से मानव धर्म, प्राणी धर्म, भूत धर्म, सत्य धर्म सब कुछ उसमें से निकला है। मानव धर्म ही है यह। कुछ बात तो बहुत विनय से कहनी ही पड़ेगी।

कथा विषयी के लिए लौकिक, साधक के लिए अलौकिक और सिद्ध के लिए पारलौकिक है।

बाप! भगवान की कथा का निरूपण चल रहा है। इतिहास को भी कथा कहा जाता है। पुराण को भी कथा कहा जाता है। ये कथा के अलग-अलग रूप हैं। परंतु अपनी कक्षा भेद के अनुसार तुलसीदासजी ने तीन प्रकार के जीवों की श्रेणी निर्मित की है कि जीव तीन प्रकार के हैं। सबका अपना-अपना दर्शन होता है। कोई चार प्रकार के जीवों की बात करता है। सबको प्रणाम। पर कलिपावनावतार जिनका ग्रंथ लेकर मैं गा रहा हूं, उन्होंने तीन विभाग जीवों के किये हैं। और शायद पूर्वग्रहों की ग्रंथि छोड़ दें तो हमें स्वीकार करना पड़ेगा। ग्रंथियां होगी तो हम नहीं स्वीकार कर सकते। जीवों का बड़ा विभाग जिसमें मैं और आप सभी भी आ जायें; उसमें मैं आपके साथ जुड़ता हूं, इस जीव का प्रकार है विषयी जीव। अपने जैसे संसारी जीव। हम असावधान होते हैं, कायम सावधान नहीं रह सकते। नीतिनभाई अपने रामकथा के प्रेमयज्ञ में आहुति स्वरूप जो संपादन करते हैं, वो और उनकी टीम अहेतु केवल व्यासपीठ प्रति स्नेह, बिलकुल अहेतु। और हर बार कहा जाता है कि तलगाजरडा की ये प्रसादी है और एक भी पैसा किसी को देना नहीं है। उसके नियमानुसार आप उसे मंगवाएं आप के यहां वह पहुंचेगी। वह रामकथा जो एक-एक कथा की सारगर्भित पुस्तिका तैयार होती है उसमें आज 'मानस-सावधान' और 'मानस-राजघाट' उस कथा का लोकार्पण हुआ। मैं न भूलता हूं तो मुझे याद आता है, उस समय कदाचित् व्यासपीठ ऐसा बोली है कि सावधान संसारी संन्यासी है और असावधान संन्यासी संसारी है। जो सावधान होगा प्रतिपल चौबीसों घण्टे ऐसा कोई भी संसारी संन्यासी है और असावधान यदि हम रहें तो ऐसा त्यागी भी कदाचित् संसारी हो सकता है। मैं और आप इसी दशा में हैं। हम सब विषयी जीव हैं। हम चौबीसों घण्टे सावधान नहीं रह सकते। मैं और आप जो निरंतर सावधान नहीं रह सकते उसके लिए कथा लौकिक होती है।

विषयन्ह कह पुनि हरिगुन गहरि।

विषयी जीव को भी यह कथा फायदा पहुंचाती है। वो भी इसमें से लौकिक भाव पकड़ता है। जीव का दूसरा प्रकार है साधक। अब साधक की कितनी व्याख्या करनी साहब! मुझको तो तलगाजरडा को एक ही टुकड़ा पसंद है इसलिए कहता रहता हूं कि किसी को भी कभी भी बाधक न हो उसका नाम साधक। बस सीधी बात। ये सिद्धांत नहीं है, अनुभव है। साधक हो उसके लिए कथा अलौकिक होती है।

कथा अलौकिक सुनहिं जे ग्यानी।

ज्ञानी माने साधक। जो ज्ञानार्जन के लिए प्रयत्न करता है गुरु के चरणों में बैठकर वो साधक। उसके लिए कथा अलौकिक हैं।

कथा अलौकिक सुनहिं जे ग्यानी।
नहिं आचरजु करहिं अस जानी।।

यह विचार कर किसी दिन आश्चर्य मत करना क्योंकि साधकों के लिए कथा अलौकिक है। हम सब विषयी जीव हैं, मैं और आप,

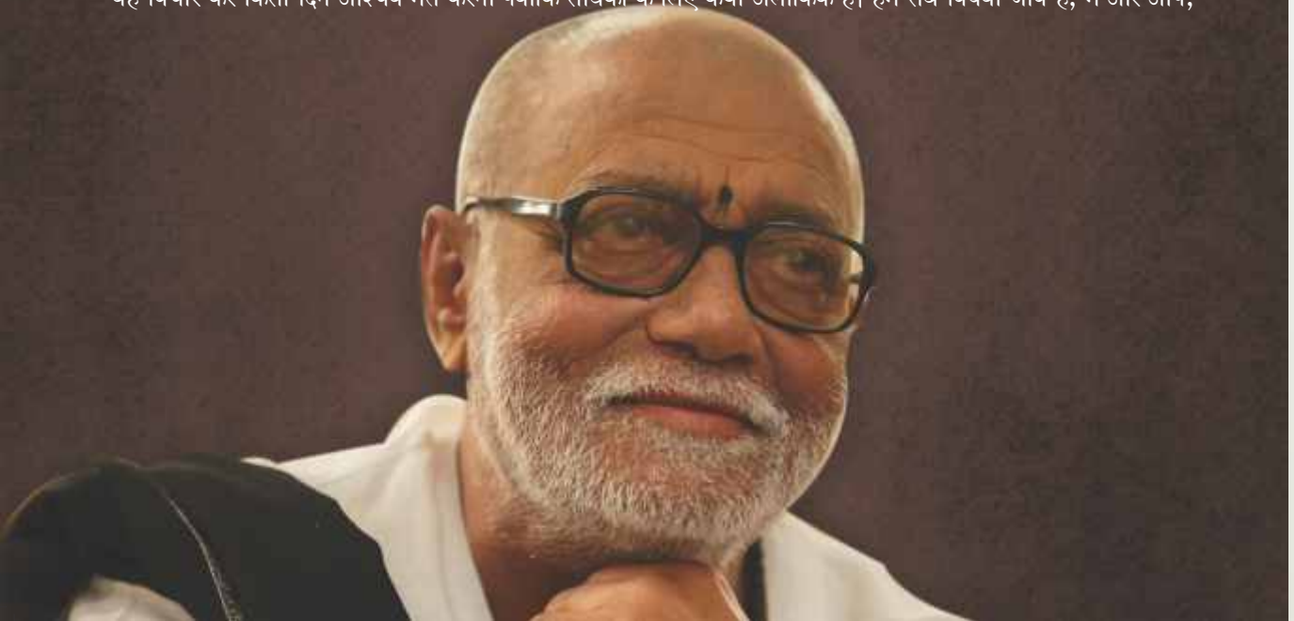

संसारी आदमी है हम सभी। हमारे लिए कथा लौकिक है। फिर उसमें से छनकर जो निकले हैं वो साधक हैं, उनके लिए कथा अलौकिक है। फिर तीसरा प्रकार है उसको सिद्ध कहते हैं। जो सिद्ध श्रेणी के जीव हैं उनके लिए कथा पारलौकिक है। जो सिद्ध महापुरुष हैं वे बहुत कम होते हैं। साधक थोड़े अधिक होते हैं। संसारी अपने जैसे जिस गली में निकलो वहां सामने ही टकराते हैं। तो कथा लौकिक है हम जैसे जीवों के लिए। कथा अलौकिक है साधकों के लिए। कथा पारलौकिक है सिद्धों के लिए। पर एक चौथी जीव श्रेणी तलगाजरडा ने निर्मित की है, जिसको मैं शुद्ध कहता हूं। सिद्ध भी नहीं, शुद्ध जीव की जो श्रेणी है उसके लिए कथा न लौकिक है, न अलौकिक है, न पारलौकिक; वो स्वयं एक कथा हैं।

राम तुम्हारा चरित्र स्वयं एक काव्य है।
कोई कवि बन जाय सहज संभाव्य है।
-मैथिली शरण गुप्त

अपना बीसवीं सदी का हिन्दी का समर्थ कवि, जिसने 'साकेत' लिखा। एक नये रूप में जगत को रामकथा दी। वो ऐसा कहता है कि रामजी, आपका चरित्र ही स्वयं काव्य है। आप खुद कथा है। शुद्ध है वो खुद कथा है। ऐसे किसी शुद्ध-बुद्धपुरुष के पास आप बैठे रहें, वो बोले नहीं तो भी कथा चलती रहती है। न शब्द होता है। उसमें कुछ नहीं होता। इसलिए कथा का निरूपण हम सब कर रहे हैं तब यह वस्तु भी ध्यान से न उतर जाये। शुद्ध होना चाहिए।

विषयी आदमी होगा उसको लौकिक कथा चाहिए। लौकिक फायदा चाहिए, प्रतिष्ठा मिले। आहा! बापू की इतनी सारी कथा हमने सुनी है! लोग ऐसा कहते हैं, हमने पचास सुनी; सौ सुनी। प्रतिष्ठा मिलती है। फिर लौकिक भाववाले जीव ऐसा कहते हैं, कथा सुनते हैं इसलिए पुण्य भी मिलता है। मुझको नहीं मालूम कि पुण्य मिलता है या नहीं। मेरी कथा में आना ही नहीं पुण्य के लिए! होगा वो भी जलकर खाक हो जायेगा! क्योंकि मैं आपको मांजने आया हूं, कलई करने नहीं आया हूं। दो वस्तु है। या तो आप बरतन को कलई करो, वो अधिक नहीं टिकती। या तो बर्तन को पेंदी से मांजो। कामवाले का काम करता हूं साहब! बरतन मांजता हूं। आपके अन्तःकरण का बरतन मांजता हूं। आप विचार कीजिए। बहुतों को पुण्य चाहिए। और मेरी 'रामचरितमानस' की कथा ऐसा कहती है कि आप कथा को पूरे की पूरी आत्मसात् करेगें तो आपका पुण्य भी समाप्त और आपका पाप भी समाप्त। आपकी पटरी ही कोरी हो जायेगी। क्योंकि पुण्य भी अवरोध है। अच्छी वस्तु है पाप की तुलना में। पर फ़र्क क्या पड़ता है? लोहे की बेड़ी हो या सोने की बेड़ी; बन्धन तो दोनों का है। लोहे की तो तोड़ भी सकते हैं। सोने की बेड़ी तो बड़े-बड़े त्यागी भी नहीं तोड़ सकते। क्योंकि उसमें तो आसक्ति। पुण्य के लिए कथा नहीं। मेरा शंकराचार्य मुझको सीखा गया है। मनुष्य के अंतःकरण में पुण्य भी नहीं रहना चाहिए और पाप भी नहीं रहना चाहिए।

न पुण्यं न पापं न सौख्यं न दुःखं
न मन्त्रो न तीर्थं न वेदा न यज्ञाः।
अहं भोजनं नैव भोज्यं न भोक्ता
चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम्।।

धर्म सौदा नहीं है; धर्म ऐसे ढ़ंककर किया सौदा नहीं है। इस भेद से बाहर निकलना चाहिए। और ये भेद मुक्त करनेवाला एकमात्र आदि-अनादि परंपरा जिसका आदि कहीं नहीं है, जिसका अंत नहीं है। न हिन्दु, न मुस्लिम, न ईसाई, न सिख दुनियाभर के जितने धर्म है प्रधान उसमें से कोई नहीं उसका नाम है सनातन धर्म। सनातन यानी शाश्वत का पर्याय। न उसका आदि, न उसका अन्त। बहुत पुराने धर्मों में अपने यहां यहूदी, ईसाई धर्म आयें। यहूदी, इस्लाम, उसका महिमा, उसके पवित्र ग्रंथ; सनातन वैदिक परंपरा है। हम सब उसीसे आये हैं। 'गीता' ने कहा, कौन-सा धर्म? जो शाश्वत है। 'गीता' को तो ना नहीं पाड़ सकते? अब आप इतिहास निकालिए। यहूदी धर्म, इस्लाम धर्म, बहुत पुराना धर्म पर कभी जन्म लिए हैं, जितनी-जितनी परंपराएं हमारी साधना पद्धति में विकसित हुई। ट्राफिक जाम न हो इसलिए सबने अपनी-अपनी बातें करके लोगों को आनंद पहुंचाया है पर उसके गर्भगृह में सनातन धर्म है। आदि जगद्गुरु कहते हैं, 'न पुण्यं न पापं', मेरा 'रामचरितमानस' फिर अन्त में कहता है-

पुण्यं पापहरं सदा शिवकरं विज्ञानभक्तिप्रदं
मायामोहमलापहं सुविमलं प्रेमाम्बुपूरं शुभम्।

देखिए, तुलसी का शब्द है 'सुविमलम्', केवल 'विमल' शब्द पर्याप्त है। विमल अर्थात् कुछ नहीं। एकदम साफ, कोरी पटरी। पर तुलसी कहते हैं, वो कंकर में कंकर आ गया हो और उसकी रेखा पड़ गई हो न वो निकल जाये उसको कहते हैं सुविमलम्। न पाप, न पुण्य। इसलिए मुझे अपने को ये कहना है कि हम विषयी जीव है। अपने लौकिक कथाएं सुनते हैं। कुछ फायदा होता है। पुण्य होगा। अच्छी वस्तु है। पर नहीं। खाली होओ। विषयी के लिए कथा लौकिक फायदा के लिए होती है। 'रामायण' में 'सुंन्दरकांड' में अंत में ये तीनों सूत्र आयें हैं। वो लौकिक को फ़ायदा, विषयी को ये फ़ायदा, साधक को ये फ़ायदा, सिद्ध को ये फ़ायदा।

सुखभवन विषयी को कथा क्या देती है? सुख देती है क्योंकि हम लौकिक सुख चाहते हैं। लौकिक भाव से सुनिए। सुख मिलेगा। फिर मिले न मिले, पर कथा सुनने का

तो सुख है ही न? सुख न मिलता हो तो आप क्यों बैठेगें ये मुझको बताओ न! आप सभी खाने थोड़े ही आते हैं? कथा में सुख मिलता है ये प्रतीति है। 'रामायण' लिखता है, 'सुखभवन संसय समन दमन।' विषयी को कथा सुख देती है। साधक होगा उसको जिज्ञासा होगी, संशय होगा, ये ब्रह्म तत्त्व समझ नहीं आता; ये भक्तितत्त्व समझ नहीं आता। उसको बार-बार प्रश्न होगें। साधक होगा उसके संशयों का कथा समाधान करती है। साधक के संशय को कथा नष्ट करती है। और सिद्ध? सिद्ध को एक ही खबर होती है, सिद्धाई से कब गिर जायेंगे। क्योंकि शिखर पर चढ़ने के बाद दूसरा कोई घाटा नहीं। बहुत उपर जाने की कोई जगह नहीं। अब गिरने के ही प्रसंग आयेंगे इसलिए उसको एक प्रकार का विषाद आता है कि कहीं गिर न जाउं, कहीं गुरु का बचन न लज्जित हो। यही एक शिखर पर पहुंचे हुए हो उन सिद्धपुरुषों को होता है। पर जो शुद्ध होता है वो तो स्वयं कथा है।

भगवान की व्याख्या क्या है। छः प्रकार का जिसके पास भग हो वो भगवान। श्री, ऐश्वर्य, ज्ञान, वैराग्य, यश, धर्म ये सब; छः प्रकार के भग होते हैं। छः प्रकार की वस्तु जिसके पास है ऐसे किसी को भी आप भगवान कह सकते हैं। गांव का यदि किसान हो और उसमें यदि श्री हो, यश हो, कीर्ति हो, ज्ञान, वैराग्य, धर्म हो तो मोरारिबापू उसको भगवान कहने को तैयार है। क्योंकि लक्षण हैं ये भगवान के। इससे भगवान होते हैं। मतलब जिसमें छः वस्तु हो वो भगवान। पर 'रामायण' ने भगवान के छः लक्षण दूसरे बताएं हैं। ये तो तुलसी के भगवान; मोरारिबापू के भगवान।

गई बहोर गरीब नेवाजू।
सरल सबल साहिब रघुराजू।।
नाम गरीब अनेक नेवाजे।
लोक बेद बर बिरद बिराजे।।

मुझको कहने दीजिए, सूरदास का गरीब नवाज कृष्ण है। तुलसीदास का गरीब नवाज राम है। और कबीर का गरीब नवाज साहिब है। अमीर खुशरो का गरीब नवाज निजामुद्दीन औलिया और मेरा गरीब नवाज मेरा हनुमान है। इस पंक्ति में तुलसी ने भगवान के छः लक्षण बताए हैं, वो जिन में है वे रघुराज राम भगवान हैं।

'गई बहोर', जो बुद्धपुरुष मेरा और आपका चला गया हो उसे वापस लाये उस राम रूपी गरीब नवाज का पहला लक्षण। प्रतिष्ठा गई हो, वापस ला दे; प्रतिष्ठित कर दे। समृद्धि गई हो, प्रारब्ध में न हो शायद पर आंतरिक संपत्ति को वापस ला दे, आध्यात्मिक संपदा से भर दे वो गरीब नवाज। घर के अंदर कोई ऐसा अभाव आ गया हो कि अब कभी भी ये स्थिति सुधरेगी नहीं पर ऐसा कोई बुद्धपुरुष अपनी बंदगी में बैठे-बैठे हमें याद करे और हमारी अकिंचनता, अपना अभाव भरपूर कर दे वो ईश्वर का एक लक्षण है। अहिल्या की इज्जत गई थी। अहिल्या को सबने ठोकर मारी, और मेरे राम आयें और अहिल्या का जय जयकार हुआ। कोई भी वस्तु चली गई होगी उसको वापस ला दे वो बुद्धपुरुष। कोई सद्गुरु जो अपने लुटे हुए को वापस ला देता है। अपना ज्ञान, समझ वापस ला देता है। हम कुमार्ग पर चले गए हो वहां से यू-टर्न लिवा दे वो अपना भगवान। और प्रत्येक परंपराओं में आप देखेगें महापुरुषों के इतिहास में। ऐसे कितनों के जिनका लूंट गया था वो वापस ला दिया। उसको मार्ग पर चढ़ा दिया उसको पथ पकड़ा दिया।

पहला लक्षण तुलसी के भगवान का। शास्त्रों के भगवान के लक्षण छोड़ दो। सहज भगवान होना चाहिए। अपने हाथ में ईश्वर होना चाहिए। इसीलिए तो वेद कहता हैं, 'अयं मे हस्तो भगवान, अयं मे भगवतरः।' वेद कहता हैं, मेरा हाथ परमात्मा है। भारत का ऋषि कह रहा है। मनुष्य का अपना हरि सहज होना चाहिए। मंदिर का ईश्वर तो साक्षीभूत है। बाकी हाथ में होना चाहिए। 'अपना हाथ जगन्नाथ' हस्तगत हरि। सहज जगदंबा, सहज हनुमान। खाली मंदिर में बैठा है वो कितना काम आयेगा अपने को? वो तो साक्षी है। वहां जाने पर हमें शांति मिलती है। वह मंदिर में बैठा इष्ट हमारा साक्षी है, हमारा दृष्टा है। इन सभी महापुरुषों के सहज हरि। तो भगवान की जो शास्त्रीय व्याख्या है वो अद्भुत, अवश्य; पर तुलसी कहते हैं, 'गई बहोरि।' अपना सब चला गया हो उसको वापस लाकर रख देता है साहब! और जबरदस्त प्रमाण, सुग्रीव का सब कुछ चला गया था पर भगवान ने उसको सब वापस दिला दिया।

पावा राज कोश पुर नारी।

गरीब नवाज; ये दूसरा लक्षण भगवान का गरीब नवाज। गरीबों को नवाजते हैं; कोई रंक होकर उसकी शरण में जाता हैं तो उसको नवाजते हैं; उसको उतना ही भर देते हैं। बंदगी गरीबी स्वभाव से होती है; मूछों पर हाथ रखकर नहीं होती। बंदगी तो विनम्रता का आभूषण पहनकर ही हो सकती है। तीसरा लक्षण-

सरल सबल साहिब रघुराजू।

सरल; अपना भगवान ऐसा होना चाहिए जो सरल हो। अपने को भगवान कठिन पड़े वो किस काम का? कैलास जाएं और तब महादेव मिलें वो नहीं चलेगा। हमें तो तलगाजरडा में विश्वनाथ होने चाहिए। अपना भगवान सरल होना चाहिए। वहां जाएं माताजी के गढ़ी पर जाएं, चोटीला जाएं; वहां तो बैठी ही हैं। एक बार बोलिए 'सोनलमा आभ कपाळी' वहां तो ऐसा होता है कि अपने घर में, अपने आंगन में वो नाचने आये। अपनी माँ सरल होती है। वो भगवान है जो सरल है।

चौथा लक्षण सबल। सरल हो अपने जैसा ही वो अपना क्या काम करेगा? वो तो सबल होना चाहिए। शंकर एक भी कपड़ा नहीं पहनते पर 'चपटी भभूत में है खजाना कुबेर का।' सबल होना चाहिए; सामर्थ्यवान ईश्वर होना चाहिए। सरल, सबल, साहिब; पांचवां, अपना भगवान वो साहिब होना चाहिए। जिसके चरण में सिर झुकाकर उठाएंगे न तो लेख बदल जायेगा साहब! प्रपंचों की पोटरी छूट जायेगी साहब! ऐसा साहब होना चाहिए। और छठ्ठा वो रघुराज होना चाहिए। रघुवंश में आये रघुवंश अर्थात् वंश और कुल की बात नहीं है यहां। पर 'ज्ञाने मौनं', कवि कालिदास रघुवंश का लक्षण बताते हैं कि जब ज्ञान हो जाता है तब मौन हो जाते हैं; बोलते ही नहीं। शब्द बोलता हो और कोई उसकी प्रशंसा करे तब पता नहीं चले इस तरह मक्खी उड़ाने के बहाने ऐसे देख लेता है। यहां प्रशंसा शुरू हुई और ऐसे देखने लगते हैं। किसी की निंदा शुरू कीजिए कि तुरंत विषयान्तर करा ही देगा। उसको रघुवंशी कहा है। ये छठ्ठा लक्षण है।

तो शास्त्र में भगवान के छः लक्षण; मेरा गरीब नवाज, मेरा भगवान राम, उसके ऐसे छः लक्षण है। 'रामायण' ने इक्कीसवीं सदी के सभी प्रेक्टिकल सूत्र दिए हैं। 'भागवत' और 'रामायण' गजब काम कर गये! देखिये ये बहनें और लड़कियां बैठी है, उन्हें मुझे बहुत शांति से कहना है। सब को कहना है। आप सुनिए। पतंजलि ने अष्टांग योग दिया। अब वो यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान, धारणा और समाधि। ये अष्टांगयोग। अब अपने को ये सब कठिन होगा। यम-नियम हम कहां पाल सकते हैं? हमको मरचे का भज़िया खाना हो! हमें रोज फाफड़ा खाना हो! चाहे जब चाय पीना हो! इसमें यम-नियम हम क्या पालेगें? मुझ से ये होगा ही नहीं! यम-नियम कहां हम? एक ही टाईम जगना, ऐसा अपने से न होगा! संयम-नियम पालता है उसके मैं पैर लागता हूं परन्तु अपना तो काम ही नहीं! फिर आसन; लो आसन कीजिए। पद्मासन, कूर्मासन, दर्भासन। सहजासन जैसा एक भी आसन नहीं; सहज आसन। प्राणायाम भी अपने को नहीं आयेगा। करते हो तो सभी करना हां भाई, छोड़ मत देना। योगा बहुत अच्छी वस्तु है। योग्य बनकर योग करना। अपने को ऐसा आया ही नहीं कुछ! मैं तो रामनाम लेता हूं उसमें सब आ गया।

अपने कहां आसन और प्राणायाम! आप जो करते हो वो करिएगा। पर मैं ऐसा कुछ नहीं करता। प्रत्याहार में पतंजलि के योग में ऐसा कहा जाता है कि आप की इन्द्रियां जहां-जहां गई हो, आप के विचार जहां-जहां गए हो, अपनी इन्द्रियों और वृत्तियों को वहां से लौटा लेना वापस; पर कैसे मोड़ना? घर से गायें जैसे चरने जाती है; पूरे दिन खेत में चरती है और फिर गायों का झुंड़ आता है उसे वापस लौटा लेना उसको प्रत्याहार कहेगें। यह दृष्टांत बहुत अच्छा है पर इन गायों को फेर सकते हैं, इन्द्रियों को फेरना बहुत कठिन है। अनुभव तो हमारा कुछ अलग ही है! व्याख्याएं अलग ही करते हैं! अनुभव मेरे और आपके क्या है? अपने ऐसा कुछ हुआ ही नहीं! वृत्तियों का प्रत्याहार कीजिए। फिर ध्यान, बाद में धारणा। ध्यान में कोई महत्त्व की धारणा हो जाये और फिर समाधि आठवां। 'भागवत' की गोपी को उद्धव ने पूछा कि आपने पतंजलि का अष्टांग योग किया है? गोपियों की आंख में आंसू आ गये कि नहीं, हमारा प्रेम अष्टांग योग है। पतंजलि अष्टांग योग हमारा नहीं है। गोपियां जवाब देती है। उद्धव, सुबह के प्रहर का हमारा पहला योग हम गायों को दूहती हैं न वो योग है। गाय-भेंस द्वार पर हो और पवित्र भाव से सुबह में दूहों; अपना शास्त्र कहता हैं, वो योग है। कठिन-कठिन हमको इतना सब दिखाया है कि हम सब उसमें ही टूट गये! ये मेरे शब्द नहीं है; व्रजांगनाओं के शब्द हैं। गोदोहन हमारा योग है। और लगभग आप देखना; हमें दूहना तो आता है न? मेरी माँ सावित्री माँ गाय दूहती थी। हम गाय रखते थे। और जो गाय दूहता है न उसमें निर्विकल्प स्थिति बहुत आती है। उसके विचार कम हो जाते हैं। क्योंकि उसके दोहनी में धार जानी चाहिए। इधर-उधर नहीं होगी। उसे पता नहीं होगा पर वैचारिक प्रमाण कम होने लगेगा। क्योंकि घटना ही ऐसी है। उसको गोपीजन प्रेम अष्टांग योग का पहला पायदान कहती हैं।

दूसरा, दधिमंथन। इतनी साधना किसने सरल कर दी साहब! इतना सरल है। पर हमको खूब कठिन बताया है! दधिमंथन योग है। आप छाछ बिलोना वो योग है। और यदि छाछ बिलोया हो तो अभी के समय में जो मशीन पर आपको चलना पड़ता है न वो नहीं चलना पड़ता! बहुत से तो तबियत की चिंता ही में चल बसे! डोक्टरों का कहना मानना चाहिए। शरीर का चेक-अप करवाना पर इतना डरना नहीं चाहिए। डर अधिक मार डालती है। यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान, धारणा, समाधि।

मुदिता मथे विचार मथानी।

तुलसीदासजी ने जो मथना आरंभ किया है 'उत्तरकांड' में। आहाहा! और आहीर का लड़का, तुलसीदासजी ने नाम लिखा है।

निर्मल मन आहीर निज दासा।

सुंदर मन इसलिए आहीर कहा है। फिर उसे हम आयर कहें, आहीर कहें। पर उनकी व्याख्या समझना साहब! निर्मल मन हो उसे आहीर कहते हैं। हां, जिसके मन में दूसरा छाप न पड़े उसे तुलसीदासजी ने आहीर का नाम लिखा है।

नोइ निवृति पात्र बिस्वासा।

गाय को दूहने के लिए जैसे छनना बांधते हैं; जीवन में अनेक विषयों में निवृत्ति आयी इससे इन्द्रियों का पैर बंध जाता है। विश्वास की दोहनी लेकर बैठे हों दूहने के लिए सात्त्विक श्रद्धा की गाय को और उसमें से परम धर्म का दूध वो दूहे। फिर उसका दहीं-मंथन करें वो गोपियों का दूसरा योग है।

तीसरा योग धान कूटना। मूसल लेकर जो धान कूटना था उसको दूसरी एक्सरसाइझ करनी नहीं पड़ी। ओखली में कूटना अद्‌भुत! पहले तो मिरचा भी कूटना ही पड़ता था। अब सब तैयार मिलता है; नहीं तो कूटना पड़ता था, धनिया, जीरा कूटना पड़ता था, मिरचा कूटना पड़ता। गोपीजनों का अष्टांग योग प्रेम अष्टांग योग। उसमें गाय दूहना, दहीं मंथना, अनाज कूटना और चौथा आंगन झारना ये योग है। पांचवां योग है गायों को झुण्ड़ में भेजना। आयें तब 'मेरे बाप, मेरे बाप' कह के वापस बांध देना वो पांचवां योग है प्रेमयोग अष्टांग योग में। और छठ्ठा योग है घर में बूढ़ी वृद्ध माँ हो उसको खिलाना और उन्हें पानी देना। माँ-बाप हो उनका ध्यान रखना उसे योग गिना है। पर ये योग नहीं करता! घर के बुज़ुर्गों का बिस्तर ठीक कर देना, उनके पलंग के पास पानी का लोटा रख देना, ये सभी योग साधना है साहब! और हद कर दी इस अष्टांग योग ने! वो यहां तक कहती हैं कि छोटे-छोटे लड़कों का पालने में सुलाकर उन्हें कहानी कहते कहते लोरी सुनाती हैं उसको भी योग कहते हैं। लोरी को भी योग गिना है। मुझको बहुत पसंद है यह योग। घर की माँ हो, व्रजांगनाओं का भाव जिसमें होगा वो फिर घर में सबको सुलाकर पूरे समय उसको हरिभजन का समय ही नहीं मिलेगा। उसका भजन ही; उसका योग ही यही है। उसको कुछ स्पेशियल करना ही नहीं पड़ता। पर फिर बाद में ऐसा होता है, सब सो गए और फिर रात में बैठकर छोटी-सी माला लेकर बोलते-बोलते रोए ये आठवां प्रेममारग का अष्टांग योग है।

तो हम सब विषयी जीवों में आते हैं इसलिए हम लौकिक कथा के अधिकारी है। साधक हैं वो सब अलौकिक कथा के अधिकारी है। इस कथा के जो निरूपण चल रहे हैं उसमें कथा का एक निरूपण तुलसीदासजी ने ऐसा लिखा है-

मंत्र महामनि बिषय ब्याल के।
मेटत कठिन कुअंक भाल के।।

तुलसी कहते हैं कि रामकथा तो एक महामंत्र हैं; एक महामणि है। जैसे अमुक मणि सर्प के माथे पर रहती है पर वो सर्प किसी को काट ले और उस पर मणि रख दें तो विष उतर जाता है उसी तरह रामकथा विषय के सर्प जिनको काटे हो उसे उतारनेवाला सर्प मणि है और मनुष्य के गलत लिख गये लेखकथा को मिटा देती है; बदल देती है; कहां से कहां पहुंचा दे साहब! मैं तो अपना जीवन देखता हूं। स्लीपर की पट्टी टूट जाती तो शूल भरता था! आज इस कथा ने कितना बड़ा काम किया हैं! समूचा चित्र बदल डालती है ये कथा। पुनः तुलसी कथा का निरूपण करते हुए लिखते हैं-

सद्‌गुरु ग्यान बिराग जोग के।
बिबुध बैद भव भीम रोग के।।

रामकथा स्वयं सद्‌गुरु है। ज्ञान और वैराग्य का उपदेश देनेवाली यह कथा अपना सद्‌गुरु है। संसार में रोग को मिटानेवाले वैद्य जैसी ये रामकथा है। और एक बात मुझको बहुत पसंद है, ये कथा क्या है?

साधु सुमति तिय सुभग सिंगारु।

साधु बुद्धिरूपी स्त्री का ये कथा सुंदर शृंगार है। 'रामचरितमानस' की परिभाषा जब तुलसी ने शुरू की तब कथा को साधु की सद्‌बुद्धिरूपी स्त्री का आभूषण बताया है। उसका सुंदर गहना ये रामकथा है ऐसी कथा 'मातृदेवो भव', 'पितृदेवो भव' और 'आचार्यदेवो भव' के स्मरण में हमने शुरू की है और कथा के विविध भागों का हम निरूपण कर रहे हैं।

जनकपुर में अयोध्या से बारात आयी है। मार्गशीर्ष शुक्ल पंचमी का दिन निश्चित हुआ लग्न का। गायों का झुण्ड वापस आये और गोधूलि उड़ती हो ऐसे समय राम के वरयात्रा का मूरत निकला है। भगवान राम जिस घोड़े पर सवार हुए वह घोड़ा साक्षात् कामदेव बन गया है। कामदेव ने घोड़े का रूप लिया। उस पर राघव बैठे हैं। भगवान राम जगत को कहते हैं, मैंने भी लग्न किया। आप भी लगन कीजिए। पर इतना ध्यान रखिए, काम की लगाम अपने हाथ में रखिएगा। जनवासे में पहुंचा है वरघोड़ा। परछन हुआ। जानकी को आठ सखियां मंडप में ले आयी है। भगवान रामजी ने पाणिग्रहण किया। वशिष्ठ महाराज ने जनकजी को कहा, महाराज, आप की एक पुत्री उर्मिला और छोटे भाई कुशध्वज की दो पुत्रियां श्रुतकीर्ति और मांडवी ये तीनों लड़कियां कुंआरी ही हैं। हमारे तीनों राजकुमार कुंआरे है। आज ही एक साथ सबका विवाह कर दें? उर्मिला को कन्या का स्वांग सजाकर लाये हैं। लक्ष्मणजी को अर्पण हुई। मांडवी भरतजी को अर्पण हुई। श्रुतकीर्ति शत्रुघ्न महाराज को समर्पित हुई। धीरे-धीरे सभी विधि पूरी हुई। प्रेम के डोर से मन बंध चुका है। अब महाराज दशरथजी ने विश्वामित्र को कहा, महाराज, जनकजी से विदाई ले। चार डोलियां तैयार हुई। श्रुतकीर्ति, मांडवी, उर्मिला और जानकीजी माता-पिता को गुरुजनों को प्रणाम करके अपनी-अपनी डोली में विराजमान हुई हैं। गांव के बाहर तक माता-पिता, परिजन, पुरजन सभी पहुंचाने गये हैं। पुत्री को सीख का सौगात दिया। यह भारत की सभी लड़कियों को सीखना चाहिए। अमुक मूल्य छोड़ने नहीं चाहिए। क्या कहूं?

सास ससुर गुरु सेवा करेहु।

सास-ससुर की सेवा करना और अपने कुलगुरु की सेवा करना। पति की इच्छानुसार व्यवहार करना। तो सुखी रहोगी। संस्कार का दहेज दिया है। गांव के बाहर सभी पहुंचे हैं। जनकराजा सब से मिल लिए। उर्मिला, श्रुतकीर्ति, मांडवी सब की डोली बिदा हुई। डोली उठते ही जानकी ने अपना परदा उपर किया और माँ सुनयना से विनती की। इसका नाम पुत्री। भारत की पुत्री बाप का घर छोड़ती है, ससुर के घर जाती है तब उसे अधिक से अधिक चिंता होती है तो अपने पिता की होती है। भाई की चिंता होती है अवश्य। माँ की चिंता होती है। पर तुलना में बाप की चिंता अधिक होती है। सुनयना से कहती है, माँ हम चारों बहनें एक साथ है और एक ही घर में है, हमारी थोड़ी भी चिंता मत करना। आपके दिए संस्कार को हम रोशन करेगें। पर बोलते-बोलते वैदेही की आंख में आंसू छलके हैं। जनक को दिखाकर कहा, माँ, हमारी चिंता मत करना। परन्तु हमारे पिता की उम्र हुई। माँ, आप उनका ध्यान रखना। पुत्री जाती है तब उसे बाप की चिंता होती है। महाराज जनक ने इन शब्दों का श्रवण किया। आंख से आंसूओं की धारा बही। मैंने बहुत बार कहा है साहब! एक का एक लड़का हो, पूरा जीवन, पूरा कुल उस पर निर्भर हो। पर भरीजवानी में आत्महत्या में मृत्यु पाये तो दुनिया में कितने ऐसे बाप होंगे जिनका दिल टूट जायेगा; ज़िंदगी खतम हो जायेगी पर आंख में आंसू नहीं आते। इतने मजबूत हृदय के हों पर ऐसा बाप मिलना मुश्किल है कि अपनी पुत्री को बिदा करते समय उसको आंसू नहीं आये। और हमारा दादल तो कहता है-

लूटाई गयो मारो लाड खजानो, दाद हुं जोतो रह्यो।
जान गई मारी जान लईने हुं तो सुनो मांडवडो।
काळजा केरो कटको मारो हाथ थी छूटी गयो।

पालकी दिखना बंध हुई। यहां रास्ते में ठहरते-ठहरते रास्ते में आनेवाले लोगों को सुख देते-देते पवित्र दिन को सभी अयोध्या पहुंचे हैं। माँ कौशल्या ने चार सिंहासन लगाए हैं। चारों पर चारों दंपतियों को बैठाकर कौशल्या ने आरती उतारी है।

दिन बीतने लगे। महेमानों ने बिदाई ली। अब अन्तिम विदाई महर्षि विश्वामित्र की बाकी है। विश्वामित्रजी ने अनुमति मांगी, राघव, मैं तो वैरागी साधु हूं। आपके यहां आया। आपका प्रसंग पूरा हुआ। अब मैं अपने भजन के स्थान पर वापस लौटूं। साधु को किसी के घर प्रसंग मनाया जाये तो जाना चाहिए। उसमें भी इक्कीसवीं सदी में तो थोड़ा प्रेक्टिकल भी बनना चाहिए। प्रसंग पूरा हो तो अपना मूल धर्म पकड़ लेना चाहिए। हम सब रिसेप्शनों के लिए नहीं है! हम आंतरशोध के लिए हैं साहब! फिर वापस भजन के लिए निकल पड़ते है। नहीं तो दुनिया तो रोक ही रखेगी साहब! आज विश्वामित्र ने बिदाई मांगी है। पूरा राजपरिवार पग में पड़ा है। दशरथजी ने कहा, महाराज विश्वामित्रजी, ये सभी संपदा आपकी है। मैं तो अपने बालकों, पुत्रों, पुत्रवधूओं, रानियों सहित आप का सेवक हूं। और विश्वामित्र से एक सम्राट ने मांगा है। मैं इस प्रसंग पर समाज को कहता हूं वितरागी, भजनानंदी साधु आपके द्वार आयें और आपके प्रसंग को सुंदर बनाये और जब विदा ले तब उससे दूसरी भीख नहीं मागनी चाहिए। दशरथ क्या कहते हैं? दो वस्तु मांगते हैं। मेरे बालक है इन सभी लड़कों पर कृपा करते रहिएगा। और दूसरा क्या मांगा? आपको भजन में, साधना में कभी अवकाश मिले और उसकी अखंड स्मृति में से हमारी थोड़ी याद आयें, हम तो शायद भूल जाये पर आप आकर हम संसारियों को दर्शन देते रहिएगा। विश्वामित्रजी ने विदाई ली।

हम सब विषयी जीव हैं। हम चौबीसों घण्टे सावधान नहीं रह सकते। जो निरंतर सावधान नहीं रह सकता उसके लिए कथा लौकिक होती है। साधक हो उसके लिए कथा अलौकिक होती है। जो सिद्ध श्रेणी के जीव हैं उसके लिए कथा पारलौकिक है। जो सिद्ध महापुरुष हैं वो बहुत कम होते हैं। साधक थोड़े अधिक होते हैं। संसारी अपने जैसे जिस गली से निकलो वहां सामने टकराते हो। तो कथा लौकिक है अपने जैसे जीव के लिए। कथा अलौकिक है साधक के लिए। कथा पारलौकिक है सिद्धों के लिए। पर एक चौथे जीव की श्रेणी तलगाजरडा ने निर्मित की है, जिसको मैं शुद्ध कहता हूं। शुद्ध जीव की जो श्रेणी है उसके लिए कथा न लौकिक, न अलौकिक, न पारलौकिक। वो स्वयं ही एक कथा है।

असंग साधु को किसी फल की अपेक्षा नहीं होती

'मानस-कथा', जिसका निरूपण हम संवाद के रूप में कर रहे थे। कोई उपदेश या आदेश न था; विनय अवश्य था कि ऐसा हो तो अच्छा है। उपदेश नहीं था। आपके साथ बातचीत चल रही थी। कथा के लिए 'महाभारत' में चार शब्दों को प्रयोजित किया है व्यासजी ने। चारों का अर्थ व्यास महाराज ने कथा किया। 'महाभारत' के रचयिता भगवान व्यास कहते हैं एक शब्द, जो अपने यहां साहित्य जगत में, शैक्षणिक संस्थाओं में इस्तेमाल होता हैं; प्रेमानंदी परंपराओं में, गांव की गलियों में, चौक में भी ये शब्द इस्तेमाल होता है; वो है आख्यान। आख्यान भी कथा है। 'महाभारत' में दूसरा कहते हैं उपाख्यान। 'महाभारत' में हमें बहुत-से उप-आख्यान मिलेगें। वो भी कथा का ही गोत्र रखता है। तीसरा, पुराण कथाएं। आप 'महाभारत' का दर्शन कीजिए तो उसमें अनेक पुराणों के संदर्भ हम को मिलेगा क्योंकि पुराणकर्ता और 'महाभारत' के कर्ता दोनों एक हैं। इसलिए पौराणिक प्रसंगों को भी 'महाभारत' कार ने कथा कहा है। और चौथा, इतिहास। इन चारों को एक शब्द में 'महाभारत'कार कथा कहते हैं। कदाचित् इसमें हमने भी, पुराणों के संदर्भों को कभी-कभी लिया है। इतिहास की बातें भी ली है। एक सद्भाव ये लड़का व्यक्त कर रहा था अपने परिवार का शुद्ध भाव, उसको स्वीकार करता हूं। बाकी मुझको तो पूरी दुनिया में यही काम करना है। अनेक स्वभाव के सभी मनुष्यो के साथ एक डिस्टन्स रखकर असंग रह कर काम करना है। किसी के हाथ को कमल की उपमा दी जाती है। परमात्मा को तो मुखकमल, नेत्रकमल, हृदयकमल, चरणकमल; सब कमल, कमल। इसलिए कि कमल असंग है। कमल बहुत महत्त्वपूर्ण फूल है पर वो असंग है। अपने को कमल की असंगता का ही ख्याल है। पर कमल का बहुत ही बड़े से बड़ा गुण ये है कि यह एक ही फूल ऐसा है उसको कोई फल की अपेक्षा नहीं है। कमल के फूल को कोई फल नहीं होता। असंग साधु उसे कहेगें जो कमल के फूल की तरह रहता है। जिसके साथ रहता है उससे किसी फल की अपेक्षा नहीं होती। फूल ही रहता है वो कमल है। इसीलिए ईश्वर के हाथ-पैर सबको कमल कहा जाता है क्योंकि उसको फल नहीं लगता। शेष सबको फल आता है।

आपको पता है, इस्लाम धर्म में शैतान की व्याख्या क्या है? आपको डराता नहीं हूं शैतान से क्योंकि हम डरें ऐसे नहीं है, लगभग हम हैं! शैतान की एक व्याख्या है कि थोड़ा बहुत किसी का उपकार करता है अथवा तो थोड़ा उपकार नहीं करता तो भी दूसरे से खूब बड़े फल की आशा रखता है उसे इस्लाम परंपरा ने शैतान कहा है। हम साधु न बने तो कुछ नहीं, हम शैतान न बने। थोड़ा किया हो और बड़े फल की इच्छा करे! कभी कुछ नहीं करता! संसार में बहुत-सी संस्थाएं ऐसी हैं, कोई काम नहीं करती, फल वे बड़ा ले जाती हैं! करना कुछ नहीं! ये शैतान का लक्षण है साहब! इसमें किसी मज़हब का फ़र्क नहीं है। कोई भी मानवजाति हो उसको इस्लाम धर्म ने शैतान कहा है। शैतान की दूसरी परिभाषा इस्लाम धर्म ने की है और वो है जो नेकी नहीं करता, नेक काम नहीं करता वो शैतान है। हम नेक काम नहीं कर सकते तो जहां नेक काम होता हो उसमें रोड़ा नहीं डालें। अधिकांशतः गांव के लोग यहां आये हैं। उन सब को मैं कहूंगा, आप के गांव में जो विकास के कार्य करते हो उसमें अपने छोटे-छोटे स्वार्थ का रोड़ा मत डालना। झूठ-मूट राजनीतिज्ञों के बहकावे में आकर गांव के काम को अटकाना नहीं। नेकी से दूर भागने की बात है। महुवा की कितनी ही संस्थाएं है और इन सभी संस्थाओं के साथ मैं सद्भाव रखता हूं। दुनिया तो ऐसा ही मानती है कि ये सभी संस्थाएं मोरारिबापू की ही हैं! और इसमें हम नेकी या कल्याण करने से कहीं भूल से भी चूक जाएं तब अंगूली मुझ पर उठेगी कि ये मोरारिबापू की संस्था है! ऐसा बोला जाता है। इसीलिए नेकी का ध्यान रखना, नहीं तो हम सब शैतान में गिनायेगें। जहां-जहां समाज में, गांव में, नगर में, वर्गों में शुभ हो वहां अवरोध नहीं बनना चाहिए।

तीसरी शैतान की व्याख्या बहुत सुन्दर इस्लाम धर्म ने की है वो, चार वस्तु करता है वो शैतान है। एक चोरी करे; दूसरा व्यभिचार करे; तीसरा हिंसा करे; चौथा मद्यपान करे। मद्यसेवन; मुझको प्रार्थना करनी है अपने पूरे समाज से कि आज पूरा हो और आप निकलें तो हो सके तो भले धीरे-धीरे पर व्यसन को कम करना। एक झटके से व्यसन चला जाय यह मैं समझता हूं कि मुश्किल है। व्यसन का संस्कृत में अर्थ होता है दुःख। सीधा दुःख ही है। अपना निमंत्रित दुःख है ये व्यसन। व्यसन थोड़ा कम हो, जो कुछ भी पीना बंद हो। गांवों में ये सब बनता हो तो वो बंद हो तो अच्छा। गांव की, समाज की, गायों की सेवा हो। अपनी गायें बचे। गांव में कोई विधवा माँ हो उसका पुत्र बनकर हम उसकी सेवा करने लगे। ये सभी इंसानियत के कार्य हैं। मद्यपान, चोरी, व्यभिचार और हिंसा इस्लाम धर्म ने इसको शैतानकर्म कहा है। और चौथा इस्लाम धर्म के कहे अनुसार शैतान कर्म है निःसार प्रवृत्ति; जिसका कोई सार न हो ऐसी प्रवृत्ति। जिसका कोई परिणाम नहीं, जिसमें से कुछ निकले ही नहीं। ऐसी बिलकुल सारहीन प्रवृत्ति उसको शैतान कर्म कहा है इस्लाम धर्म में। साधु न हुआ जाए तो कोई चिंता नहीं; शैतान न बन जाएं। इसके लिए बहुत ही बड़ी जिम्मेदारी मेरी और आप की है।

'मानस-कथा' जब विराम की ओर जा रही है तब मैं और आप एक प्रयोग कर रहे थे नव दिवस यहां साथ में बैठकर। मोरारिबापू सब जानते हैं और सब तरह से महान हैं ऐसा कुछ नहीं। हम सबको अपनी बुराईयों, कमजोरियों का दर्शन करना चाहिए, खड्डा भरना चाहिए। तो एक कथा भी बड़ा काम करती है। कारण? एक कथा के अंदर मानव की कितनी समृद्धि खर्च होती है! कितना श्रम, कितने विभाग काम करते हैं तब एक ऐसा अद्भुत कार्य सम्पन्न होता है। यह प्रवाह, प्रवेगी प्रवाह ऐसे ही न चला जाये इसलिए हम और आप शैतानी कर्मों से बाहर निकलें।

तो साधु हाथ पकड़ता है तो छोड़ता ही नहीं। पर हम ही कभी-कभी छुड़ाकर भाग जाते हैं! प्रतिष्ठा के लिए, फोटो पड़वाने के लिए हम ही ऐसा करते हैं! बाकी साधु दो काम करता है। थापे और उथापे। दोनों काम साधु करता है। किसी समय संस्था स्थापित करेगा और कभी तितर-बितर कर देगा। और उसे गंगासती ने सपोर्ट किया है-

वचने थापवुं ने वचने उथापवुं,
वचने करवां गुरुनां काम।

ये है साधुता। इसलिए हाथ पकड़ने के बाद छोड़ता नहीं है बाप! तो बहुत उत्तम कार्य दानाभाई ने और परिवार ने किया है। उनके पूर्वजों का पुण्य है। मैं निश्चित कहता हूं कि उनके पूर्वज आज नाच रहे होंगे। परेश तो मुझे कह रहा था कि हमारे घर पर हमारे माँ-बाप का फोटो है उसमें इतना तेज नहीं है पर इस कथा का फोटो है न उसमें तेज आ गया हैं! और बात सही है। नारद भक्तिसूत्र में लिखा है, जिसके परिवार में भक्ति और निर्दोष भाव में सद्भावना लाकर सद्प्रवृत्ति करते होंगे उनके पितृ जहां भी होगें वहां नर्तन करते रहते हैं। ऐसा सुन्दर कार्य भगवद् कृपा से हुआ। अच्छा खासी राशि एकत्र हुई है। आयोजकों का लक्ष्य तो दस है, पर जो हुआ वो बहुत अच्छा है। और चार तक तो उमेशभाई ने कहा है, पहुंच गया। और वो तो आता रहेगा। पानी का स्वभाव है। वो खड्डा नहीं भरता तब तक आगे नहीं जाता। ऐसी अपनी यदि निखालसता होगी तो जितना प्रवाह आयेगा वो अपना फंड़ पूरा कर के ही आगे बढ़ेगा। उसके साथ मेरी और आप की बहुत ही महत्त्व की फ़र्ज है। और मेहता काका के पुण्य स्मरण में ये सब हुआ है। मुझको भी अवसर मिला। वो मेरे आचार्य, शिक्षक थे। और इसलिए उनका ऋण इस तरह अदा कर सकते हैं। इसलिए इस कथा का योग कितना अच्छा हैं!

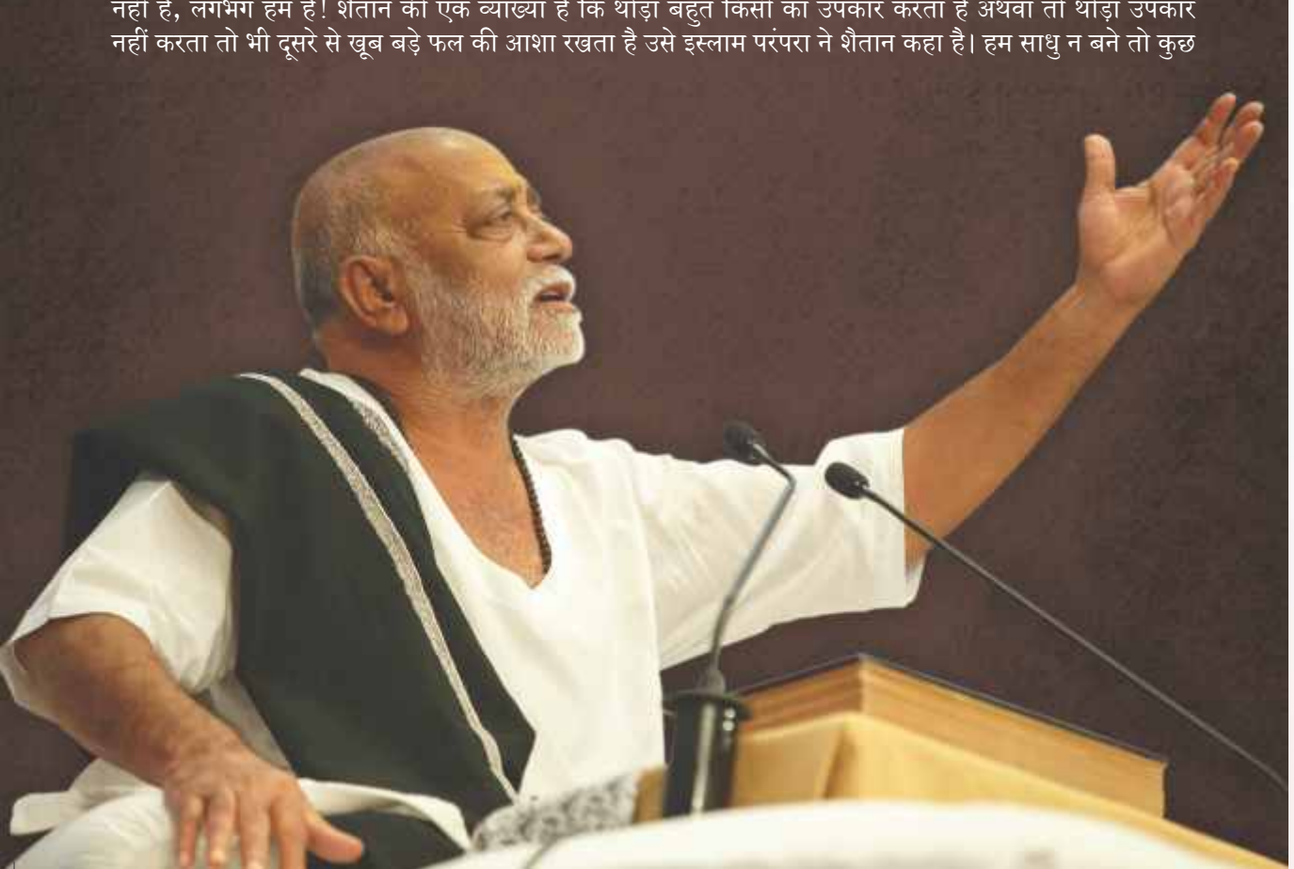

तो बाप! भगवद् कृपा से अपना समस्त यह प्रेमयज्ञ अच्छी तरह से पूर्ण होने आया है तब आगे के थोड़े कथा प्रसंग हैं उन्हें स्टेप में विहंगावलोकन करा दूं और फिर उपसंहार को कथा के, आप के साथ चर्चा करूं। 'बालकांड' कल पूरा किया। 'अयोध्याकांड' में राम विवाह करके आये फिर समृद्धि खूब बढ़ी। बहुतों के चरण ऐसे होते हैं, घर में आते ही समृद्धि बढ़ने लगती है। बहुतों के कदम से घरनरियां भी उड़ जाता है! रोज मंगल प्रसंग, आनंद, बधाई, रिद्धि-सिद्धि की नदियों में बाढ़ आ गयी। समृद्धि बहुत अच्छी है पर अति समृद्धि में से फिर राम का वनवास ही जनमता है। सम्यक समृद्धि। या तो चाहे जितनी समृद्धि मिले पर समझ सम्यक रहनी चाहिए।

महाराज दशरथ को यह विचार आया कि राम को राज्य दे दूं यह संकल्प महाराज कैकेयी को कहने गये उसके बीच घटना घटी कि मंथरा की बुद्धि बिगड़ी। देवताओं के स्वार्थ ने रामराज्य को रद करा दिया। मैंने अभी ही कहा, मेरा और आपका छोटा-सा स्वार्थ गांव के विकास को रद करा सकता है। ये सब मंथरा कर्मों है; ये सब कैकेयी कर्म है। जब समझ में आये तब जागकर दिलगीरी व्यक्त करनी चाहिए। उसका पश्चात्ताप होना चाहिए। कवि कलापी कह गये हैं-

हा पस्तावो विपुल झरणुं स्वर्ग थी ऊतर्युं छे।
पापी तेमां डूबकी दईने पुण्यशाळी बने छे।

देवताओं ने सरस्वती को कहा; सरस्वती ने मंथरा की बुद्धि फेरी; मंथरा ने कैकेयी की बुद्धि फेरी और कैकेयी ने दशरथ महाराज के पास दो ऐसे वचन मांगे जिस कथा से पूरी दुनिया परिचित है। सत्संग हो तो बहुत अच्छा। न हो तो कुसंग न हो जाये इतनी जागृति कथा द्वारा मुझमें और आप में आये तो जीवन बहुत धन्य बन जाये। महाराज दशरथजी ने वचन दिया और राम को राज मिलना था, उसके बदले तीनों जन वन की राह पकड़ते हैं सुमंत के रथ में बैठकर। पूरी अयोध्या जारजार रोती है तमसा के किनारे। शृंगबेरपुर भीलों का गांव, निषादों का। पछात, वंचित, उपेक्षित दलित समाज; भगवान उनके पास जाकर एक रात रुके। सुमंत के रथ को वापस भेजा। शृंगबेरपुर में भगवान राम बरगद का दूध लेकर अपनी जटा बांधे। जिसको आज राजमुकुट पहनना था उसने आज बरगद के क्षीर से जटा बांधी! इसमें मुझको और आपको क्या रोना? बड़े-बड़े जितने हुए उसमें पलकों में परिस्थिति बदली है, उसमें मैं और आप क्या? इसलिए मेरा नागर, मेरा नरसिंह मेहता कह गया-

सुख दुःख मनमां न आणीए घट साथे रे घडिया।
टाळ्या ते कोईना नव टळे रघुनाथना जडिया।

शृंगबेरपुर प्रभु केवट की नौका में बैठकर सामने किनारे गये हैं। वहां रेत की शिवलिंग बनाकर भगवान शिव की पूजा किए। वहां से भगवान की पदयात्रा आगे बढ़ी। भरद्वाज ऋषि के आश्रम में जाकर मार्ग पूछा। वहां से ऋषि कुमार मार्गदर्शन करते हैं और भगवान इस तरह वनयात्रा करते-करते चित्रकूट में निवास करते हैं। बीच में वाल्मीकि से मिले। रहने का स्थान पूछा। वाल्मीकि ने आध्यात्मिक स्थान बताए और फिर स्थूल जगह बताई, चित्रकूट में आप निवास कीजिए। राम, लक्ष्मण, जानकी चित्रकूट में पर्णकुटि बनाकर निवास करने लगे।

इधर सुमंत घर आये। दशरथजी को जब यकीन हो गया कि अब कोई नहीं आयेगा तब दशरथजी छः बार 'राम' ब्रह्म का उच्चारण करके प्राणत्याग करते हैं। सूर्यवंश का सूर्य अस्त हुआ है। भरत को समाचार भेजा गया है। भरत आते हैं और जब पता चलता है तब भरतजी बहुत आक्रोश व्यक्त करते हैं। पितृक्रिया हुई है। सभा बटोरी और फिर इस राज्य का क्या करूं? पिता ने वचन दे दिया है कि राम को वनवास, भरत को गद्दी। वशिष्ठ, माताएं सबने एक सूर में कहा, भरत, चौदह वर्ष तो गद्दी संभाल लो। उस समय भरत ने इतना ही कहा कि गुरुदेव, मैं सत्ता का आदमी नहीं हूं, मैं सत् का आदमी हूं; मैं पद का आदमी नहीं, मैं पादुका का आदमी हूं। मेरा हित चाहते हैं तो हम सभी चित्रकूट जाकर प्रभु को विनय करे। फिर मेरा ठाकुर जो कुछ कहे वो मैं करूंगा। समस्त अयोध्या चित्रकूट गई है। जनकजी सबको लेकर चित्रकूट आते हैं।

बड़ा प्रेमनगर चित्रकूट में बस गया। पिताजी का शोक व्यक्त हुआ है। फिर सभाएं मिली उसमें अनेक प्रकार की चर्चाएं हुई। पूरी चित्रकूट की सभा में से मुझको हिसाब करके यदि कहना हो तो दो वस्तु निकली है इसमें से। इसे जगत के लिए भी कह सकते हैं, राजकीय आदमियों के लिए भी कह सकते हैं, सत्ता में बैठे आदमियों के लिए भी कह सकते हैं, प्रशासन में बैठे आदमियों के लिए भी कह सकते हैं। दो वस्तु निकली। एक, आदमी को कोई भी निर्णय टालना नहीं चाहिए। गलत होगा तो सुधारा जा सकता है। आप निर्णय ही न करो तो तकलीफ़ होगी। निर्णय विवेक और विचार से करना चाहिए। मेरे शब्दों को ठीक से याद रखना। और यदि गलत निर्णय हो तो तुरंत वापस सुधार लेना चाहिए पर बहुत बार हम निर्णय ही नहीं करते! दूसरा इसमें से निकला है, बहुत अच्छा निर्णय लिया है। वशिष्ठ, माताएं या जनक भरत को या राम को कोई झूठे वचन नहीं देते, वादे नहीं करते। समाज के काम करने

हो तो पूरा न हो ऐसे वचन मत देना। हम आयेगें तो, चुने जायेगें तो हम ऐसा करेगें; और फिर आप झूठे पड़ते हैं और दुनिया का भरोसा खोते हैं! विचार और विवेक से निर्णय कीजिए। गलत हो तो दूसरे ही दिन सुधार लेना चाहिए। अहंकार को पोषना नहीं चाहिए। दूसरा, समाज को झूठे वादे न दें; देना तो पूरा करना। ये दो वस्तु इस मंथन से निकली है। त्याग की स्पर्धा शुरू हुई है। अन्ततः निर्णय हुआ, भरत वापस आयें। और भरत ने इतना ही कहा, मैं जाउं अयोध्या प्रभु, परन्तु मुझको आधार दीजिए; मुझको कोई सहारा चाहिए। और-

प्रभु करि कृपा पाँवरी दीन्ही।

पादुका दी है। भरत ने पादुका को मस्तक पर चढ़ाया है। यात्रा वापस लौटी हैं। इधर राम, लक्ष्मण, जानकी चुपचाप रो रहे हैं। आज भरत जा रहा है। संत जा रहा है। दोनों समाज ने विदा ली। अयोध्या पहुंचे। जनक राजा थोड़े दिन रुककर राज्य कार्य की व्यवस्था करके मिथिला गए। शुभ दिन देखकर भरतजी ने पादुका को सिंहासन पर बैठाया। ट्रस्टीशीप का सिद्धांत जो महात्मा गांधी बापू ने स्वीकार किया उसके मूल में 'रामचरितमानस' है, इसे गांधीजी स्वीकार करते थे। पादुका स्थापित करके उससे पूछ कर काम किया। व्यक्ति नहीं व्यक्ति के लक्षणों की स्थापना की है। भरतजी ने भेष धारण किया। नंदिग्राम में कुटिया बनाई। देह दिन-प्रतिदिन दुबला होने लगा। भजन का तेज बढ़ने लगा। भरत के नियम और संयम को देखकर बड़े-बड़े मुनि लज्जित होने लगे। तुलसीदासजी भरत को एक प्रकार का सद्गुरु गिनते हैं। यहां भरत चरित्र पूरा किया। 'अयोध्याकांड' पूरा किया।

'अरण्यकांड' में भगवान चित्रकूट से स्थानांतर करके अनसूया के आश्रम में गये। अनसूया और अत्रि ने स्वागत किया है। अत्रि महाराज ने भगवान की स्तुति की है-

नमामि भक्तवत्सलं। कृपालु शील कोमलं।।
भजामि ते पदाम्बुजं। अकामिनां स्वधामदं।।

स्तुति करते हैं। अनसूया ने जानकी को नारी के धर्म का उपदेश दिया है। फिर प्रभु वहां से आगे बढ़े। शरभंग महात्मा मिले। सुतीक्ष्ण मिले। कुंभज ऋषि के पास आये प्रभु। कुंभज ऋषि के साथ मंत्रणा किया। आसुरी वृत्तियों का निर्वाण करके और प्रेमतत्त्व का निर्माण करने का मंत्र लिया। वहां से भगवान गोदावरी के तट पर आये। बीच में जटायु मिला। उसके साथ मैत्री की। पंचवटी में प्रभु ने विश्राम किया। एक दिन विश्रांति के समय लक्ष्मणजी ने प्रभु से पांच आध्यात्मिक प्रश्न पूछे, उसका भगवान ने अद्भुत उत्तर दिया। फिर शूर्पणखा आयी है। लक्ष्मणजी को जब तक भगवान ने इन

पांच प्रश्नों के उत्तर न दिए वहां तक कोई शूर्पणखा नहीं आयी, पर लक्ष्मणजी को विशेष जागृति हुई इसलिए शूर्पणखा आकर खड़ी हुई। इसका अर्थ ऐसा है कि जब हम अधिक जागते हैं तब ही कोई न कोई शूर्पणखा हमारी साधना में विघ्न करने आती है। अपने काठियावाड़ में कहते हैं, समझ उतना दुःख। समझ आती है इससे विघ्न भी आते हैं। जिसको समझ ही न हो उसको तो क्या तकलीफ़? लक्ष्मणजी विशेष जगे तो शूर्पणखा आयी। दंडित हुई।

शूर्पणखा ने खर-दूषण को चढ़ाया। चौदह हजार राक्षस प्रभु के सामने राग-द्वेष का रूप लेकर आये। प्रभु ने राग-द्वेष का नाश किया। शूर्पणखा लंका में जाकर रावण को कहती है, धिक्कार है! आप जैसा भाई और मेरी यह दशा? उसने रावण को उकसाया। उसने मारीच को तैयार किया। सोना का मृग बना। भगवान मारीच का निर्वाण करते हैं। पीछे से रावण सीता का अपहरण करता है। भागता है। रावण को चुनौती दी। जटायु ने कुर्बानी दी और रावण सीता को लेकर भागा। किष्किंधा के उपर से होकर निकला। लंका में अशोक वाटिका में जानकी की व्यवस्था करके बंदी बनाया। मृग को मार कर प्रभु आये। सीता बिना की कुटिया देखी। प्राकृत लीला करते हुए प्रभु रोते हैं। सीता की खोज करने निकले। जटायु ने सब बात कही। जटायु को सन्मान दिया, गोद में लेकर उसका अपने हाथों से संस्कार किया है। फिर कबंध नामक राक्षस मिला। उसको निर्वाण दिया। फिर भगवान शबरी के आश्रम में आयें। सीता की खोज करते-करते शबरी के यहां नव प्रकार की भक्ति की चर्चा हुई। शबरी ने योगाग्नि में अपना देह समाप्त किया जहां से वापस न लौटना पडे उस स्थान में लीन हुई। भगवान पंपासरोवर आये। सीता की खोज करते हुए नारदजी आये। सुंदर वार्तालाप हुआ। संतों के लक्षण पूछा कि प्रभु आपकी दृष्टि से साधु किसे कहते हैं? सुंदर लक्षणों का वर्णन किया। और भगवान नारद को कहते हैं कि साधु के लक्षण तो इतने हैं कि शेष और सरस्वती भी वर्णन नहीं कर सकते।

यहां 'रामचरितमानस' का तीसरा सोपान पूरा हुआ। चौथा सोपान है 'किष्किन्धाकांड।' इस में भगवान आगे बढ़ते हैं। सुग्रीव और राम की मैत्री हनुमानजी के द्वारा होती है। पवनपुत्र जैसा गुरु मिल जायें फिर हम चाहे जैसे विषयी हो सुग्रीव जैसा तो भी हम को हरि की प्राप्ति करा देगा। पर वायुपुत्र जैसा गुरु चाहिए। हनुमान पवनपुत्र हैं। वायु जैसा गुरु किसको कहते हैं? वायु ही अपने को जीवित रखती है पर आप उसे पकड़ नहीं सकते। गुरु आप का उद्धार करता है पर आप उसको बांध नहीं सकते। कोई भी पवन को बांध नहीं सकता। कोई कहता है कि गुरु हमारे कब्जे में हैं तो वो धोखा देता है। गुरु किसी दिन कब्जे में होगा ही नहीं और दूसरे को कब्जे में रखेगा भी नहीं। उसे स्वतंत्रता देता है। मैं कल मजबूर साहब की सीधी-सादी बात कर रहा था। मजबूर ने ऐसे छोटे-छोटे वाक्य कविता के रूप में बहुत कहे हैं।

मानना बंदगी है।
मनवाना गंदगी है।
सबसे बडा रोग,
क्या कहेंगे लोग?

दुनिया हमको क्या कहेगी, ये बड़े से बड़ा भय है!

हनुमानजी की कृपा से सुग्रीव और राम की मैत्री हुई। फिर तो बालि का निर्वाण हुआ है। सुग्रीव को राज मिला। बालिपुत्र अंगद को युवराज पद दिया है। भगवान चातुर्मास उदासीन व्रत निभाते हैं। सुग्रीव चार महीने में भोग के अंदर भगवान को दिया हुआ वचन भूल गया। भगवान ने थोड़ा भय दिखाया। सुग्रीव वापस जागृत हुआ। और शरण में आया। जानकी के खोज की व्यवस्था हुई। सभी दिशाओं में बंदर- भालूओं को भेजा। दक्षिण दिशा में अंगद उस टुकड़ी का नायक, जामवंत मार्गदर्शक और हनुमानजी भी उसके एक सदस्य के रूप में हैं, ऐसी एक खास टुकड़ी को दक्षिण में सीता की खोज करने के लिए भेजी। रास्ते में सभी को प्यास लगी। स्वयंप्रभा के पास गये हैं। स्वयंप्रभा ने कहा, आप आंखें बंद करे, मैं पहुंचा दूंगी। पर बंदर आंख बंद नहीं रख सके। सभी समुद्र के किनारे आये। संपाति नामक गिद्ध जो जटायु का बड़ा भाई है वो मिला। उसने सब बात की कि सीताजी अशोकवाटिका में बैठी है। मेरी पंख कमजोर है परन्तु आंख अभी ठीक है। मुझे यहां से दिखता हैं, ये चार सौ कोस का समुद्र लांघ कर लंका में जाये वो काम करेगा। फिर सभी अपना-अपना बल भाखते हैं। पर हनुमानजी महाराज चुप बैठे हैं। उन्हें जामवंतजी ने आह्वान किया कि रामकार्य के लिए आप का अवतार है और आप चुप क्यों हैं? हनुमानजी पर्वताकार बने हैं। गर्जना करने लगे। युवाओं को काम करना है शक्ति के लिए, शांति के लिए, भक्ति के लिए, पर समाज के अपने वयोवृद्ध अगुवां अपने मार्गदर्शक हों ऐसे जामवंतों का अनुभव और सलाह लेना चाहिए। हनुमानजी महाराज तैयार हुए। पांचवां सोपान 'सुन्दरकांड' है।

जामवंत के बचन सुहाए।
सुनि हनुमंत हृदय अति भाए।।

हनुमानजी महाराज छलांग लगाते हैं। रास्ते के विघ्नों को पार करके हनुमानजी लंका में प्रवेश करते हैं। रावणादि के मंदिरों में घूमे पर सीता को नहीं देखा। एक भवन देखा। विभीषण का घर था। विभीषण और हनुमानजी की मित्रता हुई। युक्ति बताई, सीता अशोकवाटिका में हैं। हनुमानजी महाराज अशोकवाटिका में आते हैं। वृक्षों के पल्लवों में छिपे हैं। उसी समय रावण सीता को प्रलोभन देने आया कि एक बार मेरे सामने देखो तो मंदोदरी आदि रानियों को तुम्हारी दासी बना दूं। सीता ने तिनका दिखाकर उसे अपनी मर्यादा बता दी। रावण एक महीने की मुद्दत देकर चला गया। जानकीजी बहुत दुःखी हुई उसी समय हनुमानजी ने मुद्रिका डाली है। प्रगट हुए। राम की कथा कही। सीता और राम का मिलन हुआ। पुत्र मानकर अजर होंगे, अमर होंगे आशीर्वाद दिए हैं। फिर हनुमान महाराज कहते हैं, मुझको भूख लगी है। फल खाया। राक्षसों को मारा। हनुमानजी को पकड़कर रावण की सभा में हाजिर किया। पूरी लंका हनुमानजी की पूंछ से जली है। समुद्र में स्नान करके माँ से चूडामणि लेकर वापस आये। रघुनाथजी को यह समाचार दिया।

भगवान की सेना ने प्रस्थान किया। समुद्र तट पर सेना आई। इधर हनुमानजी लंका जलाकर गये उसके बाद रावण बहुत ही घबरा गया। उसमें विभीषण ने आकर बात तो सही कही कि अभी भी अपने हाथ में बाज़ी है। सीता को सौंप दीजिए। रावण नहीं माना। चरण प्रहार किया। विभीषण मंत्रियों को लेकर आकाश मार्ग से राम की शरण में आया है। परमात्मा ने शरणागत को रखा है। फिर चर्चा हुई। सलाह ली कि समुद्र कैसे पार करेगें। इसलिए विभीषण ने कहा कि आप के कुल में समुद्र बहुत बड़ा है। तीन दिन विनय कीजिए और यदि रास्ता दे तब हम बल का प्रयोग नहीं करेगें। तीन दिन प्रभु ने उपवास किया। समुद्र नहीं माना। भगवान ने धनुष पर बाण चढ़ाया। समुद्र ब्राह्मण का रूप लेकर शरण में आकर माफ़ी मांगता है और फिर भगवान को कहता है, आप सेतु बांधिए। 'सुन्दरकांड' का पांचवां पायदान पूरा हुआ।

छठ्ठा पायदान 'लंकाकांड।' सेतु बंधा और प्रभु ने कहा, ये उत्तम धरती है। मेरी इच्छा है, भगवान रामेश्वर की स्थापना करें। ऋषि-मुनियों को बुलाया है। भगवान के हाथ से भारतीय संस्कृति का महान ज्योतिर्लिंग भगवान रामेश्वर की स्थापना हुई। भगवान की सेना पार हुई। लंका में सुबेल नामक छोटे से शिखर पर प्रभु ने पड़ाव डाला। सांझ हुई। रावण सामने के शिखर पर अखाड़ा में मनोरंजन के लिए आया। भगवान ने उसका महारस भंग किया। दूसरे दिन सुबह रावण की राज्यसभा में राजदूत के रूप में बालि के पुत्र अंगद को संधि के लिए भेजा। प्रभु कहते हैं, अभी भी एक बार हम प्रयत्न कर लें। यदि रावण मान जायें तो हम बल का प्रयोग नहीं करेगें। अंगद आता है। रावण को समझाने की कोशिश की। माना नहीं। युद्ध अनिवार्य बना। भीषण युद्ध हुआ है। लक्ष्मण मूर्छित हुए हैं। फिर कुंभकर्ण का निर्वाण। इन्द्रजित का निर्वाण और अन्ततः इकतीस बाण मारकर भगवान राम ने रावण का निर्वाण किया। परमात्मा के चेहरे में रावण का तेज समा गया। मंदोदरी आई। भगवान की स्तुति करती है। विभीषण का राजतिलक किया है।

लंका विजय हुआ है। हनुमानजी को भेजा। जानकी को खबर दी। सीताजी अग्नि में समाई थी। अब लीला पूरी हुई। अर्थात् मूल जानकी प्रगट हुई। फिर प्रभु ने कहा, अब विलंब न करें। चौदह वर्ष पूरा होने आया है। पुष्पक विमान तैयार हुआ और राम-लखन-जानकी साथ के सखा बिराजमान हुए और विमान उत्तर दिशा में उड़ान भरा है। सेतुबंध का दर्शन किए। रामेश्वर का आशीर्वाद लिए फिर कुंभज आदि मुनिनायकों को मिलते-मिलते भगवान का विमान आगे बढ़ रहा है। हनुमानजी से कहा, अयोध्या जाकर भरत को खबर दीजिए। हनुमानजी अयोध्या गये। भगवान का विमान शृंगबेरपुर में फिर उतरा। गरीब भील सब दौड़ते हुए आये। भील को कहा, तुमने मुझे

किसी के हाथ को कमल की उपमा दी जाती है। परमात्मा को तो मुखकमल, नेत्रकमल, हृदयकमल, चरणकमल, सब कमल, कमल। इसलिए कि कमल असंग है। पर कमल का बहुत ही बड़े से बड़े गुण ये है कि यह एक ही फूल ऐसा है कि इसको कोई फल की अपेक्षा नहीं हैं। कमल के फूल को कोई फल नहीं होता। असंग साधु उसे कहेंगे जो कमल के फूल की तरह रहता हैं; जिसके साथ रहता है उससे किसी फल की अपेक्षा नहीं होती। इसीलिए ईश्वर के हाथ–पग सब को कमल कहा जाता है क्योंकि उसको फल नहीं लगता। शेष सबको फल आता है।

नौका में बैठाया, मैं क्या उतराई दूं? तब रो पड़ा केवट और कहा, महाराज, मैंने आप को नौका में बैठाया, आप मुझको विमान में बैठा कर अयोध्या ले जाये। छोटे से छोटे मानव को याद रखे उसका नाम राम। भगवान ने विमान में लिया। यहां छठ्ठा पायदान पूरा होता हैं।

सातवां सोपान 'उत्तरकांड।' एक दिन बाकी। पूरी अयोध्या क्रंदन कर रही है। इतने में प्रभु का विमान आया है। सरयू के किनारे उतरता है। भगवान राम-लक्ष्मण-जानकी विमान से नीचे उतरे। लंका के मैदान में से आये तब रींछ और वानर थे, सुग्रीव और विभीषण असुर था। पर अयोध्या के सरयू के किनारे जब विमान उतरा और विमान से जब बाहर आये तब ये सभी मानव शरीर धारण किये। इसका अर्थ ये होता है कि रामकथा यह मानव बनाने की फार्म्यूला है। वानर की चंचलता मिट गई, असुर की आसुरी वृत्ति मिट गई। और मनुष्यता प्रगट हुई। ये रामकथा का उद्देश्य है आसुरी और चंचल वृत्तियों के जीवों को मानव प्रकृति में प्रकट करना। प्रभु ने उतर कर जन्मभूमि को प्रणाम किया। भरत और राम भेंटे तब तो निश्चित ही न हुआ कि किस को वनवास था? ऐसी एकरूपता। गुरुदेव को प्रणाम किया है। भगवान राम ने अपनी मानव लीला को एक ओर करके ऐश्वर्य लीला की। जितने लोग थे उतने रूप धारण किए। सब को व्यक्तिगत साक्षात्कार दिया है। फिर भगवान अयोध्या में प्रवेश करते हैं।

तुलसी ने लिखा; सीखने जैसा है बाप! अब आधे घण्टे में कथा पूरी होगी। पर गांठ से बांधे हम और आप। भगवान राम अयोध्या में प्रवेश करते हैं। चौदह वर्ष के बाद तब ऐसा लगा कि पूरी अयोध्या प्रसन्न है। पर मेरी माँ कैकेयी लज्जित है कि मैंने ये सब किया है और इसलिए भगवान राम सबसे पहले कैकेयी भवन गये। बाप! कथा सुनकर घर आयें और जिसके साथ अबोला हो उसके घर जाकर कहना कि चाय बनाओ न, पी लेते हैं। बापू की कथा सुनकर आया हूं। कथा सुनने के बाद कोर्ट में छोटे-बड़े केस हो भाई-भाई के बीच उसके वापस खींच लेना। ये कथा का परिणाम है। राम पहले कैकेयी के भवन गये हैं। माँ रो पड़ी। प्रभु ने कहा, माँ, तूं रो मत। तुने मुझे मानव में से महामानव बनाया है। तुने वनवास न दिया होता तो मुझे दुश्मन कैसा होता है ये पता न चलता। पत्नी कैसी होती है वो पता न चलता, भाई कैसा होता है ये पता न चलता, मित्र कैसा हो ये खबर नहीं पड़ती। और हनुमान की और अंगूलि दिखाते हुए कहा, सेवक कैसा होता है इसका मुझे पता नहीं चलता। ये तो तेरी कृपा है। उसकी शरमिंदगी दूर की। सुमित्रा से मिले। कौशल्याजी के पास आये। जानकी को देखकर सासुएं रो पड़ी, ये दशा! बाद में सब को स्नान कराया। दिव्य वस्त्रालंकार धारण किए। और वशिष्ठजी ने कहा, दिव्य सिंहासन लाओ, अभी ही राम को गद्दी दे दें। राम-जानकी पृथ्वी को प्रणाम करके, गुरुजनों को प्रणाम करके, माताओं को प्रणाम करके, नागरिकों को, दिशाओं को, आचार्यों-ब्राह्मणों को, आकाश के देवताओं को प्रणाण करके प्रभु विनम्रता से गद्दी पर बैठे और विश्व को रामराज्य देते हुए वशिष्ठजी ने राम के भाल पर तिलक किए और रामराज्य की स्थापना हुई।

रामराज्य अर्थात् प्रेमराज्य। सत्यराज्य, प्रेमराज्य, करुणा का राज्य, उसका नाम रामराज्य है। माताओं ने आरती उतारी। चारों वेदों बंदीजनों का रूप लेकर भगवान की स्तुति करने के लिए राज दरबार में आये। फिर धूर्जटि महादेव कैलास से शिवजी स्वयं पधारें। भगवान शंकर स्तुति करके सत्संग और भक्ति का वरदान मांगकर कैलास गये। रामराज्य की स्थापना हुई। छः महिना बीत गया। और फिर मित्रों को बिदाई दी। हनुमानजी के सिवाय सब को बिदाई दी। हनुमानजी कायम अयोध्या में रहे प्रभु के पास। प्रभु स्वधाम गए पर हनुमानजी धरती पर रहे हैं। हनुमानजी ने पूछा था, प्रभु आप सभी को ले जा रहे हैं तो मैं यहां क्या करूंगा? तब भगवान ने कहा, आप अजर-अमर हैं, आप पृथ्वी पर रहें। तब हनुमानजी ने एक शर्त की कि मैं धरती पर तब तक रहूंगा, जब तक धरती पर रामकथा होती रहेगी। जिस दिन रामकथा बंद होगी धरती पर उस दिन मैं धरती छोड़कर चला जाउंगा।

मुझसे जब पत्रकार पूछते हैं, आप कथा किस लिए करते हैं? तब मैं यही कहता हूं कि हनुमान धरती छोड़कर चला न जायें इसके लिए कथा कहता हूं। क्योंकि उसने कहा है कि कथा बंद होगी तब मैं धरती छोड़ दूंगा। तो हनुमानजी रहे। बाकी सबने बिदा ली। दिव्य रामराज्य का वर्णन आया है। परमात्मा की नरलीला का वर्णन करते हुए लिखा है, जानकीजी ने दो पुत्रों को जन्म दिया। अयोध्या के वारिसदार के नाम बता दिया। भरत के, शत्रुघ्न के, लक्ष्मण के यहां दो पुत्र हुए। फिर कथा बंद कर दी। सगर्भा स्थिति में जानकी का दूसरी बार का वनवास वो विवाद वाली कथा तुलसी लिखते नहीं है। तुलसी को संवाद उपयोगी है। रामकथा पूरी हो जाती है फिर भुशुंडि महाराज का चरित्र है। गरुडजी ने सात प्रश्न पूछे उसके उत्तर है और फिर काग भुशुंडिजी ने गरुड के पास रामकथा पूरी की। कैलास पर कथा कहते शिवजी ने पार्वती के समक्ष कथा

पूरी की। याज्ञवल्क्य महाराज प्रयाग में भरद्वाजजी को कथा कह रहे थे। उन्हों ने पूरा किया कि नहीं वो स्पष्ट नहीं है। कदाचित् प्रयाग में त्रिवेणी बहती रहेगी तब तक यह कथा भी गतिशील रहेगी। काश! हम सुन पायें! और चौथी पीठ है शरणागति की। तुलसीदासजी अपने मन को कथा कह रहे थे उस मन के पास विराम देते हुए तुलसी ने कहा कि इस जगत में इस कलियुग में हम न तो यज्ञ कर सकते हैं, न बड़े-बड़े योग की साधना कर सकते हैं; न तो जप-तप कर सकते हैं। अपने जैसे मनुष्य तीन काम कीजिए। राम का स्मरण करो, राम को गाओ और राम को सुनो। तीन सूत्र हमें तुलसी ने शास्त्र की पूर्णाहुति में दिए। कलियुग में हमारे लिए दूसरा कोई साधन सरल नहीं।

कैलास की ज्ञानपीठ पर से शिव ने कथा पूरी की। नीलगिरि शिखर पर कथा कर रहे भुशुंडि ने गरुड के समक्ष कथा पूरी की। गंगा, यमुना और सरस्वती के संगम पर बैठे हुए परम विवेकी याज्ञवल्क्य महाराज ने भरद्वाजजी के समक्ष कथा पूरी की और कलिपावनावतार पूज्यपाद गोस्वामीजी ने अपने मन को बोध देते कथा पूरी की। ये चारों परम आचार्यों की आशीर्वादक छाया में रहकर मेरी व्यासपीठ महुवा के आंगन में गायन कर रही थी नव दिवस के लिए। अब मैं भी कथा को विराम देने जा रहा हूं तब अन्तिम थोड़ा सुन लीजिए बाप!

पांच कथा का यह एक झुमखा था। हनुमान, राम, शिव, भरत और भुशुंडि पांच कथा। ये रामकथा मेरा और आप का मंगल करती है, अवश्य मंगल करती है। तो भरतकथा भवबंधन से मुक्त करती है। रामकथा मंगल करती है। सीता की कथा धैर्य और सहन शक्ति प्रदान करती है। संत की कथा, भुशुंडि की कथा मेरे और आप के कषायों को नष्ट करके अन्तःकरण को उजला करती है। और हनुमान की कथा निरंतर परमात्मा का नाम रटाती है। ऐसी सुंदर कथा। सद्य परिणाम प्रदायक कथा का गायन एक मंगल हेतु के लिए महुवा के आंगन में हुआ। दानाभाई और उनका परिवार, उनका ये मंगल मनोरथ; उन्हों ने अपने माता-पिता के पुण्य स्मरण में और पितातुल्य बड़े भाई के पुण्य स्मरण में इस कथा का विचार किया। और ये बात स्वीकार की उन्होंने। 'आचार्यदेवो भव' मेहता साहब की स्मृति में ये नव दिवस का आयोजन हुआ।

इस जगत में चार प्रकार के मनुष्य होते हैं बाप! यद्यपि भक्त कहा है चार प्रकार के; पर आखिर मनुष्य भगत ही है; अंदर से तो सब साधु ही हैं। ये तो उपर से कुछ आवरण आ गया है। इसलिए चार प्रकार के भक्त जो कहा उसमें आर्त, जिज्ञासु, अर्थार्थी और ज्ञानी। ज्ञानी जो भक्त होगा उसको कथा मोक्ष देती है। पर 'गीता' के अन्तिम अध्याय का नाम है 'मोक्षसंन्यासयोग' अठ्ठारहवां अध्याय, इसका अर्थ ऐसा है कि सच्चा भक्त तो वो है कि संन्यास यानी त्याग, फेंक देना। जो मोक्ष को भी फेंक दे वो मोक्ष। सब फेंक कर कहता है, मोक्ष का भी संन्यास। मोक्ष कैसी वस्तु है? ले दिया! मोक्ष भी दे दिया। ऐसा ज्ञानी कथा सुने तो उसका मोक्ष भी संन्यास पाता है। आर्त कथा सुने तो उसकी पीडाएं दूर होती है, राहत मिलती है। किए हुए कर्म तो भोगना ही पड़ेगा, पर आश्वासन मिलता है। और अर्थार्थी कथा सुने तो छोटे-बड़े लौकिक अर्थ कदाचित् भगवत् कथा के मार्ग पर चलें तो मिलता है। और जिज्ञासु कथा सुने तो उसके गूढ़ में गूढ़ तत्त्वों को खोलकर शिव जैसा वक्ता हमारे समक्ष रख देता है। इस तरह सार्वभौम कथा जिसको आकाश भी छोटा पड़ेगा ऐसी अद्भुत कथा यहां गाई गई 'मानस-कथा।'

तो बाप! कथा को विराम दूं तब आशीर्वाद तो मैं क्या दूं? आशीर्वाद न होता तो ऐसी कथा शुरू ही नहीं होती। और मेरी हैसियत क्या है? पर 'मानस' के बगल में बैठा हूं इसलिए अभी ऐसे इसके तप से में आप के लिए प्रार्थना अवश्य करूंगा। दानाबापा, आपको और पूरे परिवार को प्रभु ने दिया है, उपयोग करते हैं। समृद्धि बढ़े, आरोग्य बढ़े, सब हो और वो तो होना ही है, उत्तम विचार रहेगें ऐसे के ऐसे, पर मैं प्रार्थना इतनी ही करूंगा कि आप के वंश में, आप के कलसरिया कुल में, फाफड़ा कुल में 'वंशे सदैव भवताम् हरिभक्तिरस्तु।' आप के कुल में ऐसे का ऐसा विचार बना रहे। भगवान की भक्ति ऐसे की ऐसी उफान लिया करे और प्रसन्नता परमात्मा दे। और अपने सभी श्रोताओं के लिए खुश रहो, खुश रहो, खुश रहो। परमात्मा सभी को प्रसन्न रखे, खुश रखे। अपनी खूब ही प्रसन्नता व्यक्त करके मैं विदाई लेता हूं। और अन्त में बाप! मैंने कदाचित् पहले दिन भी कहा था कि ये दानाभाई ने कथा का इतना होर्डिंग्स पोस्टरों और पत्रिका और जो कुछ किया लोगों की जानकारी के लिए उसमें उन्होंने लिखा, मुख्य यजमान मेरा पूरा समाज, मेरी पूरी जाति। और उसके प्रतिनिधि के तौर पर दानाभाई फाफड़ावाला का परिवार। ये सामूहिक विचार आया इसलिए मैं इतना ही कहूंगा कि इस कथा का जो फल है दानाभाई, आप अपने माता-पिता और बड़े भाई को देना। बाकी आप का पूरा समाज उन सबको अपने साथ में रखा है वो सभी अपने माँ-बाप को फल दे दें श्रवण का। और हम सब इकठ्ठा मिलकर कथा का फल मेहता साहब को दे दें, 'आचार्यदेवो भव।'

કથા-કવિતાવલિ

સુખ દુ:ખ મનમાં ન આણીએ ઘટ સાથે રેઘડિયા.
ટાળ્યા તે કોઈના નવ ટળે રઘુનાથના જડિયા.
-નરસિંહ મહેતા

હા પસ્તાવો વિપુલ ઝરણું સ્વર્ગથી ઊતર્યું છે.
પાપી તેમાં ડૂબકી દઈને પુણ્યશાળી બને છે.
-કલાપી

છેલ્લો કટોરો ઝેરનો આ પી જજો બાપુ.
સાગર પીનારા અંજલિ નવ ઢોળજો બાપુ.
-ઝવેરચંદ મેઘાણી

હવે મિત્રો બધા ભેગા મળી વહેંચીને પી નાખો,
જગતનાં ઝેર પીવાને હવે શંકર નહીં આવે.
-જલન માતરી

લુંટાઈ ગયો મારો લાડ ખજાનો, દાદ હું જોતો રહ્યો.
જાન ગઈ મારી જાન લઈને હું તો સુનો માંડવડો.
કાળજા કેરો કટકો મારો હાથથી છૂટી ગ્યો.
-કવિ દાદ

મોજમાં રહેવું, મોજમાં રહેવું, મોજમાં રહેવું રે,
અગમ અગોચર અલખધણીની ખોજમાં રહેવું રે.
-દાન અલગારી

હજી મહેકે અંદરઅંદર હૈયાનો એક ખૂણો.
એક ભરોસો રામનામનો, લાગે નહીં એને લૂણો.
-તુષાર શુકલ

कवचिदन्यतोऽपि

साधु की बिदाई का शोक नहीं होना चाहिए

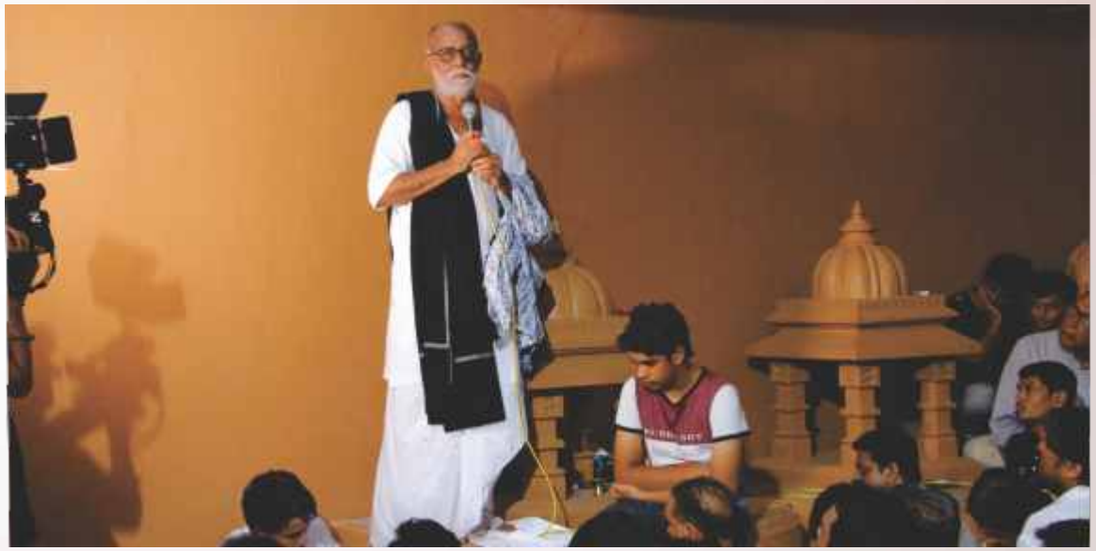

जानकीदासबापू (टीकाबापू)की समाधि के उत्सव पर मोरारिबापू का उद्‌बोधन

ध्यानस्वामीबापू की समाधि को प्रथम प्रणाम। उसके बाद उन विरक्ति ने आदेश दिया और जीवनदासबापू गृहस्थ हुए उन जीवनदासबापू की समाधि को मेरे प्रणाम। तत्पश्चात् त्रिभुवनदास दादा, अमृत माँ, उनकी समाधियों को मेरा प्रणाम। माँ सावित्री माँ, प्रभुदास बापा, उनके चरणों में मेरा प्रणाम। हमारे परिवार में दो बहन सब से बड़ी जिसमें दूसरे नंबर की बहन निर्मलाबहन, उनकी समाधि को प्रणाम। मेरे से छोटे भाई किशोर चाचा, उनकी समाधि को मेरा प्रणाम। छोटेभाई जगु, जगुचाचा, उनकी समाधि को मेरा प्रणाम। और आज जगतभर की परेशानियां को फेंक कर टीको-टीकाचाचा की समाधि को मेरा प्रणाम।

आज के इस समाधि उत्सव पर मैं सब के नाम नहीं ले सकूंगा किंतु हमारे स्थानों से संतों, महंतों, साहित्यकारों, विरक्तों हमारे वैष्णव परिवार के मार्गी साधुपरिवार के अनेक संतों, महंतो, समाज के हरेक परिवार से आए हुए सभी बुज़ुर्गों, छोटे-बड़े भाईओं-बहनों, इस समाधि प्रसंग पर हमारा त्रिभुवन परिवार आप सब को प्रणाम करता है। शक्तिपूजा के दिवस पूरे हुए। अष्टमी हमारे यहां हवनाष्टमी मानी जाती है। और उस अष्टमी को त्रिभुवन परिवार से इस यज्ञ में एक पुष्प समर्पित हुआ। शक्तिपूजा के दिवसों, आज चैत्री नवरात्रि पूरी हुई। परम शक्तिमान भगवान राम का आज प्राकट्य दिन है। मेरे लिए इससे अधिक महत्त्वपूर्ण आज 'मानस'दिन है। राम के प्राकट्य दिन को, 'मानस' प्राकट्य दिन को, और माँ दुर्गा के नवरात्रि पूर्ण होती है, ऐसे समय टीका ने समाधि ली है। केवल, केवल, केवल यह दैवी कृपा, दैवी कृपा, दैवीकृपा; जगदंबा की कृपा। 'भगवद्‌गीता' में यह कहा गया है-

जन्ममृत्युजराव्याधिदु:खदोषानुदर्शनम्।

जन्म, मृत्यु, बूढ़ापा और रोग। मैं आरंभ में ही स्पष्टता कर देता हूं कि हमारे समाज में अर्थात् हम मार्गी बावाएं, हमारे यहां दूसरी कोई विधि नहीं होती। हम भूमि में भंडार देते हैं। इसके बाद कोई उत्तर क्रिया नहीं। कोई विधि नहीं। साधु को सुविधा हो तो तीसरे दिन समाधि को जवार कर सब पूरा कर देता है। और सुविधा हो तो भंडारा करते हैं। कई बार वर्षों बीतने पर साधु के पास सुविधा हो तो मंडप करता है। इससे अतिरिक्त कुछ भी नहीं होता। और समाधि से विशेष विधि क्या हो सकती है? मुझे कोई शास्त्र बताए, शास्त्र अथवा कोई भी पंथ यह बताए कि समाधि से विशेष

विधि क्या हो सकती है? अत: यहां श्रद्धांजलि सभा भी नहीं है। शोकांजलि सभा भी नहीं है। मुझे बराबर याद है कि कैलास में जब जगाचाचा ने निवार्ण प्राप्त किया था तब हरीशभाई ने मुझसे कहा, सुबह में कथा बंद रखी थी और दोपहर को यथावत्, केवल समय में परिवर्तन किया था। क्योंकि वहां समाधि की व्यवस्था नहीं थी। मनुष्य को हंमेशा व्यवहारु होना चाहिए। और मैं तो प्रवाही परंपरा में माननेवाला हूं अत: थोड़ा हटकर किया कि चाचा के अंतिम संस्कार मैं करूंगा। सुबह में हमने वहां अग्नि संस्कार किए। उस दिन की कथा कैलास में शाम को की। मैं यदि भूलता नहीं तो हरीशभाई ने ऐसा कहा था कि बापू, कथा बंद रखते हैं। श्रद्धांजलि या ऐसा कुछ देते हैं। मैंने कहा, कथा बंद नहीं सकती बाप! और हमारे में श्रद्धांजलि नहीं होती। किसकी श्रद्धांजलि? अत: 'जन्ममृत्युजराव्याधि' यह चार वस्तु, अत: मैं टीका के लिए कह देता हूं। ये सभी समाधियां के लिए कह देता हूं।

टीका का जन्म सार्थक है। मैं नहीं जानता मेरा क्या होगा? किंतु टीका का जन्म सार्थक है। जन्म पीड़ा नहीं है। एक माँ को पीड़ा होती है। किंतु थनगनाट होता है कि मेरे घर चेतना आ रही है। उस जन्म को हम उत्सव बना सकते हैं। अत: त्रिभुवन परिवार के लिए आज उत्सव है। जन्म यह है। कल अष्टमी को उन्होंने निर्वाण प्राप्त किया। हमारे लिए वह भी उत्सव है। एक पीड़ा जरूरी है। मैं भी मनुष्य हूं। एक पीड़ा जरूरी है। यहां चार वस्तु हैं- जन्म, मृत्यु, जरा, व्याधि। किंतु व्याधि हमें कोई रोग हो तो उसे भी तपस्या मान कर उत्सव मना सकते हैं। ऐसा हमें करना चाहिए। किंतु एक वस्तु जरा इस तरह होती है। पर नियति जो करती है उसका स्वीकार ही करना चाहिए। शास्त्रों ने सिखाया है कि बापू, सुख और दु:ख का स्वीकार अप्रतिकारक करना चाहिए। उसे स्वीकार कर लेना चाहिए। एक थोड़ा-सा होता है। और वह भी क्षणभर के लिए वह थोड़ा-सा हुआ। वह भी जब अहमदाबाद से फोन आया कि 'चाचा अब नहीं रहे' तब क्षण के लिए हुआ कि व्याधि इतने साल से था। वे इतने साल से तप कर रहे थे। शायद बाणशैया पर थे। बाणशैया पर भीष्म ही हो ऐसा नहीं है। सौम्य भी हो सकते हैं। किंतु संसारी हैं हम। उसे बूढ़ापा नहीं आया था, जरा नहीं आई थी। मेरे मन को रात के चार बजे एक झटका लगा कि ऐसा क्यों हुआ? दूसरे ही क्षण मेरे पर त्रिभुवन की कृपा हुई, उन्होंने मुझसे कहा नहीं बाप! उसे जरा भी आ गई थी। जरा केवल उम्र और शरीर तक मर्यादित नहीं होती। जरा अर्थात् परिपक्वता, जरा अर्थात् प्रौढ़ता। जरा अर्थात् पकी हुई समझ। इस समय मैं छोटे भाई के लिए नहीं बोल रहा हूं, समाधि के लिए बोलता हूं। उनमें जरा थी। किस अर्थ में? ये जितने भी गए उन्होंने कभी मुझे फ़रियाद नहीं की। यह जरा, यह समझ। 'भले बड़े भाई, भले बड़े भाई।' ये सभी देवता जानते हैं; जगतदेवी भी जानती हैं। दिक्पाल भी जानते हैं। अस्तित्व जानता है।

सायंकाल मेरा मदनभैया बहुत पीड़ित था। मैंने कहा कि नहीं। हमारे यहां नाटक का प्रोग्राम है मंडप में। हमें वहां जाना है। मैंने कहा नहीं था किसीको। मैं जानता था। संतराम जानता था। हम गए। पर मैं जब तैयार हो रहा था तब डो. मिलिंद का फोन आया। श्रेयस और मिलिंद निरंतर साथ रहते थे। मिलिंद का फोन आया कि 'टीकाचाचा को बात करनी है।' आवाज़ थोड़ी बैठी हुई थी और कृत्रिम श्वासोश्वास लेना था अत: उसे हटाया ताकि बोल सके। 'टीका, ठीक हो बाप?' हां, बड़े भाई, ठीक हूं। आप चिंता मत करना, मेरे जय सियाराम।' यह मेरी अंतिम बात हुई थी। अत: यह जरापन था। प्रौढ़पन था। समझ थी। और अत: समझ का यह उत्सव है; उनके जन्म का आज उत्सव है। उनकी समाधि का आज उत्सव है। और ऐसे उत्सव में आप सब आए हैं। मैं कोई कार्यक्रम बंद भी नहीं रखता, तो तो मेरी चौपाईयां गाने में धूल पड़ी! हमारे नरसिंह मेहता समझा गए हैं-

सुख दु:ख मनमां न आणीए...

किंतु मुझे ऐसा लगा। मैंने हरीशभाई को फोन किया। कितने ही लोगों ने 'हनुमान जयंती' का उत्सव मनाने के लिए तप किया होता है। किंतु मुझे लगा, शायद इस मामले में सबकुछ एक साथ हुआ है। हमें भंडारा करना हो और फिर मुझे तो 'लोकाभिरामं...' शुरू ही होता है। अत: अत्यंत पीड़ा के साथ इस बार 'अस्मितापर्व' कार्यक्रम बंद रखना पड़ा है। 'हनुमानजयंती' के कार्यक्रम जो तीन दिन के होते हैं, उसे भी बंद रखने पड़े हैं। सब को बुलाया गया था उन सब के लिए मैं क्षमाप्रार्थी हूं। जिस किसीकी वंदना करनी थी विशिष्ट महानुभावों की, विशिष्ट क्षेत्रों में रहे हुए, जिन्होंने समाज को कुछ प्रदान किया है, उन सब की वंदना सम्मान सहित हम उनके घर पहुंचा देंगे। और उस दृष्टि से यह उत्सव हम मना लेंगे। आप सब इतनी संख्या में, तलगाजरडा के प्रति अपना सद्भाव लेकर आये हैं उसके लिए समस्त त्रिभुवन परिवार, मैं आभार मानूं यह आपको

पसंद नहीं होगा, मैं जानता हूं लेकिन हम आपके ऋणी हैं। आप सब आए।

नव करशो कोई शोक रसिकडां,
नव करशो कोई शोक।

साधु की बिदाई का शोक नहीं होना चाहिए। हम सब जीव हैं अत: एक क्षण के लिए होता है। गम में चाहे कितनी भी साधुता आ गई हो लेकिन संवेदना रहित साधुता नहीं मन सकते। संवेदना जीवंत रखनी चाहिए। आंसू कम पड़ते हैं तो उसके जैसा अन्य कोई दुष्काल नहीं है। रुदन के लिए कौन होता है, समाज नहीं होता। और कभी आंसू आए व्यासपीठ पर तो उस दिन समझ लेना कि मैं आपके सामने रुदन नहीं कर रहा हूं, मैं तलगाजरडा के एक कौने में बैठकर रड़ता हूं। आंसू कम नहीं पड़ने चाहिए, संवेदना तो होनी ही चाहिए। किंतु यह उत्सव है, यह उत्सव है, यह उत्सव है।

आप सब आकर, संसार के नाते आपने बल दिया, व्यवहार के नाते भी। और किस किसके नाम दूं? सभी क्षेत्रों के लोगों, बुज़ुर्ग, छोटे-बड़े सभी आए क्योंकि सभी क्षेत्रों के साथ एक प्रमाणित दूरी रखकर जुड़ा हुआ बावा हूं। और इसीलिए आप सब आए। खूबखूब मेरा राजीपा व्यक्त करता हूं। अंत में हम तीन बार यह मंत्र बोल लेते हैं। ऐसे तो हमारे पूजनीय शास्त्रीजी ने भी उच्चारण किया है। हमारे समाधि के भी मंत्र होते हैं साहब! हमारे बुज़ुर्ग बोलते थे, समाधि के मंत्र होते हैं। समाधि की गायत्री होती हैं। समाधि की विधियां होती हैं। किंतु ये सभी विधियां जटिल होती हैं। और विश्वासु को जटिल जचता नहीं। सीधा चाहिए। अत: मैंने मेरे समाज को कहा, मंत्र आते हैं तो जरूर सुरक्षित रखिए और नहीं आते हैं तो 'हनुमानचालीसा' बोलते-बोलते समाधि दे देनी चाहिए। समय हो तो 'भुशुंडि रामायण' का पाठ कर लेना चाहिए। साधु को 'रामायण' सुना देनी चाहिए। 'हनुमानचालीसा' सुनाना चाहिए। और यह मंत्र कैलास मानसरोवर से पसंद किया था, तब से जगत में सब को कंठस्थ लगभग है। उस मंत्र का तीन बार उच्चारण कर लेते हैं।

या ते रुद्र शिवा त्नुरघोरा पापकाशिनी।
तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि।।
हरि: ॐ पूर्णमद: पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।।
ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति:।

हमारे साधु एक लाइन गाते हैं। मैं गा नहीं सकता लेकिन कोशिश करता हूं। इस लाइन से टीका को बिदाई देता हूं।

अमारी छेल्ली रे वेळाना सीयाराम,
वहाला रे, संतने जय जय सीताराम।

(जानकीदासबापू (टीकाबापू) की समाधि के अवसर तलगाजरडा (गुजरात) में प्रस्तुत वक्तव्य दिनांक: १४-४-२०१९)

साधु-समाधि उत्कृष्ट समाधि है

जानकीदासबापू (टीकाबापू) के भंडारा के अवसर पर मोरारिबापू का प्रेरक वक्तव्य

सबसे पहले ध्यानस्वामी बापा की समाधि को मेरे प्रणाम। उसके बाद जीवनदासजी बापू की समाधि को मेरे प्रणाम। उनके बाद त्रिभुवनदास दादा की समाधि को मेरे प्रणाम। प्रभुदासजी बापू की समाधि को मेरे प्रणाम। भाई टीका की समाधि को मेरे प्रणाम। यह समाधि उत्सव तो दो दिन हुआ। आज भंडारा निमित्ते परम उत्सव है। और ऐसे परम उत्सव में हमारे त्रिभुवन परिवार के हर्ष में वृद्धि करने यहां पधारे हुए अखेगढ़ मण्डल के महंतश्री १००८ महामंडलेश्वर पूज्य वसंतदासजी बापू, सलाया से पधारे हुए पूज्य दुर्गादासजी बापू, गोंडल से पधारे हुए सीताराम बापू, गांधीनगर से पधारे हुए 'साहेब बंदगी' दलपत बापू, सबके नाम लूंगा तो कोई छूट सकता है। किन्तु समाधि के समय मुझसे पहले जिसकी उपस्थिति रह चुकी और आज भी पाळियाद आकर समुपस्थित रहा, पूज्य बा, निर्मला बा को मेरे प्रणाम। हमारे सभी संत, जो हमारे मंडलें हैं उन सबके सभी महंतश्रीओं, सबको प्रणाम करता हूं। समाधि के दिन भी इतने संत पधारे। बीच में भी आते-जाते रहें और आज भी आप सब पधारे। मेरी आंखें यदि नम हो जाये तो किसी पीड़ा से नहीं हो रही है, आप सब आए उसकी प्रसन्नता से हैं।

मैं खुश हूं मेरे आंसूओं पे न जाना,
मैं तो दीवाना दीवाना दीवाना।

यह फिल्म का गीत नहीं गा रहा हूं। त्रिभुवनदास दादा का बालक बोल रहा है। इसे मेरा परिचय कहे तो परिचय है। 'मैं तो दीवाना दीवाना दीवाना।' अतः इसकी प्रसन्नता शायद मेरी आंखें भीगो दे। मेरा पूरा त्रिभुवन परिवार, समस्त वैश्विक परिवार। कोई इसको अन्यथा न ले। बापू ने सुंदर बात की। दलपतसाहब ने अपनी बात की। वसंतबापू ने कहा, सबको बुलाने की मेरी इच्छा थी। किन्तु मैं भयभीत था क्योंकि समाधि वंदना में सभी अपना आदर प्रकट कर सकते हैं, उसमें तारीफ़ शुरू हो जाए ऐसा नहीं करना था। मनुष्य चला जाए और जितनी तारीफ़ होती हैं उससे आधी भी वह जब ज़िंदा हो तब होती है तो वह जी जाता है! आधा, पौने भाग का चलिए! किन्तु समाज को एक अलग आदत हो गई है!

हमारे साधुओं में नहीं है शोकसभा, नहीं है श्रद्धांजलि सभा। नहीं है कोई उठमना और नहीं बैठना। न कोई उत्तर क्रिया। कुछ भी नहीं। यह तो भगवद्कृपा से, ध्यानस्वामी बापा की सुविधा है इसलिए तीसरे दिन भंडारा कर सकते हैं। अन्यथा तीन-तीन साल बीत जा सकते हैं! अतः आप सब आए, मैं बहुत खुश हूं। बापू, इन साधुओं को तलगाजरडा पर जो प्रेम है उसका मुझे बहुत आनंद है। इतना लोकसाहित्य आया इतने दिनों में, इतना शिष्ट साहित्य आया इतने दिनों में; साहित्य जगत आया; भिन्न-भिन्न विद्याओं के उपासकों, विद्वानों यहा आते ही रहें। और वैसे तो हमने 'अस्मितापर्व' बंद रखा था किन्तु 'अस्मितापर्व' चल ही रहा है अलग-अलग तरीके से। आप सभी आए यह मेरी प्रसन्नता का विशेष कारण है। बापू ने दो धाराओं की बात की। साहब ने तो 'मूळ रे विनानुं काया झाडवुं' कह कर कितनी बड़ी परंपरा का स्मरण कराया! वसंतबापू कवि तो है ही। उनकी कुछ कविताएं हम सुने तो उनका नाम नहीं ले तो हमें लगेगा कि किसी राजस्थानी कवि ने लिखी होंगी। किन्तु मौके पर वे जरा भूल जाते हैं! उनको सब ढूंढना पड़ता है!

इस प्रसंग पर मैं क्या कहूं? हमारे 'रामचरितमानस' में छः प्रकार की समाधियों का उल्लेख है। मैं तो मेरे शास्त्र से आरंभ करूं, जो मेरा कीला है। मेरा धुना माने, मेरा कौना माने, मेरा कीला माने, मेरी नीव माने, मेरा सर्वस्व माने, मेरा सब कुछ 'रामचरितमानस' ही है। एक बार ध्यानस्वामी बापा अवार्ड के समय मैंने समाधि के कुछ प्रकारों की चर्चा की थी, तब अलग किया था। किन्तु 'मानस' अंतर्गत छः प्रकार की समाधि है। और एक समाधि तो दो दिन पहले हुई रामनवमी के दिन। आज उस समाधि का परमोत्सव है। उस निमित्त मानस में इस तरह समाधि का गुंजन हो रहा है, स्वाभाविक है। एक समाधि है बाप!-

संकर सहज सरूपु सम्हारा।
लागि समाधि अखंड अपारा।।

उसका नामकरण यदि तलगाजरडा को करना है एक समाधि है अखंड समाधि; अपार समाधि; दूसरी समाधि-

सिव समाधि बैठे सबु त्यागी।

भगवान शंकर ने सब कुछ त्याग कर समाधि धारण की पार्वती के वियोग में। उसे तलगाजरडा शिव समाधि कहेगा। तीसरी समाधि अचल समाधि। यह मुनि नारद की समाधि है। तुलसी लिखते हैं-

सहज बिमल मन लागी समाधि।

वह मुनि की समाधि है। चौथी समाधि है-

सिथिल सहज सनेह समाधि।

एक स्नेह समाधि है 'रामचरितमानस' में। एक जीव समाधि है।

एक ब्याधि बस नर मरहिं ए असाधि बहु ब्याधि।
पीड़हि संतत जीव कहुँ सो किमि लहै समाधि।।

छः समाधि है बापू, 'रामचरितमानस' में। लेकिन वह छः समाधि से भी बढ़िया समाधि है साधु समाधि। मैं उस वंश में जन्मा हूं। मेरा पूरा कुल यहां बैठा हैं; पूरा मूल यहां बैठा हैं। और मेरे मुंह से साधु की तारीफ़ करूं और यह अच्छा न लगे ऐसा अर्थ कर दे तो कर दे; लेकिन-

बिधि हरि हर कबि कोबिद बानी।
कहत साधु महिमा सकुचानी।।

ब्रह्मा, विष्णु और महेश तीनों साथ में साधु का लक्षणों को बताने बैठे तब भी साधु की वाणी, उसका जीवन का वर्णन नही कर सकते। इसलिए साधु कुल को, हमारे साधुओं की समाधि देखता हूं तब सातवीं समाधि का धूप दिखता है। ऐसी समाधि।

मैं आज केवल टीका की समाधि को ही याद नहीं करता। मेरे सब साधु समाज की जहां-जहां समाधियां है वह सब समाधिओं को आज मैं यहां खड़ा-खड़ा नमन करता हूं। मैं अपनी बात कहूं ये अच्छा न लगे लेकिन मैं जब गांव में से गाडी लेकर निकलता हूं और गांव के पादर में साधु की समाधि देखूं तो गाडी थोड़ी रुकवा देता हूं। यहां कोई अपना बैठा है। उसे भाव से, कुभाव से, अनख से, आलस्य से राम की भक्ति की होगी। समाधि सस्ती नहीं है बाप! चाहे वह स्थूल हो या सूक्ष्म; दोनों को मूल चुकाना पड़ता है। यह तो स्थूल समाधि है वह मैं जानता हूं। एक देह को मिट्टी में रखा जाये। लेकिन स्थूल से ही सूक्ष्म तक जाया जाता है। सीधे सूक्ष्म में जाना यह साधना की प्रक्रिया नहीं है। कोई गुरु की कृपा से उड़ान भर के सीधे सूक्ष्म में जाए वह बात ओर है। लेकिन जो क्रम है इस में तो सूक्ष्म से ही जाया जाता है। और टीका काका की समाधि को तो मैं अधिक कहूंगा कि 'आ छोकराए कोई दिवस मोळो साद न आप्यो!' यह सब साक्षी है बापू! इतनी बीमारी! मैं तो कथा में व्यस्त ऐसे ही रहता हूं। 'चरैवेति चरैवेति।' और मैं फोन करूं, 'कैसे हो?' 'बड़े भाई, बराबर है, बड़े भाई, ठीक है।' इसके अलावा ओर कोई उत्तर नहीं दिया। इसलिए यह समाधि स्थूल है। मैं जानता हूं। लेकिन मैं और आप इस स्थूल समाधि को नमन करते हैं। किन्तु वह समाधि में बैठा है जो सूक्ष्म में प्रवेश कर चुका है। क्योंकि यह प्रक्रिया है। इस तरह जा सकते हैं।

कुछ समय पहले अर्थात् घंटाभर पहेले मैं अंकित को कह रहा था कि भगवान बुद्ध के तीन वाक्य है। जिसे

जागरण करना है उसकी रात लम्बी होती है। माने रात बीतती नहीं ऐसा नहीं, किन्तु जागरण हुआ है। जागृति आ गई। अतः ऐसा लगता है कि यह रात पूरी न हो तो अच्छा। लम्बी हो तो अच्छा। जागृत हुआ है उसकी रात लम्बी होती है। और जो थक गया है उसका मार्ग बहुत लम्बा होता है। जो थक गया है उसे तो एक किलोमीटर भी सौ किलोमीटर जैसा लगता है। क्योंकि थका है। और जिसमें साधुता नहीं है उसे यह संसार लम्बा हो जाता है। वरना 'गोपद सिंधु', मेरा तुलसी कहता है, गाय की खरी में जितना पानी हो उस पानी से जिस तरह बच्चा कूद लेता है उसी तरह कोई भी साधु, राम भजनेवाला उसे कूद लेता है। इसका मतलब? जो किसी जाति में नहीं, किसी वर्ण में नहीं, किसी ज्ञाति में नहीं। ऐसा एक उच्च पद, ज्योति जलाकर बैठा हुआ बावलिया; उसे जात-पात नहीं होते बाप! उसे कोई वर्ण-विकार नहीं होगा। और फिर भी जब साधुपन का परिचय नहीं होता तब आलोचना भी उतनी ही होती है!

अतुल नाम का एक साधु बुद्ध के दर्शन के लिए जाता है। और बुद्ध की परंपरा में एक नया नियम कर दिया गया कि जो कोई नया व्यक्ति जिज्ञासा लेकर आता है उसे पहले तीन व्यक्तियों से पसार कराना होगा ताकि बुद्ध का समय बरबाद न हो। पहले रेवत नाम का भिख्खु, उनके पास जाना पड़े। फिर सारीपूत नाम का भिख्खु के पास जाना पड़े। और अंत में बहुत ही अंतरग शिष्य आनंद से पसार होना पड़ता था। और इन तीनों में लगभग सब कुछ पूरा ही हो जाता था। बुद्ध के पास जाने की जरूरत नहीं रहती थी। या तो वह स्वयं बुद्ध हो जाता था। किन्तु यह इन्स्टन्ट का जमाना है! किसी को भी साधना नहीं करनी है; किसी को भजन नहीं करना है। चमत्कारों में जी रहा है यह जगत, परचों में जीनेवाला यह जगत कब बाहर निकलेगा?

नथी मफतमां मळतां, एनां मूल चूकववा पडतां।
साधुने संतपणां नथी मफतमां मळतां।

कृपापक्ष भिन्न है। कृपा तो लोटरी है। उसमें करम-बरम कुछ काम नहीं करता। उसमें स्टैप बाद स्टैप जाने की जरूरत नहीं है। मुझे कई लोगों ने पूछा है कि बापू! आप कथा करते-करते इस समय जो कुछ भी हैं इसके पीछे का रहस्य बताईए। तब मैंने लोटरी की ही बात की है कि भाई, यदि मैंने पान-बीडी की दुकान की हो और उसमें ऐसा लगे कि अच्छी कमाई हुई, फिर कपड़े की दुकान करूं। चाहे साधु की धोती बेचूं। साधु साड़ी नहीं बेचता। बेचता नहीं, वितरण करता है। फिर उसमें कमाए हुए ऐसा लगेगा कि सुरत जाकर वराछा रोड पर हीरे का कारखाना करना चाहिए क्योंकि इस समय यह बहुत चलता है! अब यह कारखाना करने के बाद जब उसमें वृद्धि हो, फायदा हो तो ऐसा लगेगा कि एक कंपनी खोलनी चाहिए। कुछ करें। बिल्डर का करेंगे, यह करेंगे, वो करेंगे। मैंने उसको कहा, इस तरह क्रमशः हुआ होता तो मैं जरूर कहता क्रमशः। किन्तु लोटरी लगे उसे आप क्या कहेंगे? मेरे लिए तो यह त्रिभुवन लोटरी है साहब!

एक समय में मैं भी लोटरी की टिकट खरीदता था। बहुत जरूरत थी मेरे बाप! रूपये की। कुछ भी करके लेते थे और लाख लग जाये तो काम हो जाए! किन्तु बावा को लोटरी लगे तो गुरुकृपा की लगे। ऐसी ही लगे। जितने ही साधुओं को लोटरी लगी उसे गुरुकृपा की लोटरी लगी है। भर्तृहरि के घर ब्यानवें लाख माळवा का राज्य था किन्तु लोटरी लगी जब नाथ संप्रदाय ने उसके सर पर हाथ रख दिया। गोपीचंद सामान्य व्यक्ति नहीं थे। किन्तु नाथ संप्रदाय का वह गोरखी हाथ उस पर पड़ा। वह मछंदरीय हाथ उस पर पड़ा। साधु को यही लोटरी लगती है। अन्य कौन-सी लोटरी लग सकती है? मुझे कहना यह है कि इस तरह पसार होना पड़ता है। लोटरी लगे वह बात अलग है।

अतुल आता है। रेवत के पास गया। जिज्ञासा पेश की। पंद्रह मिनट बैठा। बुद्ध के एक भिख्खु चुप बैठा। कुछ भी बोला नहीं। जान लिया था कि ये तीन कोठें पार करने पड़ेंगे। फिर वह जाता है सारीपूत के पास। सारीपूत बहुत ही अल्प बोलते थे; बहुत ही सूत्रात्मक बोलते थे; बहुत कम उसे जो बोलना हो वह। फिर वहीं से वह आगे आनंद के पास जाता है। वह बहुत ही अंतरंग थे। लहू का संबंध था; नाद का भी संबंध था; वंश का भी संबंध था। और शिष्य का संबंध था। ऐसे आनंद के पास जाता है तब वह लम्बी वात करता है। और फिर वह बुद्ध के पास पहुंचता है। बुद्ध को कहता हैं, आपने ये कैसे शिष्य रखे हैं? एक कुछ बोलता नहीं। सारीपूत सूत्रात्मक बोलकर बंद हो गया है। कोई स्पष्टता नहीं की। मैं समझ सकूं ऐसा कुछ भी नहीं कहा। और आनंद आपके करीब रहनेवाला। वह कितना बोला? तब कहा, यहां कोई साधु मौन रखता होगा तो उसकी निंदा होगी; यहां सूत्र में बोलता होगा तो उसकी भी निंदा होगी और वाणीविलास करता होगा,

तोड़ डाले ऐसा होगा तो उसकी भी निंदा होगी। मुझे ऐसा समझ में आया कि निंदा अब विकार नहीं रहा, अब व्यवहार हो गया है। पहले निंदा विकार था, रोग था। अतः सब बचते रहते थे। यह संक्रामक रोग मार डालेगा। किन्तु आज मैं और आप जिस जगत में रहते हैं वहां विकार नहीं रहा। विकार हो तो निकाल फेंके हम; हम मार डाले, हम मानव है। हम गन्ने के वंशज है। थल तो थल है, बीच के भाग तो उसके हैं।

हमारा गन्ना ध्यानस्वामी बापा है। मुझे यदि उनकी परिभाषा करनी हो तो ध्यान ही हमारा जीवन है क्योंकि ध्यान के बाद जीवन आया है। ध्यान ही जीवन है। चाहे हम दूसरों की तरह ध्यान में नहीं बैठते हो। प्राण को अंदर खिंचकर बाहर निकाले, निःसंदेह यह एक प्रक्रिया है। और ऐसा लगभग मैं करता ही नहीं। मैं कर ही नहीं सकता। वायु को अंदर लेना और लेने के बाद फिर बाहर न निकले तो? कथा करनी है यार! कितने मूहुर्त दे रखे है! कौन करेगा दूसरा? इसलिए मैं उसमें नहीं हूं। किन्तु ध्यान परंपरा में जीवन जीने की एक रस्म है। जीवन जीने की एक कला सीख ली जाए यह दूसरा चरण है। और जिसे जीवन जीना आ जाए उसे नारायण मिल सकते हैं। हमारी तीसरी समाधि नारायण है। और नारायण मिले तो प्रेम की महिमा समझ में आ जाए कि प्रेम क्या है? और प्रेम मिले तो-

प्रेम ते प्रगट होहि मैं जाना।

रघुवीर नाचने लगेगा साहब! रघुवीर मिल जाएगा और रघुवीर मिल जाए तो फिर त्रिभुवन मिले। इसलिए ऐसी एक परंपरा को बहुत अहोभाव से कहता हूं।

तो यह निंदा है वह विकार नहीं रहा, व्यवहार हो गया है! कई तो कहते हैं, करनी ही चाहिए! कई लोग तो इसके लिए ही समय निकालते हैं! हमारा शास्त्र कहता है, गरुड ने जब प्रश्न पूछा कि बड़े से बड़ा पाप क्या है? तब कागभुशुंडिजी, एक कौआ आप को सीख दे गया। और हंस अब भी निंदा करते हुए थके नहीं! कौआ कह गया साहब! एक कौआ कहता है, कागऋषि कहते हैं-

परमधर्म श्रुति बिदित अहिंसा।

हे गरुड! तूम यह सर्प पकड़ ने का व्यवसाय बंद कर दो। यह इशारा है। गरुड का आहार है सर्प। गरुड सर्प खाता है। एक बुद्धपुरुष कागभुशुंडि ऐसा कहते हैं, पहले तो तूम यह सीख कि 'परम धर्म विदित अहिंसा।' गरुड तो ईश्वर की विभूति है 'गीता' में। हम तो कुछ भी नहीं। और फिर जो उत्तर दिया भुशुंडि ने-

पर निंदा सम अघ न गरीसा।

हे गरुड! दूसरे की निंदा जैसा कोई पाप नहीं। मैं देख रहा हूं कि निंदा एक व्यवहार बन गया है!

हमारे साधुओं की बैठक अलग ही होती है। सब की अपनी बैठक होती है लेकिन व्यक्ति हाज़िर न हो तो पांच व्यक्ति बैठकर बातें नहीं की जानी चाहिए। उसमें उम्र भी कम होती है और अध्यात्म भी कम होता है। इसमें से बाहर निकलना चाहिए। इसलिए मैं साधु की समाधि को सातवीं समाधि कहता हूं।

चाहे मेरे साधु की समाधि अखंड न हो। शिवजी, तेरी समाधि तुझको मुबारक! बैठा रहे अखंड समाधि में और एक तरफ रो रही हो पार्वती! वह अखंड समाधि किस काम की यदि दक्ष कन्या दुबली-पतली हो जाती हो; तुम को उसकी पीड़ा समझ में न आती हो; तुम्हें उसकी पीड़ा का अनुभव नहीं हुआ हो। मिट्टी गिरी ऐसी समाधि में! एक संवेदना तो होनी चाहिए।

एक आदमी लकडी लेकर एक मनुष्य को पिटता था। और एक मनुष्य बेचारा मार खा रहा था! यह दृश्य कैसा? खूब पिटता है आक्रमक बन कर। और एक तरफ बेचारा मार खा रहा है। यदि हम होते तो क्या होता? जो प्रहार करता है उस पर क्रोध उत्पन्न होता है। और जो मार खाता है उस पर दया आती है कि इसे क्यों मारते हो? लेकिन यदि कोई साधु हो तो? दोनों पर करुणा जगेगी। वहां साधुता की कसौटी। आक्रमक पर दया जगेगी। नर्क के द्वार से यह कब बाहर निकलेगा? प्रहारक पर भी करुणा जगेगी। इसकी हीनता कब जाएगी और यह क्यों मार खाता है? ईश्वर की संतान है। 'ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः।' तुम दीन नहीं हो; तुम हीन नहीं हो। करुणा जगेगी। अतः शिव की समाधि अखंड, अपार, महादेव को मुबारक!

मुनि नारद की समाधि। मुनियों की समाधि सब मुनियों को मुबारक! स्नेह समाधि, प्रेम समाधि, 'प्रेम समाधि' बहुत अच्छा शब्द है। हम कल बैठे थे। और किसने कहा कि इस तरह अभी जो बैठे हैं, बातें करते हैं, उसमें कलियुग जैसा कुछ भी लगता नहीं। मानो सतयुग में है। मैंने कहा, सतयुग का भी नाम मत लो, वह भी कुछ अच्छा नहीं था। हां, मात्रा में थोड़ा अच्छा होगा। उसमें जो कुछ घटनाएं रही है। वे कुछ तारीफ़ के लायक नहीं है।

सतयुग अगर अच्छा होता तो हरि वृन्दा को छलने न गए होते। मुझे कोई कहता था, इस समय सतयुग है तो मैं अधिक खुश नहीं होता। मैंने कहा, यह कोई सतयुग नहीं है, नहीं द्वापर, नहीं है कलियुग। यह प्रेमयुग है। यह महोब्बत करने योग्य युग है। यह एक दूसरे को चाहने जैसा युग है। यह एक दूसरे को प्रेम करने योग्य युग है। एक दूसरे के लिए समर्पित होने का यह युग है। खराब किसने कहा? मेरे तुलसी कह गए-

कलिजुग सम जुग आन नहिं जौं नर कर बिस्वास।

गाइ राम गुन गन बिमल भव तर बिनहिं प्रयास।।

हमारे साधुओं का तो कुलदेव ही भरोसा और कुलदेवी अहिंसा। मैं तो ऐसा ही कहता हूं कि तलगाजरडा की कुलदेवी अहिंसा है। और हमारे कुलदेव जहां हमें छेडा-छेडी छोड़नी हो या जो कुछ भी करना हो तो कुलदेवता भरोसा है।

भाई एने भरोसे रहेवाय।

ज्यादा से ज्यादा क्या होगा? आप सोचो, क्या होगा? उम्र बीत जाए, आयु कम हो जाए, मृत्यु आ जाए, बदनामी हो, ऐसा होगा, वैसा होगा! इससे अधिक क्या होगा?

तमे पण दुश्मनो चालो आ मारा स्नेहीओ साथे,
ए कब्रस्तानथी आगळ मने क्यां लई जवाना छे?

चलिए, आप भी मेरे साथ चलिए, क्योंकि इससे आगे तो आप ले जानेवाले नहीं!

समझदारीथी अळगा थई जवाना सौ बहानां छे।
मने शंका पडे छे के दीवाना शुं दीवाना छे?

आज के प्रसंग पर तीन चीज़ याद रखिएगा। क्योंकि मैं उसका अनुभव कर रहा हूं। मैं बहुत समझदार नहीं हूं। मैं पागल हूं। मुझे संभाल लेना, 'मैं तो दीवाना दीवाना दीवाना।' सप्ताह पहले, कथा के पूर्व, मैं चित्रकूट में बैठा था। कोई मुझे कहता कि तारीख दीजिए, कोई कहता यह तारीख दीजिए। यहां आइए। सबको मैं देता ही रहूं।

मैं खुद को बांट ना डालूं कहीं दामन दामन,
कर दिया तुने अगर मुझे मुझ के हवाले।

पर एक चीज़ की खुशी है।

वादा फिर वादा मैं ज़हर भी पी जाऊं,
शर्त ईतनी कि कोई बांहों से उठा ले।

द्वारकाधीश आकर खड़े हो तो शंकर ने भी पीया न हो उतना पीने की तैयारी है। इतना मैं चोक्कस कहता हूं बापू! चौहत्तरवां चल रहा है। अभी अधिक जीना है। हां, अभी कई भंडारा खाना है साहब! मरने के लिए जन्मे हीं नहीं साहब! यह गलत मान्यता है। हम जन्मे हैं ज़िंदा रहने के लिए।

गमे ना सौ कवन तो माफ करजो एक बाबत पर,

खुदा जेवा खुदानां क्यां बधां सर्जन मजानां छे?

तो अखंड समाधि शिव की मुबारक! अचल समाधि चाहे नारद रखे, मुबारक! 'शनैः समाधि' बहुत अच्छा शब्द है। और जीव समाधि। जीवको कहां समाधि लगती है? मुझे लगता है, साधु की समाधि चाहे अखंड न हो, साधु की समाधि चाहे अचल न हो; साधु की समाधि जीव की समाधि नहीं है। मैं यह स्वीकार नहीं करूंगा। जब तक अन्तिम श्वास नहीं निकलता तब तक ही वह जीता है। किसी को 'जयसीयाराम' कहकर चला जाए फिर वह जीव रहता नहीं। उसकी समाधि का भिन्न स्वरूप है। इसका बहुत मूल्य है। क्योंकि तीन मिट्टी इकट्ठी होती है। एक तो मिट्टी खोदकर बाहर निकालना। दूसरे, जैसी भी मिट्टी हो उसे अंदर बिठाओं और वह मिट्टी से ढ़ेर से उसे दबा दीजिए। ईन तीन-तीन मिट्टी के बीच वह बैठा होता है। अब तो कलियुग आया साहब! हमारे जीवन में परिवर्तन हुए होंगे। हम भी जीव हैं! कमज़ोरी के पूतले हैं। यह स्वीकार कर लेना चाहिए। मैंने अनुभव किया है, जीवणदास बापू की समाधि पर धूप होता था, होता था, होता था। मैं उस समय की बात करता हूं बापू, उस समय में साधु के पास गूगळ की भी क्षमता नहीं थी! उसके पास गूगळ के भी पैसे नहीं थे। हां, वैज्ञानिक रूप से यह कबूल करता हूं कि पृथ्वी का स्वभाव गंध है; तो फिर सब जगह पर क्यों नहीं होता? एक पर्टिक्यूलर स्थान पर क्यों होता है? बापू, धूप होता था।

मैं कहता हूं इसलिए आपको मुझ पर भरोसा होगा ही क्योंकि मुझे आप पर भरोसा है। बेवफ़ाई होगी तो भी भरोसा है मेरी सुंदर पृथ्वी पर। मैं केवल ईश्वर पर भरोसा रखूं इतना कमजोर बावा नहीं हूं। मुझे समग्र मानवजाति पर भरोसा है। भरोसे में पसंदगी नहीं रहती। भरोसा सार्वभौम होता है। कुछ शब्द मैं नहीं प्रस्तुत कर सकूंगा। मैं जानता हूं कि मेरी व्यासपीठ पर लोगों को अजीब भरोसा है। इसलिए आपका भरोसा टूट जाए ऐसा कुछ भी नहीं कहूंगा। आपके मोरारिबापू की नाक अभी तक सलामत है। मुझे बारीक से बारीक गंध अभी भी आती है। कूत्ता क्या? उपनिषदों में संन्यासी का एक लक्षण श्वान बताया गया है। और इसलिए रावण मूर्ख नहीं

था। जानकी को अपहृत करके गया तब संन्यासी का नकली रूप लेकर गया था। और कहा था, 'सो दससीस स्वान की नाई।' श्वानवृत्ति संन्यासीओं की वृत्ति है। उसे बास आती है। कौन आया, कौन आया, कौन आया? उसकी गंध आती है। मुझे मेरी नाक पर भरोसा है और आपको मुझ पर भरोसा होगा, ऐसा मैं माननेवाला हूं। आप मुझे नहीं कहेंगे फिर भी मैं माननेवाला हूं। जाएंगे कहां? बावा छोड़ेगा नहीं! इतना याद रखना साहब! कई मुझे कहते हैं, बापू! कई ऐसा बोलते हैं, कई ऐसा बोलते हैं! आपके पास आये तब आप हंसकर क्यों ऐसा करते हैं? यह आपकी व्याख्या। मेरी परिभाषा वह नहीं। वह आपके दर्शन है। मैंने तो नाक से सूंघा है। जीवणदास बापा की समाधि पर गंध आए तब हम दौड़ते थे। पहले तो मेरी माँ के पास जाता हूं, माँ, जीवणदास बापा की समाधि पर धूप हुआ! और तुरंत लज्जा घुंघट धारण करे! ओहोहो, मर्यादा तो देखिए! सावित्री माँ लज्जा घुंघट निकालने के बाद कहती, दादा ज़िंदा हुए है! दादा जाग्रत हुए हैं। उनको चेहरा कैसा दिखा सकते हैं! वह तो घर में हो। समाधि हमारी रामजी मंदिर में होती थी। घर हमारा गली में और लज्जा घुंघट निकाल लेती थी। फिर कहती थी चलिए बच्चें, सब धूप लेने। ऐसे तो कितने स्थानों पर धूप होता हैं! यह तो मेरा अनुभव तलगाजरडा का। अन्यथा ऐसा तो कई जगह हैं जहां धूप होता ही रहता है। हे बापू, भाणसाहब में धूप न होता हो? होता ही है। रविसाहब में धूप न होता हो? होता ही है। कबीर में धूप होता ही है।

साधुओं के पास पंचधूनी होती है। किसी के पास नहीं होती। साधुओं के आसपास एक उसका अग्नि; दूसरा उसे धूनी का अग्नि, तीसरा अग्नि उसे नाराजगी का अग्नि। दूसरे उसे हीन लगनेवाले हीनता का अग्नि! पंचधूनी होती है। कथाकार, आर्टिस्ट, विद्वान उसे पांच ध्यान होने चाहिए। ऐसा मैंने मजादर में कहा था। किन्तु साधु पांच धूनी का पांच ध्वनि; एक टोकरी, एक घंट, तीसरा नगारा, चौथी झालर और पांचवां शंख। साधु का कलेवर भिन्न है। और पांचों तत्त्वों के साथ उसका संबंध है। शंख एक ऐसा ध्वनि जिसे जल के साथ संबंध है। शंख जल से निकलता है। झालर धातु है। उसका पृथ्वी के साथ संबंध है। घंट शब्द जिसका आकाश से संबंध है। और आरती का दीया। जब घंटडी बजती हो उसका अग्नि के साथ संबंध है। पांच के पांच ध्वनि साधु लेकर बैठा होता है। दिवस दौरान गांव ने पाप किए हो, और साधु मंदिर में आरती उतारता है और शंख फूंकता है, उसे पूरे गांव के पाप नष्ट हो जाते हैं! फिर दूसरे दिन निंदा करता है तो वह बात अलग है! किन्तु वहां बावा बैठा ही है। यदि साधु आरती से पाप न धुए तो उसकी आरती में धूल पड़ने बराबर है। मैं अपने मंदिर की आरती का ऐसा अर्थ करता हूं। साधु की संध्या पाप निवारक है।

साधु चलता हो वह भी समाधि है। पतंजलि से आठवें चरण पर समाधि आती है। यह निःसंदेह है। यम, नियम, प्रत्याहर, ध्यान, धारणा और सामाधि। यह पूरा एक कोर्स है। उसमें उत्तीर्ण होना पड़ता है। मुश्किल है। साधु चलता हो तो भी वह समाधि है। साधु बैठा हो तो भी वह समाधि है। साधु बोल रहा हो तो भी वह समाधि है। साधु मौन हो तो भी वह समाधि है। साधु की आंखें खुली हो तो भी वह समाधि है। वह चारों ओर देखते हो तो भी वह समाधि है।

मैं कथा में चारों तरफ देखता हूं तो वह मुझे पसंद है। फिर भी लोग कहते हैं, अब वशीकरण करेंगे और चार घंटे तक सब स्थिर हो जाएगा! अब कोई खड़ा नहीं हो पाएंगे! ऐसा नहीं है; कई लोग सो जाते हैं! ऐसा नहीं, बीच-बीच में जल-पान के लिए उठते रहते हैं। यह तो साधु ने चोपाट रची है। 'हुं रे जीतुं तो एने मारी पासे राखुं।' मेरा कहने का मतलब यह है कि चारों तरफ देखता हूं तो लोग ऐसा समझते हैं कि बापू तंत्र जानते हैं! रहने दीजिए साहब! रामनाम लीजिए। किसी भी साधना में बीज मंत्र होना चाहिए। और रामनाम जैसा कोई बीजमंत्र नहीं है। मैं नहीं कहता, मेरा क्या प्रभाव? मेरा तुलसी कहता हैं-

बीज महामंत्र जपिये सोइ जो जपत महेस।
प्रेम-बारि तरपन भलो, धृत सबज सनेहु।

मैं इस्लामी तकरीर में महुवा में बोलता हूं तब भी चारों तरफ देखता रहता हूं। तब मौलानाओं को भी ऐसा होता है कि बापू क्यों अपनी आंखें चारों ओर घूमाते रहते हैं? ईश्वर ने दी है इसलिए! तुने नहीं दी! इतना तो याद रखना कि तुने नहीं दी! ईश्वर ने मुझे दी है। और मेरे दादा ने सुधारी है। तूम बीच में कौन? मेरी आंखें है तो घूमाऊंगा! कोई फरियाद करता है कि बापू ने मेरी तरफ आंख तिरछी की, तो तू मुझे बता। समाधि ले लूं। जानकीजी को पुष्पवाटिका में देखा रामजी ने। मेरे कथाकारों को विनय करता हूं, एक बार एक पाठ तो पूरा समझाईए लोगों को। छोटे भाई के साथ रहकर बड़ा भाई अविवेक नहीं कर सकता। और यह तो रघुवंश है। यह ऐसा कोई कुल नहीं है। किन्तु जैसे ही जानकीजी सखियों के साथ पुष्पवाटिका में आई, राम-जानकीजी का प्रथम मिलन। लक्ष्मण का हाथ रामजी ने पकड़ा और तुलसी

चौपाई लिखते हैं-

तात जनकननया यह सोई।
धनुषजग्य जेहि कारन होई।।
जासु बिलोकि अलौकिक सोभा।
सहज पुनीत मोर मनु छोभा।।

हमें ध्यान रखना है, आंख शिकारी नहीं होनी चाहिए, पूजारी होनी चाहिए। जहां आंख शिकारी होती है वहां बाधा आती है।

ये हसीन चेहरे मेरे तसबीह के दाने हैं।
निगाहों से देख लेता हूं और ईबादत हो जाती है।

यह उत्सव का दिन है, शोक का दिन थोड़ा है? कल मेरे यहां पंकज महुवा का लड़का आया। मैंने उसे कहा, भाई तू एक-दो फिल्मी गीत गा। रफी के गीत बहुत अच्छी तरह गाता है। 'वक्त करता जो वफ़ा आप हमारे होते।' और उसी समय हनुमानजी की आरती शुरू हुई। मैंने कहा, दुनिया के गोले पर यह एक टुकड़ा ऐसा है जहां संध्या आरती के समय फिल्म का गीत गाये जाते हैं! मुझे एक टुकड़ा तो बताईए! एक टुकडा, एक चौरस फूट कि जहां संध्या आरती के साथ फिल्मी गीत गाये जा रहे हो! किन्तु हमारी दृष्टि कैसी है? हमारा भाव क्या है, उस पर निर्भर है।

तो साधु चले, बोले, चुप रहे, सो जाए तो समाधि। शंकराचार्यजी ऐसा कहते हैं, 'निद्रा समाधि स्थिति।' ऐसे उदार जगद्गुरु नहीं मिलेंगे संसार में कि तूम सो जाओ तो उसे समाधि समझना। साधु बोलते हो तो भी समाधि। व्याधि में हो तो भी समाधि। परेशानी हो तो भी समाधि। जिसे समाधि सहज बनी है उसे हरेक बात में समाधि।

आप सब परम उत्सव प्रसंग पर आएं और ऐसे प्रसंग के लिए टीका निमित्त बना कि 'बड़े भाई, ठीक है; बड़े भाई, बराबर है; बड़े भाई, आप जैसे कहे उसी तरह।' इस अवसर पर इतनी बड़ी संख्या में संत आए, आप सब न जाने कहां-कहां से आए हैं? अब मेरी प्रार्थना है कि सब प्रसाद लीजिए। जिसको रुकना हो वे रुक सकते हैं। जिसको जाना है वे जा सकते हैं। हमें व्यवहारु बनना है। और स्वाभाविक है साहब, कभी व्यासपीठ पर कोई स्मरण हो और प्रसंग अलग चल रहा हो तब 'लो आ गई उनकी याद।' और मेरी आंखें नम हो जाए तो समझना कि-

मैं खुश हूं मेरे आंसूओं पे न जाना,
मैं तो दीवाना दीवाना दीवाना।

(जानकीदासबापू (टीकाबापू) के भंडारे के प्रसंग पर तलगाजरडा (गुजरात) में प्रस्तुत वक्तव्यः ता. १७-४-२०१९)

'भागवत' की कथा के नियम हैं कि सुननेवाले को उपवास करना चाहिए, एक आसन पर बैठना चाहिए। तलगाजरडा के नियम अपने हैं। एक, कथा सुनने आओ तब फ्रेश होकर आना चाहिए, प्रमादी बनकर नहीं आना चाहिए। रात को आप को जल्दी सो जाना चाहिए और बहुत जल्दी उठना नहीं चाहिए, कथा में फ्रेश रहो इसलिए। कथा में रस-रुचि नहीं होगी तो आप फ्रेश होंगे तो भी प्रमाद आयेगा। कथा आधे घण्टे सुनें, पर प्रेम से सुनें। दूसरा, प्रसन्न चित्त से कथा सुनने आयें। तीसरा, कथा सुनें उसमें कीर्तन आये तब गहरी सांस लें। ये योग का प्रकार है। मेरा योगा, ध्यान, कसरत सब मेरी व्यासपीठ पर पूरा हो जाता है। नव दिवस नहीं सुना जा सकता हो तो कुछ नहीं, सभी का अपना उत्तरदायित्व होता है। कथा किसी को बांधती नहीं, कथा तो फर्ज का भान कराती है। चौथा, कथा में बैठे तब रिलेक्स होकर बैठे। पैर फैलाकर- बटोकर बैठे, जमीन पर बैठे, सोफा में बैठे। मैंने सब छूट दी है। पांचवां, उपवास रखिए। उपवास अर्थात् आंखों का उपवास रखिए; केवल व्यासपीठ पर ही नजर रखिए। अपने कान का उपवास रखें कि नव दिवस तक दूसरी कोई बात मुझको सुननी नहीं। जीभ का उपवास रखिए कि मैं किसी की निंदा नहीं करूंगा।

– मोरारिबापू

॥ जय सीयाराम ॥